# वन्दनीया माताजी द्वारा गाए हुए गीत

उन दिनों कैसेट का प्रचलन खूब जोर-शोर से था। गीतों के व परम पूज्य गुरुदेव के प्रवचनों के कैसेट तैयार किये जा रहे थे। कैसेट के इनले कार्ड में परम पूज्य गुरुदेव का चित्र देने का निर्णय हुआ। जब वन्दनीया माताजी को एक नमूना दिखाया गया तो वन्दनीया माताजी ने कैसेट को उलट-पलट कर देखा और बोलीं, **"बेटा! मुझे और गुरुजी को कभी अलग मत समझना।"** फिर बोलीं, **"बेटा, आने वाले समय में दुनिया अपनी समस्याओं का समाधान मेरे गीतों में और पूज्य गुरुजी के प्रवचनों में (विचारों में) ढूँढ़ेगी।"** — वन्दनीया माताजी

1. आदमी आराध्य, सेवा साधना है आज मेरी ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
2. अगर चाहते हो निज रक्षा, गायत्री गुण-गान करो ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
3. आज मेरा मन तुम्हारे गीत गाना चाहता है ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
4. आओ आगत आओ कब से, होती यहाँ पुकार ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
5. आप हिमनग हैं, हमें सुरसरि बना दो ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
6. आप निज करुणा उड़ेलें, पात्र वह हमको बना लो ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
7. अक्षय कोष मिला जब मैंने, अपना सारा कोष लुटाया ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
8. अन्धकारमय पथ पर चमको, ओ मेरे ध्रुवतारा ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
9. अन्तर के निर्मल प्यार हो तुम, भगवान मेरा संसार हो तुम ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
10. अपने भक्तों में हमको बिठा लीजिये ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
11. अपने लिए जियूँ तो मेरा, जीवन नहीं मरण कह देना ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
12. बन्दे तू औरों के काम नहीं आया ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
13. बन्धनों से प्रीति कैसी? ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
14. बसायें एक नया संसार, कि जिसमें छलक रहा हो प्यार ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
15. बाट जोह प्रभु! नयन थके हैं, आ न सके तो पास बुला लो ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
16. भगवान बसो इस मन में तुम, यह मन देवालय हो जाये ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
17. भगवान मेरी नैया, उस पार लगा देना ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
18. भले ही कहीं राह दिखती नहीं है ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
19. भटक रहा है जनम-जनम से हँसा भूखा प्यासा रे ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
20. बिना दर्शन किये तेरे, नहीं दिल को करारी है ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
21. ब्रह्मकमल सा खिलकर जीवन ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
22. चैन आता नहीं प्यार बाँटे बिना, क्या करूँ प्यार की धार रुकती नहीं ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
23. चलो बदल दो राह समय की ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
24. चल रहा अन्तःकरण में ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
25. चर-अचर सभी जड़ चेतन में, हे नाथ तुम्हारा रूप दिखे ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
26. दर्द तुम्हारा प्यार तुम्हारा ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
27. दीपक सा तिल-तिल जलना ही ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
28. दीप हूँ जलता रहूँगा ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
29. देख खुला है द्वार पुजारी ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
30. दे प्रभो! वरदान ऐसा, दे विभो वरदान ऐसा ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
31. दिव्य अनुदान देने खड़े देवता, है ललक किन्तु उपकार कैसे करें ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
32. दुःखी चरण लम्बी मंजिल से, लेकिन तनिक नहीं कतराया ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
33. गँवा दिया हमने जीवन में, धर्म और ईमान ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
34. गायत्री माँ की उपासना, ही जीवन का सार है ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
35. घट-घट में श्रीराम रमे हैं, जब चाहो दर्शन कर लेना ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
36. है उदास कुछ अन्तरतम यह, रत्नों का उपहार किसे दूँ ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें

37. है यह बात सखे, स्थिर हम-तुम सबके मन में ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
38. हम अपना सब कुछ सौंप चुके, हे नाथ तुम्हारे चरणों में ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
39. हमने आँगन नहीं बुहारा, कैसे आयेंगे भगवान् ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
40. हरि ॐ तत्सत् हरि ॐ तत्सत् ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
41. हर विपदा में सुजन शिल्पियो ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
42. हे देव तुम्हारी पीड़ा का, मैं अश्रु बनूँ ढलती जाऊँ ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
43. हे हँसवाहिनी जगदम्बे गायत्री माँ तुझे ध्यान धरूँ ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
44. हे नाथ याद तेरी, मन को सता रही है ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
45. हे प्रभु! मानव हृदय को, गगन सा विस्तार दे दो ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
46. हे प्रभु! ध्यान में तुम समाए हुए ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
47. हो गये बहुत सुराख नाव में, मत जा तू मझधार रे ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
48. हो ईश्वर के अंश, आत्म-विश्वास जगाओ रे ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
49. हृदय से लगा लो या आँचल हटा लो ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
50. इन्सान मेरा देवता ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
51. इस अखिल ब्रह्माण्ड में, बिखरे पड़े हैं प्राण मेरे ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
52. जब-जब सौ-सौ बाँह पसारे, खड़ा तिमिर हो बीच डगर में ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
53. जब स्वयं को विकल तुम अनुभव करोगे ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
54. जब तक है विश्वास लगन, दृढ़-क्षमता की पतवार ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
55. जल रहे दीपक हजारों ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
56. जीवन का अनुदान बिन्दु ने, महासिन्धु से पाया ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
57. जीवन के आधार तुम्हीं हो ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
58. जीवन बन तू फूल समान ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
59. जीवन्त है जगत में, कण-कण तुम्हीं से भगवन् ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
60. झनझना दे चेतना के जड़ विनिर्मित तार को ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
61. झीनी-झीनी बीनी चदरिया ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
62. जो हिमालय सा उठे जीवन, धरा पर नर वही है ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
63. ज्योतियाँ जिससे जलें अनेक, जलाओ ऐसा दीपक एक ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
64. कैसे दें हम तुम्हें विदाई ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
65. कण-कण में मुस्काता है, मेरा प्यारा भगवान ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
66. कण-कण में समाए तुम, तुम्हें हमने पहचाना है ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
67. कौन है किसका यहाँ पर, हैं सभी आते अकेले ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
68. किसी के काम जो आये, उसे इन्सान कहते हैं ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
69. किये मंत्र जप माला फेरी, पूजन आठों याम का ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें

70. कोठरी मन की सदा रख साफ बन्दे, कौन जाने कब स्वयं प्रभु आन बैठे ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
71. क्यों रुके हो? साधना के क्षेत्र में आगे बढ़ो ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
72. महामिलन की आशा मुझको, शरण तुम्हारे लाई है ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
73. मैं ढूँढ़ता तुझे था, जब कुञ्ज और वन में ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
74. मैंने तेरी गीता गाई ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें

75. मैं साथ तुम्हारे रहता हूँ, पहचान सको तो पहचानो ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
76. मन मैला ही रहा अगर तो उजला तन बेकार है ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
77. मत अंगार बिखेरो, वसुधा आज माँगती पानी ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
78. मेरा परिचय क्या पूछ रहे, रचयिता-रक्षक-पोषक हूँ ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
79. मेरी अनन्त आत्मा का यह विश्वास है ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
80. मुझे अपनी शरण में ले लो नाथ ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
81. मुझे चाहिए और कुछ भी न भगवन, तुम्हारी शरण की मुझे कामना है ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
82. ना चाहें वरदान कोई हम, न चाहें अनुदान ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
83. न हो ओ साधक तू लाचार, मिलेगा नव बल का संचार ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
84. न मैं धाम-धरती न धन चाहती हूँ ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
85. न मैं स्वर्ग-मुक्ति न यश चाहती हूँ, मिलूँ तुममें प्रभु यह वर माँगती हूँ ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
86. नयन-नयन में हृदय-हृदय में विकल वेदना छाई ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
87. नये देश को मैं नयी भक्ति दूँगा, कि युग को नयी एक अभिव्यक्ति दूँगा ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
88. निंदिया बाई घर जइयो, जा घर राम भजन नहीं होय ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
89. ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
90. पर-पीड़ा से द्रवित हो उठा, जिसका तन-मन-जीवन सारा ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
91. पावन प्रीति लुटाते चलें, प्रेम की धारा बहाते चलें ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
92. पितु-मातु सहायक स्वामि सखा, तुम ही एक नाथ हमारे हो ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
93. प्रभु तुझमें मैं मिल जाऊँ, यह सुमन चढ़ाऊँ ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
94. प्रवासी रुक नहीं सकते, कभी मन के इशारे पर ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
95. प्रेमी भर तू प्रेम में, ईश्वर के गुण गाया कर ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
96. राही जाना पथ मत भूल ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
97. राम का नाम लेकर न जो पा सके, राम का काम करके वही पाओगे ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
98. राम नाम का अर्थ यही है, काम करें हम राम का ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
99. रात भर भोगा अँधेरा, घुटन अन्धापन झराने ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
100. सदा मन हमारा रहे घर तुम्हारा, यही कामना है यही याचना है ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
101. साँई का पंछी बोले रे, साँई का पंछी बोले ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
102. सामने दिव्य आलोक साकार था, जिन्दगी ही हमारी नमन बन गई ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
103. सम्पूर्ण सृष्टि मेरा विधान, मैं ही अदृश्य मैं दृश्यमान ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
104. सविता महान आपसे वरदान माँगते ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
105. सीख नहीं पाये चादर ओढ़ने का ढंग रे, मैली चादर पर कैसे चढ़ पाये रंग रे ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें

106. सिहर-सिहर मन तुम्हें पुकारे, प्रभु दर्शन बिन बड़ा क्लेश है ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
107. स्नेह से तुम दीप सी मैं, जल रहे दोनों निरन्तर ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
108. सुख चाहे यदि नर जीवन का, जप ले प्रभु नाम प्रमाद न कर ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
109. सूक्ष्म में रम गये हो हमारे प्रभो, देख पायें तुझे वह नयन दीजिए ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
110. तजकर अपना रूप प्रभु जी, मैं पावन आकार हो गया ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
111. तेरा नूर सबमें समाया हुआ है, ये संसार तेरा बनाया हुआ है ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
112. थोड़ी सी साँसें पायी हैं, इनको नहीं गँवाना है ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
113. तुझे मिला कंचन सा जीवन, तूने उसे गँवाया ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
114. तू केवल रखवाला, तेरे साथ नहीं कुछ जाना रे ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
115. तुम्हारा देगा सब जग साथ ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
116. तुम्हारे दिव्य-दर्शन की, मैं इच्छा ले के आयी हूँ ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
117. तुम्हारे हैं हम प्रभु तुम्हारे रहेंगे, तुम्हारे लिए हम सभी कुछ सहेंगे ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
118. तुम्हें ईश्वर मिलेगा, यदि सरल मन हो तुम्हारा ही ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
119. तुम्हीं हो प्राण हम सबके, हमारी चेतना हो तुम ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
120. तुम न घबराओ न आँसू ही बहाओ तुम, और कोई हो न हो पर मैं तुम्हारा हूँ ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
121. तूने हमें जनम दिया, पालन कर रही हो तुम ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
122. वन्दें उनके पद की धूल ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
123. विचार लो कि मर्त्य हो, न मृत्यु से डरो कभी ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
124. यह जीवन पुष्प समर्पित है, शुभ चरणों के अर्चन में ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
125. यह करुणा की धार, सूखने मत देना ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
126. युग ऋषिवर हे, जीवन का आधार तुम्हारा नाम है ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
127. युग-युग पूजित गायत्री माँ, ऐसी कृपा करो ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें
128. युग-युग तक जग याद करे, तुम ऐसे कर्म करो ऑनलाइन ऑडियो सुनें ऑनलाइन वीडियो देखें

**आदमी आराध्य, सेवा साधना है आज मेरी**

आदमी आराध्य, सेवा साधना है आज मेरी।
साधना का प्राण जन-जन की अथक पीड़ा घनेरी॥

नयन का निर्माल्य ही, बन गंग-नीर पवित्र करता।
दूसरे की पीर भरती, श्वाँस में अर्जित प्रखरता॥
आचमन आत्मीयता का, प्यार का चन्दन सुहाता।
हर दुःखी जन के लिए ही, स्नेह अन्तर का लुटाता॥
आज माला पर दुःखों की, भावना के साथ फेरी॥
आदमी आराध्य . . . . .

मखमली आशीष में गुरु से मिला लिपटा खजाना।
मनुज- जीवन की सफलता, यज्ञमय जीवन बिताना॥
बस तभी से जल रहा, जीवन हिमानी शीत हरने।
कर्म की आहुति लगी है, दूसरों के घर बसाने॥
प्रज्वलित है प्राण-तन तो, अन्त में है भस्म ढेरी॥
आदमी आराध्य . . . . .

ध्यान में साकार हो, उठती सभी की वेदनाएँ।
और उनको ही मिटाने, उमंग पड़ती प्रार्थनाएँ॥
माँ! मिटा दो विश्व से कुण्ठा, निराशा और पीड़ा।
विश्व-मानव हो सुखी, जीवन बने शुभ रास-क्रीड़ा॥
शक्ति दो माता! लगाओ, मत दया में आज देरी॥
आदमी आराध्य . . . . .

**अगर चाहते हो निज रक्षा, गायत्री गुण-गान करो**

अगर चाहते हो निज रक्षा, गायत्री गुण-गान करो।
नित्य शुद्ध एकान्त भूमि में, जग-जननी का ध्यान धरो॥

दुःख काटकर निज भक्तों के, माता रक्षा करती है।
सुख-सौभाग्य बढ़ा देती है, शान्ति सुधा-रस भरती है॥
नदी समुद्र सरोवर के तट, शान्त भाव से खड़े-खड़े।
गायत्री का जप करते थे, जब द्विज पुंगव बड़े-बड़े॥
अगर चाहते हो निज रक्षा, गायत्री गुण-गान करो।
नित्य शुद्ध एकान्त भूमि में, जग-जननी का ध्यान धरो॥

सूर्य ब्रह्म की ग्रन्थि से, हो जाती है निर्मल बुद्धि।
पाप-ताप सब कट जाते हैं, आ जाती है सच्ची शुद्धि॥
बढ़ता था श्री मार्तण्ड का, उनमें तेजस् दिव्य प्रचण्ड।
स्वर्ग भूमि से अधिक सुखी था, मित्र तभी भारत खण्ड॥
बाल्यकाल में ही जिनको ये मंत्र सुनाया जाता है।
आलस दम्भ प्रमाद न उनकी, सन्तानों में आता है॥
अगर चाहते हो निज रक्षा, गायत्री गुण-गान करो।
नित्य शुद्ध एकान्त भूमि में, जग-जननी का ध्यान धरो॥

द्विजों उठो! तप में प्रवृत्त हो, गायत्री को जाप करो।
पार करो भारत की नैया,, दूर सकल अभिशाप करो॥
शक्ति पुंज और सच्चा पथ ये शास्त्र सदा से गाता है।
आर्य जाति की रक्षा करती, श्री गायत्री माता है॥
अगर चाहते हो निज रक्षा, गायत्री गुण-गान करो।
नित्य शुद्ध एकान्त भूमि में, जग-जननी का ध्यान धरो॥

गायत्री को नहीं जानता, संध्या कभी न करता है।
ऐसा कर्म-हीन अपने को, फिर क्यों ब्राह्मण कहता है॥
पूज्य हो रही जब भारत के, घर-घर श्री गायत्री की।
विश्वामित्र-वशिष्ठ अत्रि थे, सती सिया सावित्री थी॥

अगर चाहते हो निज रक्षा, गायत्री गुण-गान करो।
नित्य शुद्ध एकान्त भूमि में, जग-जननी का ध्यान धरो॥

यद्यपि वैदिक यज्ञ बड़े हों, जिनमें बड़े-बड़े हों दान।
तो भी मनु कथनानुसार है, गायत्री जप-यज्ञ प्रधान॥
श्रद्धा-भक्ति सहित विश्वासी, निश्चित जप जो करते हैं।
पाप-ताप को छिन्न-भिन्न कर, भवसागर से तरते हैं॥

अगर चाहते हो निज रक्षा, गायत्री गुण-गान करो।
नित्य शुद्ध एकान्त भूमि में, जग-जननी का ध्यान धरो॥

**आज मेरा मन तुम्हारे गीत गाना चाहता है**

आज मेरा मन तुम्हारे गीत गाना चाहता है।
शुष्क जीवन में पुनः नव-रस बहाना चाहता है॥

चाहती हूँ मैं तुम्हारी, दृष्टि का केवल इशारा।
डूबते को बहुत होता, एक तिनके का सहारा॥
अब हृदय में प्यार का, तूफान आना चाहता है॥
शुष्क जीवन में पुनः नव-रस बहाना चाहता है॥
आज मेरा मन . . . . .

एक योगी चाहता है, बाँधना गतिविधि समय की।
एक संयोगी भुलाना, चाहता चिन्ता अनय की॥
पर वियोगी आग पानी में लगाना चाहता है॥
शुष्क जीवन में पुनः नव-रस बहाना चाहता है॥
आज मेरा मन . . . . . .

व्यंग करता है मनुज की श्रेष्ठता पर क्षुद्र जीवन।
हँस रहा जग की जवानी की उमंगों पर लड़कपन॥
किन्तु कोई साथ सबके, मुस्कुराना चाहता है॥
शुष्क जीवन में पुनः नव-रस बहाना चाहता है॥
आज मेरा मन . . . . . .

नर्क लज्जित हो रहा है, स्वर्ग की लखकर विषमता।
आज सुख भी रो रहा है, देखकर दुःख की विवशता॥
इन्द्र का आसन तभी तो, डगमगाना चाहता है॥
शुष्क जीवन में पुनः नव-रस बहाना चाहता है॥
आज मेरा मन . . . . . .

**आओ आगत आओ कब से, होती यहाँ पुकार**

आओ आगत आओ कब से, होती यहाँ पुकार।
खुला है मंगल मन्दिर द्वार॥

माँ का अनुपम स्नेह पिता का, पावन आशीर्वाद।
हर लेता है मन से सारा, ही अज्ञान प्रमाद॥
यहाँ स्वार्थ ही जाने कैसे, बनता पर उपकार।
खुला है मंगल मन्दिर द्वार॥

यहाँ मनुजता की प्रतिमा है, और सत्य आलोक।
करुणा की शीतलता देता, करके छाँह अशोक॥
बहुजन हित जन-जन का हित ही, यहाँ सहज व्यवहार।
खुला है मंगल मन्दिर द्वार॥

सेवा, निष्ठा, त्याग, क्षमा के, यहाँ मिलेंगे भाव।
कल्प वृक्ष सम्मुख फिर कैसे, बाकी रहे अभाव॥
भेद भाव है नहीं सभी का, है स्वागत सत्कार।
खुला है मंगल मन्दिर द्वार॥

यहाँ प्यार बसता कण-कण में, क्षण-क्षण गति निष्काम।
हर मन में भगवती विराजे, अन्तर में श्रीराम॥
नहीं मोह का काम यहीं पर, सारा जग परिवार।
खुला है मंगल मन्दिर द्वार॥

**आप हिमनग हैं, हमें सुरसरि बना दो**

आप हिमनग हैं, हमें सुरसरि बना दो।
आपके उर की द्रवित, करुणा बहा दो॥

दुष्ट चिन्तन से मनुजता, जल रही है।
रिक्तता सम्वेदना की, खल रही है॥
आस्था के सगर सुत, अभिशप्त से हैं।
आस्था, विश्वास का अमृत पिला दो॥
आप हिमनग हैं . . . . .

जो पराभव में पतन में, जी रहे हैं।
और जो दुर्भावना विष, पी रहे हैं॥
पतित-पावन श्रेष्ठ चिन्तन, आप का है।
लोक-मंगल की हमें, अंजुलि बना दो॥
आप हिमनग हैं . . . . .

ज्ञान-गंगा सा उछलने, बढ़ सकें हम।
लोक मंगल साध्य शिव पर, चढ़ सकें हम॥
आज जन मानस घिरा, अज्ञान तम में।
ज्ञान से अभिषेक युग-शिव का करा दो॥
आप हिमनग हैं . . . . .

हर सकें युग-पीर, वह क्षमता हमें दो।
पी सकें युग-वेदना, ममता हमें दो॥
धार फूटें हृदय से, सम्वेदना की।
भावना भागीरथी को, छल-छला दो॥
आप हिमनग हैं . . . . .

**आप निज करुणा उड़ेलें, पात्र वह हमको बना लो**

आप निज करुणा उड़ेलें, पात्र वह हमको बना लो।
ज्योति करुणा-कण सहेजें, नाथ वह हमको बना लो॥

कमी करुणा की नहीं है, वह द्रवित हो बह रही है।
धार करुणा की सहेजें, पात्र तो सच्चा वही है॥
नाथ करुणाकर करुण की, जाति में हमको मिला लो।
ज्योति करुणा-कण सहेजें, नाथ वह हमको बना लो॥

रो उठें पर पीर से हम, द्रवित खारे नीर से हम।
हर सकें कुछ पीर जग की, नाथ मनुज शरीर से हम॥
प्रभु द्रवित जन-सेवकों की, पाँत में हमको मिला लो।
ज्योति करुणा-कण सहेजें, नाथ वह हमको बना लो॥

पात्रता पायें विनय की, दीन-दुखियों पर सदय की।
पर अनय से जूझने को, पात्रता पायें अभय की॥
बात जो बिगड़ी बनाये, पात्र वह हमको बना लो।
ज्योति करुणा-कण सहेजें, नाथ वह हमको बना लो॥

खो न जायें स्वार्थ में हम, समर्पित सर्वार्थ में हम।
प्राण-प्रण से जुट सकें प्रभु, अहर्निश परमार्थ में हम॥
आप जीवन के रथी हों, मात्र रथ हमको बना लो।
ज्योति करुणा-कण सहेजें, नाथ वह हमको बना लो॥

मोह का फिर महाभारत, लड़ सकें प्रभु प्राण का रथ।
भय उसे क्या, जिन्दगी का, आपको जो सौंप दे रथ॥
आत्म अर्जुन क्लीव हो क्यों, आप जब गीता सुना दो।
ज्योति करुणा-कण सहेजें, नाथ वह हमको बना लो॥

आप निज करुणा उड़ेलें, पात्र वह हमको बना लो।
ज्योति करुणा-कण सहेजें, नाथ वह हमको बना लो॥

**अक्षय कोष मिला जब मैंने, अपना सारा कोष लुटाया**

अक्षय कोष मिला जब मैंने, अपना सारा कोष लुटाया।
मैंने सब देकर सब पाया॥

जाने कब से मैं पागल बन, मिट्टी को समझी थी कंचन।
किन्तु तुम्हारी कृपा-किरण ने, दिया मुझे अनमोल ज्योति कण॥
जिसके दिव्य प्रकाश पुंज में, मैंने नूतन पंथ बनाया॥
मैंने सब देकर सब पाया॥

लक्ष्य प्राप्त करने का यदि प्रण, करो विभव का दूर प्रलोभन।
कहीं न रोकें पद की गति को, सोने-चाँदी के आकर्षण॥
छाया बनकर सबको रोके, मन की मृगतृष्णा की माया॥
मैंने सब देकर सब पाया॥

देव तुम्हारा पूजन अर्चन, करता है मन प्रतिपल, प्रतिक्षण।
अहं ब्रह्म बन धन्य बनूँ मैं, सिद्धि बने यह आत्म-समर्पण॥
ज्ञात न मैं प्रभु बनी कि मेरा, प्रभु ही मुझमें आज समाया॥
मैंने सब देकर सब पाया॥

**अन्धकारमय पथ पर चमको, ओ मेरे ध्रुवतारा**

अन्धकारमय पथ पर चमको, ओ मेरे ध्रुवतारा।
ओ मेरे ध्रुवतारा॥

नीरवता का शून्य हृदय का, मौन व्यथा जीवन की।
हाथों में संकेत, चरण में कंपन, धार नयन की॥
किन्तु श्वाँस को एक हास की रेखा बनी सहारा॥
ओ मेरे ध्रुवतारा॥

तुम्हीं लक्ष्य हो, तुम्हीं प्रेरणा, तुम्हीं अन्त तुम दीक्षा।
तुम विश्वास मधुर भावों के, और मिलन की इच्छा॥
तुम वह स्त्रोत कि जिससे बहती, करुणा की कल-कल धारा॥
ओ मेरे ध्रुवतारा॥

केवल मेरे लिये नहीं तुम, संस्कृति पथ पर बिखरो।
शाश्वत पुण्य प्रकाश प्रभा ले, प्रति कण-कण में निखरो॥
हो मानव की शक्ति चिरन्तन, प्रिय पाथेय तुम्हारा॥
ओ मेरे ध्रुवतारा॥

**अन्तर के निर्मल प्यार हो तुम, भगवान मेरा संसार हो तुम**

अन्तर के निर्मल प्यार हो तुम, भगवान मेरा संसार हो तुम।
भगवान मेरा संसार हो तुम। भगवान मेरा संसार हो तुम।

भाषा न प्रकट कर सकी जिसे, अभिव्यक्त भाव भी कर न सके।
बन अश्रुधार जो बिखर गये, चिर मौन वही उद्गार हो तुम॥
भगवान मेरा संसार हो तुम। भगवान मेरा संसार हो तुम।
अन्तर के निर्मल प्यार हो तुम, भगवान मेरा संसार हो तुम।

जीवन गिरि, शिखरों-सा दुस्तर, चहुँ दिशि बस प्रस्तर ही प्रस्तर।
पर चीर उन्हें जो बह निकली, ऐसी गंगा की धार हो तुम॥
भगवान मेरा संसार हो तुम। भगवान मेरा संसार हो तुम।
अन्तर के निर्मल प्यार हो तुम, भगवान मेरा संसार हो तुम।

पायल की झनक बुला न सकी, हीरों की खनक लुभा न सकी।
जिस स्वर को सुन उर कमल खिला, वह मधु भीनी गुँजार हो तुम॥
भगवान मेरा संसार हो तुम। भगवान मेरा संसार हो तुम।
अन्तर के निर्मल प्यार हो तुम, भगवान मेरा संसार हो तुम।

मेरे सपनों का प्राण है जो, जीवन का शुचि वरदान है जो।
भटकाया जिसने जनम-जनम, आत्मा का वही दुलार हो तुम॥
भगवान मेरा संसार हो तुम। भगवान मेरा संसार हो तुम।
अन्तर के निर्मल प्यार हो तुम, भगवान मेरा संसार हो तुम।

जिसको पी जागा भक्ति भाव, रह गया मुक्ति का नहीं चाव।
जिससे चेतना नियन्त्रित है, बस वही सबल आधार हो तुम॥
भगवान मेरा संसार हो तुम। भगवान मेरा संसार हो तुम।
अन्तर के निर्मल प्यार हो तुम, भगवान मेरा संसार हो तुम।

त्रुटियों पर ध्यान नहीं देना, यदि गिरूँ तुरन्त उठा लेना।
मैं निर्बल हूँ तुम बलशाली, सबके करुणा आगार हो तुम॥
भगवान मेरा संसार हो तुम। भगवान मेरा संसार हो तुम।
अन्तर के निर्मल प्यार हो तुम, भगवान मेरा संसार हो तुम।

हम सरिता से, तुम अतुल सिन्धु, हम चिर प्यासे तुम अमृत बिन्दु।
अपने में ही लय कर लेना, प्रभुवर अत्यन्त उदार हो तुम॥
भगवान मेरा संसार हो तुम। भगवान मेरा संसार हो तुम।

अन्तर के निर्मल प्यार हो तुम, भगवान मेरा संसार हो तुम।
भगवान मेरा संसार हो तुम। भगवान मेरा संसार हो तुम।
अन्तर के निर्मल प्यार हो तुम, भगवान मेरा संसार हो तुम।
भगवान मेरा संसार हो तुम। भगवान मेरा संसार हो तुम।

## अपने भक्तों में हमको बिठा लीजिये

अपने भक्तों में हमको बिठा लीजिये।
ठोकरें खा रहे हैं बचा लीजिये॥

नैया जीवन की है नाथ मझधार में,
करके करुणा किनारे लगा दीजिये।
अपने भक्तों में हमको बिठा लीजिये॥

छा रहा है अँधेरा ये अज्ञान का,
ज्ञान की ज्योति मन में जगा दीजिये।
अपने भक्तों में हमको बिठा लीजिये॥

ध्यान होगा किसी को किसी का प्रभु,
अपना तू ही है हमसे लिखा लीजिये।
अपने भक्तों में हमको बिठा लीजिये॥

देव वाणी तेरी ज्ञान-अमृत भरी,
भर के प्याला हमें एक पिला दीजिये।
अपने भक्तों में हमको बिठा लीजिये॥

मूर्ख मन की दिशा पाप की ओर है,
इसको चरणों में अपने घुमा लीजिये।
अपने भक्तों में हमको बिठा लीजिये॥

हमको है ओ पिता! तेरा ही आसरा,
गोद अपनी में स्वामी बिठा लीजिये।
अपने भक्तों में हमको बिठा लीजिये॥

**अपने लिए जियूँ तो मेरा, जीवन नहीं मरण कह देना**

अपने लिए जियूँ तो मेरा, जीवन नहीं मरण कह देना।
जीवन नहीं मरण कह देना॥

मेरी प्यास यहाँ तक जागे, अमृत-सिन्धु खोज लाऊँ मैं।
जग के प्यासे अधर देखकर, अपनी प्यास भूल जाऊँ मैं॥
प्यास बुझाते हुए जगत की, मेरी प्यास अगर डिग जाये।
संयम की संज्ञा मत देना, हर आचरण पतन कह देना॥
अपने लिए जियूँ तो मेरा . . . . . .

इस तट का ही दृश्य डुबा दे, उस तट की बाँहें बढ़ जाएँ।
प्रीति सुधा की धार लाँघकर, हम पागल उस पार न जाएँ॥
चलने वाले मंजिल भूलें, चलते हुए समाधि न टूटे।
चलते हुए थकें यदि मेरे, भटके हुए चरण कह देना॥
अपने लिए जियूँ तो मेरा . . . . . .

वह साधना नहीं थी पगले, साधना पूरी हुई युगों तक।
जीवन भर समाधि में बैठा, सिद्धि न झाँकी कभी दृगों तक॥
प्राणायाम छोड़कर अब तो, बढ़ती घुटन रोकती साँसें।
इस तह में हो जाएँ न दर्शन, छलनामयी लगन कह देना॥
अपने लिए जियूँ तो मेरा . . . . . .

## बन्दे तू औरों के काम नहीं आया

बन्दे तू औरों के काम नहीं आया।
माटी के मोल गई कंचन सी काया॥

केवल सुख-साधन में जिन्दगी बिताई।
मन की पर शान्ति कहीं एक पल न पाई॥
मुट्ठी पर पुण्य न इस देह से कमाया।
कर्मों पर रही सदा स्वारथ की छाया॥
तूने बस पापों का ढेर ही लगाया।
परहित का पंथ नहीं मन से अपनाया॥

बन्दे तू औरों के काम नहीं आया।
माटी के मोल गई कंचन सी काया॥

अपने हित-चिन्तन में सोया और जागा।
उसके ही लिए यहाँ दर-दर तू भागा॥
स्वार्थ भरे सपनों में बीत गई रातें।
करते तुम रहे सदा ब्रह्म भरी बातें॥
बेचैनी, दौड़-भाग, भ्रम ने भटकाया।
तूने अनमोल जनम व्यर्थ ही गँवाया॥

बन्दे तू औरों के काम नहीं आया।
माटी के मोल गई कंचन सी काया॥

कर्मों का जनम-जनम साथ सदा होगा।
अपने ही कर्मों का सबने फल भोगा॥
इसीलिये कोई भी पल न अब गँवाओ।
जो बचा समय है, सत्कर्म में लगाओ॥
कण-कण ने दैवी सन्देश यह सुनाया।
जीवन जीने का यही मर्म है बताया॥

बन्दे तू औरों के काम नहीं आया।
माटी के मोल गई कंचन सी काया॥

**बन्धनों से प्रीति कैसी?**

बन्धनों से प्रीति कैसी? बन्धनों से प्रीति कैसी?
बन्धनों से प्रीति कैसी? बन्धनों से प्रीति कैसी?

हम शलभ जलने चले हैं, अस्तित्व निज खोने चले हैं।
दीप पर जलना हमें है, दाह से फिर भीति कैसी?
बन्धनों से प्रीति कैसी? बन्धनों से प्रीति कैसी?

सिन्धु से मिलने चले हैं, सर्वस्व निज देने चले हैं।
अटल से मिलना हमें है, शून्य तट पर दृष्टि कैसी?
बन्धनों से प्रीति कैसी? बन्धनों से प्रीति कैसी?

दीप बन जलना हमें है, विश्वतम हरना हमें है।
ध्येय तिल- तिल जलन का है, कालिमा से भीति कैसी?
बन्धनों से प्रीति कैसी? बन्धनों से प्रीति कैसी?

आधार ही बनना हमें है, नींव में रहना हमें है।
ध्येय जब यह बन चुका है, कीर्ति में आसक्ति कैसी?
बन्धनों से प्रीति कैसी? बन्धनों से प्रीति कैसी?

**बसायें एक नया संसार, कि जिसमें छलक रहा हो प्यार**

बसायें एक नया संसार, कि जिसमें छलक रहा हो प्यार।
कि जिसमें छलक रहा हो प्यार॥

शोषक-शोषित हों न जहाँ पर, सबकी सम्पत्ति एक।
हो तन-मन में सुमन एक सा, जिसमें प्रेम विवेक॥
हो सबमें सहयोग परस्पर, एक बने घर द्वार॥
कि जिसमें छलक रहा हो प्यार॥

जाति-पाँति के बन्धन टूटें, राष्ट्र-राष्ट्र सब एक।
धर्मों में हो सत्य समन्वय, रहे न झूठी टेक॥
मिटें अन्धविश्वास जगत के, हों विज्ञान विचार॥
कि जिसमें छलक रहा हो प्यार॥

मानव की मानव भाषा हो, सबकी एक समान।
मिलें हृदय से हृदय परस्पर, हो सच्ची पहचान॥
करें वचन से, तन-मन-धन से, सब सबका उपकार॥
कि जिसमें छलक रहा हो प्यार॥

करें अहिंसा का पालन सब, बने सत्य का राज।
सत्य, अहिंसा, भक्त सभी हों, जग हो सत्य समाज॥
घर-घर स्वर्ग नचे आँगन में, मोक्ष करे अवतार॥
कि जिसमें छलक रहा हो प्यार॥

बसायें एक नया संसार, कि जिसमें छलक रहा हो प्यार।
कि जिसमें छलक रहा हो प्यार॥

**बाट जोह प्रभु! नयन थके हैं, आ न सके तो पास बुला लो**

बाट जोह प्रभु! नयन थके हैं, आ न सके तो पास बुला लो।
बाट जोह प्रभु! नयन थके हैं, आ न सके तो पास बुला लो॥

हृदय पीर का नीड़ बना है, किन्तु कटे हैं पंख नीर के।
उड़कर तुम आ न सकी वह, देखा लेकिन नयन चीर के॥
पर न दिखे तुम थककर बेसुध, हुई गिरी आ मिली धूल में।
जग ने कहा अश्रु झरते हैं, उठा सको तो इन्हें उठा लो॥
बाट जोह प्रभु! नयन थके हैं, आ न सके तो पास बुला लो॥

अधिक नहीं कुछ चाहा मैंने, एक मिलन का पल माँगा था।
लिपट चरण से प्राण रो सकें, ऐसा कुछ मन में जागा था॥
लेकिन नहीं सुहाया शायद, तुमको मेरा एक तृषित क्षण।
जो पा लेता तृप्त देखकर, अब तुम ही उर व्यथित सँभालो॥
बाट जोह प्रभु! नयन थके हैं, आ न सके तो पास बुला लो॥

बहुत पुकारा भगवन्! तुमको, प्राण कण्ठ में आ आ रोये।
बहुत सँवारा भगवन्! तुमको, बेकल भाव श्रमित हो सोये॥
आ न सके दो क्षण को भी क्यों, कुछ तो बोलो हे निर्मोही।
मेरी देह सौंपकर जग को, प्राणों को निज अंग लगा लो॥
बाट जोह प्रभु! नयन थके हैं, आ न सके तो पास बुला लो॥

**भगवान बसो इस मन में तुम, यह मन देवालय हो जाये**

भगवान बसो इस मन में तुम, यह मन देवालय हो जाये।
यह मानव जीवन पाने का, पूरा फिर आशय हो जाये॥

जो कुछ जीवन में पायें हम, देने का भाव जगायें हम।
ले ले कर संचय करने की, दुष्वृत्ति नहीं अपनायें हम॥
दैवी गुण से भर कर जीवन, ईश्वर का परिचय हो जाये॥
यह मानव जीवन पाने का, पूरा फिर आशय हो जाये॥

मन में न कहीं दुर्भाव भरे, सबके प्रति ही सद्भाव भरे।
हो दृष्टि हमारी विस्तृत फिर, पथ हों न कहीं भटकाव भरे॥
हर कोना आलोकित होवे, ऐसा अरुणोदय हो जाये॥
यह मानव जीवन पाने का, पूरा फिर आशय हो जाये॥

ईश्वर के सुन्दर उपवन में, कर्तव्य करें हम हर क्षण में।
उलझें न कहीं हम संशय के, अँधियारे से कंटक वन में॥
आस्था विश्वास जगे ऐसा, हर पग फिर निर्भय हो जाये॥
यह मानव जीवन पाने का, पूरा फिर आशय हो जाये॥

सीधा-सादा सा जीवन हो, अम्बर सा मन का आँगन हो।
छल सकें न हमको व्यसन कभी, जन-जन के प्रति अपनापन हो॥
सन्तोष सादगी का जीवन, सुख-साधन अक्षय हो जाये॥
यह मानव जीवन पाने का, पूरा फिर आशय हो जाये॥

**भगवान मेरी नैया, उस पार लगा देना**

भगवान मेरी नैया, उस पार लगा देना।
अब तक तो निभाया है, आगे भी निभा देना॥

दल-बल के साथ माया, घेरे जो मुझको आकर।
तो देखते न रहना, झट आ के बचा लेना॥
अब तक तो निभाया है, आगे भी निभा देना॥

सम्भव है झंझटों में, मैं तुमको भूल जाऊँ।
पर नाथ, कहीं तुम भी, मुझको न भुला देना॥
अब तक तो निभाया है, आगे भी निभा देना॥

तुम देव, मैं पुजारी, तुम ईष्ट मैं उपासक।
यह बात सच है यदि तो, सच करके दिखा देना॥
अब तक तो निभाया है, आगे भी निभा देना॥

## भले ही कहीं राह दिखती नहीं है

भले ही कहीं राह दिखती नहीं है।
रुके पग, थकी बाँह उठती नहीं है॥
अगर पास मेरे जो, आ जाओगे।
तो जीवन नया एक, पा जाओगे॥
भले ही कहीं राह.....

अभी तक स्वयं को, नहीं जान पाये।
हम भी भले ही न, पहचान पाये॥
मगर हम तो हरदम, बुलाते रहे हैं।
दुलारी है तुमको, जगाते रहे हैं॥
अगर एक भी शब्द, सुन पाओगे।
सही लक्ष्य की राह, पा जाओगे॥
भले ही कहीं राह.....

खनक स्वर्ण की सुन, अघाते नहीं हो।
हृदय पक्ष को देख, पाते नहीं हो॥
दुःखी प्यार की प्यास, से हो रहे तुम।
तुम्हें प्यार से थपकियाँ, दे रहे हम॥
यही भाव हमसे, मिला पाओगे।
तो अमृत सुधा सिक्त, हो जाओगे॥
भले ही कहीं राह.....

तुम्हें विष भरे घट, सुहाते रहे हैं।
अमृत घट लिए हम, बुलाते रहे हैं॥
बढ़ो खुद पिओ बाँट, दो और सबको।
समय चूकने पर न, पाओगे हमको॥
समय पर जो साहस, जुटा पाओगे।
तो अनुदान अनमोल, पा जाओगे॥
भले ही कहीं राह.....

## भटक रहा है जनम-जनम से हँसा भूखा प्यासा रे

भटक रहा है जनम-जनम से हँसा भूखा प्यासा रे।
तुम लाये जल घाट-घाट से, फिर भी रहा उदासा रे॥
हँसा भूखा प्यासा रे॥

मोती का अभिलाषी हँसा, कैसे पत्थर खाये?
मान सरोवर का वासी यह, कीचड़ में अकुलाए॥
तुमने इसे कषाय-कल्मषों, में हर समय डुबाया।
दल-दल में बोलो, फिर कैसे, कर ले हँसा वासा रे?
हँसा भूखा प्यासा॥

नीर-क्षीर का ज्ञान इसे है, पर कैसे समझाए?
सद्गुण की पहचान इसे है, पर कैसे बतलाये?
काम-क्रोध-मद की कारा ने, बन्दी इसे बनाया।
पराधीन वाणी से कैसे, सबका करे खुलासा रे?
हँसा भूखा प्यासा॥

मिथ्या मीठी बात बनाना, कभी न इसको भाया।
कपट भरा व्यवहार न इसने, पल भर भी अपनाया॥
निर्मलता में पला, इसी से निर्मल दृष्टि बनाई।
समझा करता है यह केवल, निर्मल मन की भाषा रे॥
हँसा भूखा प्यासा॥

तन का हर आवरण रात-दिन, तुमने बहुत सजाया।
पर उसके भीतर का वासी, भूखा सदा सुलाया॥
स्वाभिमान का धनी हँस यह, कैसे भी रह लेगा।
फैलाएगा मगर न भूखा, रहकर कभी हताशा रे॥
हँसा भूखा प्यासा॥

तन के सुख के लिए न सारा, जीवन यहाँ गँवाओ।
अन्तर्मन की तुष्टि-पुष्टि को, भी कुछ पुण्य कमाओ॥
यह वह है अंगार राख की, परतें अगर हटा दी।
बन जायेगा यहीं धरा पर, स्वर्णिम सूर्य प्रभासा॥
हँसा भूखा प्यासा॥

**बिना दर्शन किये तेरे, नहीं दिल को करारी है**

बिना दर्शन किये तेरे, नहीं दिल को करारी है।
बिना दर्शन किये तेरे, नहीं दिल को करारी है॥

कमल ज्यों नीर बिन सूखे, पपीहा ध्वनि पुकारी है।
बिना जल मीन नहीं जीवे, वही गति अब हमारी है॥

नहीं है और की इच्छा, तेरा ही नाम कारी है।
फिरा दृग दे इधर को तू, यही विनती हमारी है॥

भला कैसे हो हा सारी, मिटी श्रुतबोधनी विद्या।
बढ़ा दे फेर इसको अब, यही उर आस धारी है॥

न देखूँ जब तलक तुझको, मुझे जीना भी भारी है।
मुझे दर्शन दिखा दे क्यों, वृथा सुध-बुध बिसारी है॥

नहीं हम मान के भूखे, नहीं दौलत पियारी है।
फक्त चाहे शरण तेरी, 'निदाँ' ने यों पुकारी है॥

## ब्रह्मकमल सा खिलकर जीवन, प्रभु के चरणों पर चढ़ जाए

ब्रह्मकमल सा खिलकर जीवन, प्रभु के चरणों पर चढ़ जाए।
जड़-चेतन में कण-कण में, आभास तुम्हारा होता जाए॥

हे करुणाकर करुणा दे दो, दुनिया दुःख-दर्द बटाएँ।
शुष्क भावनाहीन जगत में, भावों की रसधार बहाएँ॥
हे युगदेव तृषित हृदयों को, प्यार तुम्हारा मिलता जाए।
जड़-चेतन में कण-कण में, आभास तुम्हारा होता जाए॥
ब्रह्मकमल सा खिलकर जीवन, प्रभु के चरणों पर चढ़ जाए।
प्रभु के चरणों पर चढ़ जाए॥

वेदमूर्ति वह ज्ञान हमें दो, भ्रम के सारे बन्धन काटें।
सद्विवेक पाकर तुमसे प्रभु, वह प्रसाद सब जग को बाँटें॥
हे प्रभु दैवी अनुशासन में, सबका जीवन ढलता जाए।
जड़-चेतन में कण-कण में, आभास तुम्हारा होता जाए॥
ब्रह्मकमल सा खिलकर जीवन, प्रभु के चरणों पर चढ़ जाए।
प्रभु के चरणों पर चढ़ जाए॥

हे युग-दृष्टा हे युग-सृष्टा, नवल सृजन की शक्ति हमें दो।
सब विभूतियाँ तुम्हें सौंप दें, ऐसी निर्मल भक्ति हमें दो॥
केवल तुम्हें वरण करने का, भाव हृदय में पलता जाए।
जड़-चेतन में कण-कण में, आभास तुम्हारा होता जाए॥
ब्रह्मकमल सा खिलकर जीवन, प्रभु के चरणों पर चढ़ जाए।
प्रभु के चरणों पर चढ़ जाए॥

महाकाल इस कालचक्र को, नवल सृजन हित प्रेरित कर दो।
हम सबका पुरुषार्थ एक कर, अपने साथ नियोजित कर लो॥
विध्वंसों को काट सृजन का, चक्र तीव्र गति चलता जाए।
जड़-चेतन में कण-कण में, आभास तुम्हारा होता जाए॥
ब्रह्मकमल सा खिलकर जीवन, प्रभु के चरणों पर चढ़ जाए।
प्रभु के चरणों पर चढ़ जाए॥

जड़-चेतन में कण-कण में, आभास तुम्हारा होता जाए।
ब्रह्मकमल सा खिलकर जीवन, प्रभु के चरणों पर चढ़ जाए।
प्रभु के चरणों पर चढ़ जाए॥

**चैन आता नहीं प्यार बाँटे बिना, क्या करूँ प्यार की धार रुकती नहीं**

चैन आता नहीं प्यार बाँटे बिना, क्या करूँ प्यार की धार रुकती नहीं।
कौन कितना अभी तक इसे पी सका, पता तो नहीं किन्तु चुकती नहीं॥

स्नेह के स्रोत से फूटते हर समय, छल-छलाकर छलक छूटते हर समय।
कोई लूटे न लूटे कहो क्या करें, हम लुटा कर मजा लूटते हर समय॥
जीत ही जीत है बाँटने में सदा, एक क्षण द्वार पर हाट रुकती नहीं॥
चैन आता नहीं प्यार बाँटे बिना .....

यह पता है कि प्यासे बहुत है अभी, प्यार के बिना उदासे बहुत हैं अभी।
प्यार के नाम पर लूट ही लूट है, इस तरह के तमाशे बहुत हैं अभी॥
है जरूरत जहाँ वस्तुतः प्यार की, प्यार की धार उस द्वार रुकती नहीं॥
चैन आता नहीं प्यार बाँटे बिना .....

इसलिये प्यार की धार बहती सदा, हर समय धार हर मार सहती सदा।
वह उतर जाये हर प्यास के कंठ में, प्यार की धार की साध रहती सदा॥
देखकर हर तड़पती हुई प्यास को, प्राण से प्रीति बौछार रुकती नहीं॥
चैन आता नहीं प्यार बाँटे बिना .....

प्यार की धार तो खेलती प्राण पर, बूँद टिकती नहीं शुष्क पाषाण पर।
प्यार की पीर से जो पिघलने लगे, क्यों नहीं वह हृदय आज इन्सान पर॥
कोई उर्वर धरा तो न प्यासी रहे, इसलिये यह द्रवित धार रुकती नहीं॥
चैन आता नहीं प्यार बाँटे बिना .....

**चलो बदल दो राह समय की**

चलो बदल दो राह समय की. . . . .
बदल दो राह समय की. . . . .

तुम कर्मों से भाग्य बदल दो, भावी को निश्चय का बल दो।
युग अपने निर्भय हाथों से, सिरा पकड़ लो आज प्रलय की॥
बदल दो राह समय की. . . . .

बात करो नौका खेने की, उस तट तक पहुँचा देने की।
बन्दी कर लो मँझधारों को, तुम सत्ता मानो न निलय की॥
बदल दो राह समय की. . . . .

हार-हार का स्वप्न असम्भव, एक अटल हो अभिनव अनुभव।
स्वयं मनुजता परिभाषा है, जीवन की, जागृति की जय की॥
बदल दो राह समय की. . . . .

## चल रहा अन्तःकरण में, रात-दिन चिन्तन तुम्हारा

चल रहा अन्तःकरण में, रात-दिन चिन्तन तुम्हारा।
तन तुम्हारा, मन तुम्हारा, समय का हर क्षण तुम्हारा॥

यह शरीरी कार्य सारे, यंत्रवत ही चल रहे हैं।
आचरण सब आपके अनुशासनों में ढल रहे हैं॥
आपके उद्देश्य हित लग जाए यह जीवन हमारा॥
तन तुम्हारा, मन तुम्हारा, समय का हर क्षण तुम्हारा।
चल रहा अन्तःकरण में, रात-दिन चिन्तन तुम्हारा॥
चल रहा अन्तःकरण में॥

कामनाएँ सब तुम्हारी याद में ही खो गई हैं।
भावनाएँ सब तुम्हारी भावना में खो गई हैं॥
हो रहा है रात-दिन शुभ भावमय अर्चन तुम्हारा॥
तन तुम्हारा, मन तुम्हारा, समय का हर क्षण तुम्हारा।
चल रहा अन्तःकरण में, रात-दिन चिन्तन तुम्हारा॥
चल रहा अन्तःकरण में॥

दिख रहे हैं मस्तकों में आपके सुविचार पलते।
और प्रतिभा रूप में प्रभु आपके उपहार ढलते॥
बीज बन बिखरे तुम्हीं यह जग बना उपवन तुम्हारा॥
तन तुम्हारा, मन तुम्हारा, समय का हर क्षण तुम्हारा।
चल रहा अन्तःकरण में, रात-दिन चिन्तन तुम्हारा॥
चल रहा अन्तःकरण में॥

प्यार था तुमको जगत से वह हमें प्रिय लग रहा है।
और उनके हित सतत ही प्राण तिल-तिल जल रहा है॥
सार्थक कर दो प्रभु यों बीज सा गलना हमारा॥
तन तुम्हारा, मन तुम्हारा, समय का हर क्षण तुम्हारा।
चल रहा अन्तःकरण में, रात-दिन चिन्तन तुम्हारा॥
चल रहा अन्तःकरण में॥

पास आकर भी तुम्हें तन-मन विकल ही रह रहे हैं।
निकटतम सान्निध्य पाने हेतु प्राण मचल रहे हैं॥
अब तुम्हीं इनको संभालो बस नहीं चलता हमारा॥
तन तुम्हारा, मन तुम्हारा, समय का हर क्षण तुम्हारा।
चल रहा अन्तःकरण में, रात-दिन चिन्तन तुम्हारा॥
चल रहा अन्तःकरण में॥

## चर-अचर सभी जड़ चेतन में, हे नाथ तुम्हारा रूप दिखे

चर-अचर सभी जड़ चेतन में, हे नाथ तुम्हारा रूप दिखे।
रोते दुखियों के आँसू में, हे देव तुम्हारा दरस मिले॥

हर पल तेरा ही ध्यान रहे, हर क्षण होठों पर नाम रहे।
जीवन के अँधेरे पथ में भी, कर्तव्य भाव का ज्ञान रहे॥
थक जाऊँ न मैं लम्बा पथ है, हे देव तुम्हारी शरण मिले॥

जब भी जन्मू इस धरती पर, हों साथ आप ही ध्यान रहे।
स्थूल सूक्ष्म कारण तक में भी, मिलने का वरदान रहे॥
हे देव मार्गदर्शक तुम हो, ऐसा हमको विश्वास मिले॥

हे करुणा के सागर प्रभुवर, मुझमें अटूट श्रद्धा भर दो।
यह तन-मन-जीवन निर्मल हो, परमार्थ भाव मुझमें भर दो॥
हो प्राण तुम्हीं, हो श्वाँस तुम्हीं, हे नाथ यही आभास मिले॥

हो साध्य तुम्हीं आराध्य तुम्हीं, साधन तन को स्वीकार करो।
है शक्ति-भक्ति नहीं साम-गान, फिर भी मुझ पर उपकार करो॥
जब तक हम पहुँचें मंजिल तक, कण-कण में नव उल्लास मिले॥

अब लक्ष्य बने हर मानव का, धरती को स्वर्ग बनाना है।
धरती पर रहे न अन्धकार, ऐसा देवत्व जगाना है॥
जब तक इस तन में श्वाँस रहे, हे नाथ तुम्हारी भक्ति मिले॥

## दर्द तुम्हारा प्यार तुम्हारा

दर्द तुम्हारा प्यार तुम्हारा, दर्द तुम्हारा प्यार तुम्हारा।
मेरा तो कुछ नहीं जगत में, दर्द तुम्हारा प्यार तुम्हारा॥
तन का दीप उमर की बाती, चहुँ दिशि में उजियार तुम्हारा॥

एक किरण में ज्योति पुँज तुम, भीतर-बाहर कहीं नहीं तम।
दृष्टि पंथ आलोकित तुमसे, ज्योतिर्मय श्रृंगार तुम्हारा॥

तुम निशि- दिन, तुम साँझ सकारे, तुमने आकुल हृदय उबारे।
तुम घट, पनघट, बंशीवट तुम, जीवन भर आभार तुम्हारा॥

धार अजानी निठुर किनारा, डूब रहे को तुम ही सहारा।
तट के बन्धन सभी तुम्हारे, सम्बल हर मझधार तुम्हारा॥

तुम घन-सावन, तुम मन भावन, तुम सा कौन जगत में पावन।
तुम वृन्दावन, तुम्हीं द्वारिका, अग-जग को आधार तुम्हारा॥

मन्दिर, मस्जिद हर गुरुद्वारे, हम भटके हैं द्वारे-द्वारे।
इस जीवन में रास न आया, भेद-भरा संसार तुम्हारा॥

**दीपक सा तिल-तिल जलना ही, मुझको है स्वीकार**

दीपक सा तिल-तिल जलना ही, मुझको है स्वीकार।
मैं मानव हूँ मेरा केवल, सेवा पर अधिकार॥

पूर्ण नहीं हूँ किन्तु मुझे है, इतना दृढ़ विश्वास।
अंश उसी का हूँ जिसके हैं, यह धरती आकाश॥
सृष्टि-प्रलय, उत्थान-पतन सब, उसके ही हैं खेल।
सुख–दुःख हैं उसको समान जो, रखता इससे मेल॥
उसका दिया सभी मुझको, लगता है उपहार॥
दीपक सा तिल-तिल जलना ही, मुझको है स्वीकार।
मैं मानव हूँ मेरा केवल, सेवा पर अधिकार॥

उसने इतना दिया कि वह ही, खर्च नहीं होता।
प्यार, ज्ञान, सहकार बाँटने से देना होता॥
दुनियावी दौलत तो केवल, प्रतिभा की छाया।
साथ नहीं कुछ जायेगा, कुछ साथ नहीं आया॥
उसे समर्पित हुआ सार्थक, बाकी सब बेकार॥
दीपक सा तिल-तिल जलना ही, मुझको है स्वीकार।
मैं मानव हूँ मेरा केवल, सेवा पर अधिकार॥

जीवन की डाली पर खिलते, रंग बिरंगे फूल।
कभी उन्हें सहलाता माली, कभी सताते शूल॥
मगर पुष्प तो दुःख सहकर भी, फैलाते मुस्कान।
उनकी इस महानता का, करते भौंरे गुणगान॥
इसीलिए तो उनसे करता, है सारा जग प्यार॥
दीपक सा तिल-तिल जलना ही, मुझको है स्वीकार।
मैं मानव हूँ मेरा केवल, सेवा पर अधिकार॥

**दीप हूँ जलता रहूँगा**

दीप हूँ जलता रहूँगा।
मैं प्रलय की आँधियों से, अन्त तक लड़ता रहूँगा॥

पार जाऊँगा मेरा साहस, कभी हारा नहीं है।
जो मिटा अस्तित्व दे, ऐसी कोई धारा नहीं है॥
कौन रोकेगा स्वयं तूफान, थककर रुक गये हैं।
हर लहर मेरा किनारा, ध्येय तक बढ़ता रहूँगा॥

दीप हूँ जलता रहूँगा।
मैं प्रलय की आँधियों से, अन्त तक लड़ता रहूँगा॥

तोड़ दी अवरोध की सारी, शिलाएँ एक क्षण में।
मैं धरा का प्यार मुझको, स्नेह देते सब डगर में॥
शीत वर्षा और आतप कर, न पाये क्षीण गति को।
बिजलियों की कौंध में भी, पंथ गढ़ता ही रहूँगा॥

दीप हूँ जलता रहूँगा।
मैं प्रलय की आँधियों से, अन्त तक लड़ता रहूँगा॥

कर लिया विषपान शिव हूँ, मृत्यु मेरा क्या करेगी।
मैं स्वयं जय हूँ, पराजय फिर मुझे क्यों कर वरेगी॥
बन स्वयं वरदान मैंने श्राप को दे दी चुनौती।
हूँ स्वयं संकल्प पथ पर सतत बढ़ता ही रहूँगा ॥

दीप हूँ जलता रहूँगा।
मैं प्रलय की आँधियों से, अन्त तक लड़ता रहूँगा॥

## देख खुला है द्वार पुजारी

देख खुला है द्वार पुजारी, देख खुला है द्वार पुजारी।
बैठ गया क्यों फेंक धूल में, फूलों का यह हार पुजारी॥

स्वर्ण कमल से खिले हुए हैं, मन्दिर के वे कलश मनोहर।
मृदुल पवन के शुभ अंचल में, फहर रहा पावन ध्वज सुंदर॥
नयन मूद तू सोच रहा क्या, देख तनिक उस पार पुजारी॥

क्या सहलाता इन छालों को, तू पूजा का थाल उठा ले।
देख रहा तू क्या पथ पर ये, पर्वत ये नदिया ये नाले॥
शीतल हो जायेंगे क्षण में, ये जलते अंगार पुजारी॥

भाव प्रवाह उमड़ने दे तू, लहराने दे पावन सागर।
मिल जायेगीं नदियाँ उसमें, डूबेंगे नभचुम्बी गिरिवर॥
रुक न सकी है अब तक जग में, शुद्ध प्रेम की धार पुजारी॥

थाल सजाए आज जा रहा, तू जिसकी पूजा करने को।
आयेगा वह स्वयं दौड़कर, तुझसे पथ में ही मिलने को॥
गूँथ हृदय के पुष्प तुझे वह, पहनाएगा हार पुजारी॥

**दे प्रभो! वरदान ऐसा, दे विभो वरदान ऐसा**

दे प्रभो! वरदान ऐसा, दे विभो वरदान ऐसा।
भूल जाऊँ भेद सब, अपना पराया मान कैसा॥

मुक्त होऊँ बन्धनों से, मोह माया पाश टूटे।
स्वार्थ, ईर्ष्या, द्वेष आदिक, दुर्गुणों का संग छूटे॥
प्रेम मानस में भरा हो, हो हृदय में शान्ति छाई।
देखता होऊँ जिधर मैं, दे उधर तू ही दिखाई॥
नष्ट हो सब भिन्नता फिर, वैर और विरोध कैसा॥
भूल जाऊँ भेद सब, अपना पराया मान कैसा॥
दे प्रभो! वरदान ऐसा . . . . . .

ज्ञान के आलोक से, उज्ज्वल बने यह चित्त मेरा।
लुप्त हो अज्ञान का, अविचार का छाया अँधेरा॥
हो प्रभो परमार्थ के, शुभ कार्य में रुचि नित्य मेरी।
दीन-दुखियों की कुटी में, ही मिले अनुभूति तेरी॥
दूसरों के दुःख को, समझूँ सदा मैं आप जैसा॥
भूल जाऊँ भेद सब, अपना पराया मान कैसा॥
दे प्रभो! वरदान ऐसा . . . . . .

हो अभय, अविवेक तज, शुचि सत्य-पथ गामी बनूँ मैं।
आपदाओं से भला क्या, काल से भी ना डरूँ मैं॥
सत्य को ही धर्म मानूँ, सत्य की ही साधना में।
सत्य के ही रूप में, तेरी करूँ आराधना मैं॥
भूल जाऊँ भेद सब, अपना पराया मान कैसा॥
दे प्रभो! वरदान ऐसा . . . . . .

**दिव्य अनुदान देने खड़े देवता, है ललक किन्तु उपकार कैसे करें**

दिव्य अनुदान देने खड़े देवता, है ललक किन्तु उपकार कैसे करें।
लोभ मद-मोह की गन्दगी से भरे, पात्र में वे विमल नीर कैसे भरें॥

प्रभु कृपा को सुगन्धें मिलेंगी नहीं, तीव्र दुर्गन्ध से हो अगर मन भरा।
खिल सकेंगे भला स्वस्थ कैसे सुमन, यदि रहे घास से पूर्ण उपवन भरा॥
कंकड़ों पत्थरों का लिये बोझ हम, अब उफनता हुआ ज्वार कैसे तरें॥

हम बँधे कामनाओं की जंजीर से, हर समय नर्क की यातना सह रहे।
लोक-कल्याण की भावना के बिना, एक विकराल दावाग्नि में दह रहे॥
सिर्फ अपने दुःखों से दुखी जो रहे, अन्य की वे हृदय पीर कैसे हरें॥

दिव्य अनुदान पाना अगर चाहते, स्वच्छ पहले करें पात्र मन का स्वयं।
लोक-हित के प्रबल ताप में हम सभी, स्वार्थ अपना गला दें मिटा दें अहम्॥
स्वार्थ में श्रेष्ठ प्रतिभा सनी देखकर, देवता आज विश्वास किसका करें॥

माँग है आज इन्सानियत की यही, भाव-सम्वेदनाएँ न सूखी रहें।
प्रेम-सद्भावना की विमल गन्ध से, हर हृदय में उमंगें नयी फिर भरें॥
आज हमसे नियन्ता यही चाहता, दिव्यता की प्रबल साधना हम करें॥

दिव्य अनुदान देने खड़े देवता, है ललक किन्तु उपकार कैसे करें।
लोभ मद-मोह की गन्दगी से भरे, पात्र में वे विमल नीर कैसे भरें॥

## दुःखी चरण लम्बी मंजिल से, लेकिन तनिक नहीं कतराया

दुःखी चरण लम्बी मंजिल से, लेकिन तनिक नहीं कतराया।
ढूँढ़-ढूँढ़कर हार गया पर, मैंने तेरा पता न पाया॥

आतुर लोचन लिए पन्थ में, बैठा हूँ चिर साधक तेरा।
तिमिरा छिन्न हुआ यह जीवन, छाया है अवसाद घनेरा॥
है तुझसे मिलने की आशा, तेरे दर्शन की अभिलाषा।
अजर-अमर विश्वास लिए हूँ, तो भी जी मेरा अकुलाया॥
ढूँढ़-ढूँढ़कर हार गया पर, मैंने तेरा पता न पाया॥

यदि क्षण-भर भी पा जाता मैं, तेरा प्यार विकल जीवन में।
रह न सकेगी कंचन काया, वसुधा के विस्तृत अंचल में॥
भाव-भक्ति है बढ़ती जाती, नीर बिन्दु आँखें बरसाती।
जर्जर तन है दुःखमय जीवन, मैं तो जगती से उतकाया॥
ढूँढ़-ढूँढ़कर हार गया पर, मैंने तेरा पता न पाया॥

तेरा दर्शन मिले अगर तो, इस जग का संहार मिटाऊँ।
तेरी करुणामय छवि जन-जन, के मन मन्दिर में बिठलाऊँ॥
होकर निडर अकेला चल दूँ, घर-घर प्रज्ञा ज्योति जलाने।
दिखला दूँ सारी दुनियाँ को, हर प्राणी में वही समाया॥
ढूँढ़-ढूँढ़कर हार गया पर, मैंने तेरा पता न पाया॥

दानवपन जग ने अपनाया, यह मुझको अब नहीं सुहाता।
मैं तो विह्वल हुआ जगती में, चैन नहीं कुछ मन में पाता॥
सहता हूँ अब भी आघातें, बीत चुकी कितनी ही रातें।
गिन-गिन तारे नील गगन के, आँखों से था नीर बहाया॥
ढूँढ़-ढूँढ़कर हार गया पर, मैंने तेरा पता न पाया॥

दुःखी चरण लम्बी मंजिल से, लेकिन तनिक नहीं कतराया।
ढूँढ़-ढूँढ़कर हार गया पर, मैंने तेरा पता न पाया॥

**गँवा दिया हमने जीवन में, धर्म और ईमान**

गँवा दिया हमने जीवन में,धर्म और ईमान।
मिलेंगे फिर कैसे भगवान॥

हमको दिया बहुत ईश्वर ने, हमने नहीं सहेजा।
भूल गये किसलिए प्रभू ने, हमें धरा पर भेजा॥
कभी न मन से यहाँ सँवारा, ईश्वर का उद्यान।
किया इकट्ठा हमने केवल, अपना सुख सामान॥
मिलेंगे फिर कैसे भगवान॥

पाई सुन्दर देह कि जैसे, नहीं किसी प्राणी की।
सत्कर्मों की कभी न हमने, इससे अगवानी की॥
नहीं किसी पल आया हमको, किसी दुखी का ध्यान।
दिया न तन से कभी किसी को, सुख-सेवा का दान॥
मिलेंगे फिर कैसे भगवान॥

बिन सोचे सर्वदा स्वार्थ में, अपना समय गँवाया।
धन तो बहुत कमाया लेकिन, सुख-सन्तोष न पाया॥
लिया कष्ट में नाम राम का, किया न उसका काम।
भाग-दौड़ में यहाँ बिताये, हमने आठों याम॥
मिलेंगे फिर कैसे भगवान॥

श्रम का कोई अंश न बिल्कुल, काम किसी के आया।
श्रम-सेवा का पंथ न हमने, कभी यहाँ अपनाया॥
किया यहाँ जो कुछ भी उसमें, भरा रहा अभिमान।
नहीं सहज की दिया किसी को, स्नेह और सम्मान॥
मिलेंगे फिर कैसे भगवान॥

**गायत्री माँ की उपासना, ही जीवन का सार है**

गायत्री माँ की उपासना, ही जीवन का सार है।
देश, धर्म, संस्कृति की रक्षा, की यह मूलाधार है॥
यह जीवन का सार है॥

इसी साधना के सम्बल से, सिद्ध समर्थ हुआ यह देश।
ऋतम्भरा प्रज्ञा का पाया, था हमने वरदान विशेष॥
था हमने वरदान विशेष॥

अमृजमय जीवन हो जाता, इनमें इतना प्यार है॥
देश, धर्म, संस्कृति की रक्षा, की यह मूलाधार है॥

धर्म, अर्थ या काम मोक्ष, कोई भी इनसे दूर नहीं।
इनके ही प्रताप से रहती, सुख-सुविधा भरपूर मही॥
सुख-सुविधा भरपूर मही॥

यह मानस की मणि-मुक्ता यह ही सुमनों का हार है॥
देश, धर्म, संस्कृति की रक्षा, की यह मूलाधार है॥

गायत्री से विमुख हुआ जो, उसने खोया बुद्धि विवेक।
सत्य ज्ञान का मर्म यही है, शुचिता की पावन अभिषेक॥
शुचिता की पावन अभिषेक॥

मानवता के हित का केवल, गायत्री आधार है॥
देश, धर्म, संस्कृति की रक्षा, की यह मूलाधार है॥

गायत्री माँ की उपासना, ही जीवन का सार है।
देश, धर्म, संस्कृति की रक्षा, की यह मूलाधार है॥
यह जीवन का सार है॥

**घट-घट में श्रीराम रमे हैं, जब चाहो दर्शन कर लेना**

घट-घट में श्रीराम रमे हैं, जब चाहो दर्शन कर लेना।
घट-घट में श्रीराम रमे हैं, जब चाहो दर्शन कर लेना॥

रग-रग में वह रोम-रोम में, वह धरती में और व्योम में।
जड़-चेतन में व्याप्त वही है, निर्मल मन में प्राप्त वही है॥
बूँद-बूँद में, सागर में है, तुम उसका वन्दन कर लेना॥
घट-घट में श्रीराम रमे हैं, जब चाहो दर्शन कर लेना॥

पतझर है वीरान उसी से, मधु ऋतु की मुस्कान उसी से।
सावन घन उससे ही झरते, सूखे ताल-सरोवर भरते॥
वह कल-कल जल निर्झर में है, मन अपना पावन कर लेना॥
घट-घट में श्रीराम रमे हैं, जब चाहो दर्शन कर लेना॥

जग में जो उत्थान-पतन है, जो कुछ होता परिवर्तन है।
सुबह-शाम का वह कारण है, सब उसका ही अनुशासन है॥
वही चाँद में दिनकर में है, पल भर तुम चिन्तन कर लेना॥
घट-घट में श्रीराम रमे हैं, जब चाहो दर्शन कर लेना॥

पाहन है चट्टान वही है, किन्तु सुगम आसान वही है।
हिम-शिखरों की शान उसी से, सरिता है गतिवान उसी से॥
श्रमिकों के श्रम सीकर में है, उसका ही पूजन कर लेना॥
घट-घट में श्रीराम रमे हैं, जब चाहो दर्शन कर लेना॥

वह सबका पोषक-पालक है, वह जगती का संचालक है।
महाकाल से मन को जोड़ो, छोड़ो तुम हठ-धर्मी छोड़ो॥
सबका हित प्रभु के स्वर में है, उसपर मन अर्पण कर देना॥
घट-घट में श्रीराम रमे हैं, जब चाहो दर्शन कर लेना॥

## है उदास कुछ अन्तरतम यह, रत्नों का उपहार किसे दूँ

है उदास कुछ अन्तरतम यह, रत्नों का उपहार किसे दूँ।
पात्र बहुत छोटे दिखते हैं, पावस की जल-धार किसे दूँ॥

सागर के तल तक जाकर ही, मुश्किल से ये आ पाये हैं।
किन्तु मिला न पहनने वाला, सोच हृदय तल घन छाये हैं॥
विजयी कण्ठ न दिखता कोई, रत्नों का यह हार किसे दूँ॥

हर मन की धरती प्यासी है, किन्तु न कोई पोली करता।
पर-हित के बीजों से कोई, अपना जीवन खेत न भरता॥
उमड़ रही अन्तर में लेकिन, मेघों की बौछार किसे दूँ॥

पीर पराई नहीं समझते, कैसे भाव मनों में जागे।
संवेदन की भाषा खोयी, टूटे सद्भावों के धागे॥
कौन लिखेगा गीत प्यार के, अन्तर के उद्गार किसे दूँ॥

भौतिकता के आकर्षण ने, मनुज मात्र को भरमाया है।
भक्ति-साधना औ संयम के, नाम मात्र से घबराया है॥
तप कर जिसे भरा जीवन भर, वह अक्षय भण्डार किसे दूँ॥

ले, पर लेकर के वह थाती, जो जन दीन-हीन को बाँटे।
जहाँ दरार दिखे उसको अपने, यत्नों से जो जन पाटे॥
मिल न सकेगा क्या ऐसा जन, अपना गुरुतर भार किसे दूँ॥

## है यह बात सखे, स्थिर हम-तुम सबके मन में

है यह बात सखे, स्थिर हम-तुम सबके मन में।
है यह बात सखे, स्थिर हम-तुम सबके मन में॥
अब भी वे रहते हैं प्रतिक्षण, शान्तिकुज के ही आँगन में।
है यह बात सखे॥

करुणापूर्ण हृदय उनका है, मधु ममत्व की राशि।
छोड़ हमें वे हो न सकेंगे, अन्य लोक के वासी॥
याद करो आ जायेंगे वे, अभी उदास नयन में।
है यह बात सखे, स्थिर हम-तुम सबके मन में॥
अब भी वे रहते हैं प्रतिक्षण, शान्तिकुज के ही आँगन में।
है यह बात सखे॥

उनके जाने का न तनिक दुःख, हम निज मन में मानें
पूर्ण करें युग परिवर्तन का, कार्य उन्हें पहचानें
वे हैं शाश्वत दिव्यःज्योति नव, भर लें निज चेतन में
है यह बात सखे, स्थिर हम-तुम सबके मन में॥
अब भी वे रहते हैं प्रतिक्षण, शान्तिकुज के ही आँगन में।
है यह बात सखे॥

केवल तन ने यात्रा की है, मन तो यहीं बँधा है।
सिर्फ न रोये हम उनका भी, व्यह्वल कण्ठ रुँधा है॥
रोज उतरते हैं प्रकाश बन, पूजा वाले क्षण में।
है यह बात सखे, स्थिर हम-तुम सबके मन में॥
अब भी वे रहते हैं प्रतिक्षण, शान्तिकुज के ही आँगन में।
है यह बात सखे॥

आये थे वे हम सबकी ही, प्रज्ञा सुप्त जगाने।
और गए भी हम सबके ही, ब्रह्मकमल विकसाने॥
अतः अधिक तप पूजा लेने, पहुँचे नन्दनवन में।
है यह बात सखे, स्थिर हम-तुम सबके मन में॥
अब भी वे रहते हैं प्रतिक्षण, शान्तिकुज के ही आँगन में।
है यह बात सखे, स्थिर हम-तुम सबके मन में॥ है यह बात सखे॥

**हम अपना सब कुछ सौंप चुके, हे नाथ तुम्हारे चरणों में**

हम अपना सब कुछ सौंप चुके, हे नाथ तुम्हारे चरणों में।
लौ लगी रहे निशदिन अब तो, हे नाथ तुम्हारे चरणों में॥

करुणाकर अब तो आ जाओ, इस मन मन्दिर में बस जाओ।
निष्काम दीप से सदा जलें, हे नाथ तुम्हारे चरणों में॥

दो वर, पर दुःख हम सदा हरें, केवल तेरे हित कर्म करें।
श्रद्धा के पावन सुमन धरें, हे नाथ तुम्हारे चरणों में॥

हों मंगलमय सबकी राहें, पूरी हों सबकी शुभ चाहें।
हो यह जीवन अर्पित केवल, हे नाथ तुम्हारे चरणों में॥

## हमने आँगन नहीं बुहारा, कैसे आयेंगे भगवान्

हमने आँगन नहीं बुहारा, कैसे आयेंगे भगवान्।
मन का मैल नहीं धोया तो, कैसे आयेंगे भगवान्॥

हर कोने कल्मष-कषाय की, लगी हुई है ढेरी।
नहीं ज्ञान की किरण कहीं है, हर कोठरी अँधेरी।
आँगन चौबारा अँधियारा, कैसे आयेंगे भगवान्॥

हृदय हमारा पिघल न पाया, जब देखा दुखियारा।
किसी पन्थ भूले ने हमसे, पाया नहीं सहारा।
सूखी है करुणा की धारा, कैसे आयेंगे भगवान्॥

अन्तर के पट खोल देख लो, ईश्वर पास मिलेगा।
हर प्राणी में ही परमेश्वर, का आभास मिलेगा।
सच्चे मन से नहीं पुकारा, कैसे आयेंगे भगवान्॥

निर्मल मन हो तो रघुनायक, शबरी के घर जाते।
श्याम सूर की बाँह पकड़ते, शाग विदुर घर खाते।
इस पर हमने नहीं विचारा, कैसे आयेंगे भगवान्॥

**हरि ॐ तत्सत् हरि ॐ तत्सत्**

हरि ॐ तत्सत् हरि ॐ तत्सत्, हरि ॐ तत्सत् हरि ॐ तत्सत्।
महामंत्र है तू जपा कर इसी को, महामंत्र है तू जपा कर इसी को॥
हरि ओ३म तत्सत् हरि ओ३म तत्सत्, हरि ओ३म तत्सत् हरि ओ३म तत्सत्॥

दुष्टों ने लोहे का खम्भा रचा था, तो निर्दोष प्रह्लाद क्यों बचा था।
विनय एक स्वर से करी थी उसी ने॥
हरि ॐ तत्सत् हरि ॐ तत्सत्, हरि ॐ तत्सत् हरि ॐ तत्सत्।
महामंत्र है तू जपा कर इसी को, महामंत्र है तू जपा कर इसी को॥

सभा में खड़ी द्रौपदी रो रही थी, लज्जा के आँसुओं से मुख धो रही थी।
बढ़ा चीर उसमें यही रंग रंगा था॥
हरि ॐ तत्सत् हरि ॐ तत्सत्, हरि ॐ तत्सत् हरि ॐ तत्सत्।
महामंत्र है तू जपा कर इसी को, महामंत्र है तू जपा कर इसी को॥

लगी आग लंका में हलचल मचा था, तो घर फिर विभीषण का कैसे बचा था।
लिखा था यही मंत्र कुटिया में उसके॥
हरि ॐ तत्सत् हरि ॐ तत्सत्, हरि ॐ तत्सत् हरि ॐ तत्सत्।
महामंत्र है तू जपा कर इसी को, महामंत्र है तू जपा कर इसी को॥

हलाहल का मीरा ने प्याला पिया था, तो विष से वो अमृत कैसे हुआ था।
दीवानी भी मीरा इसी नाम की थी॥
हरि ॐ तत्सत् हरि ॐ तत्सत्, हरि ॐ तत्सत् हरि ॐ तत्सत्।
महामंत्र है तू जपा कर इसी को, महामंत्र है तू जपा कर इसी को॥

कहो नाथ शबरी के घर कैसे आये, आये तो फिर बेर जूठे क्यों खाये।
जबाँ में यही था हृदय में यही था॥
हरि ॐ तत्सत् हरि ॐ तत्सत्, हरि ॐ तत्सत् हरि ॐ तत्सत्।
महामंत्र है तू जपा कर इसी को, महामंत्र है तू जपा कर इसी को॥

हरि ॐ की एक माला बनाकर, जपो रात दिन अपने चित्त को लगाकर।
करो साधना हर समय तुम इसी की॥
हरि ॐ तत्सत् हरि ॐ तत्सत्, हरि ॐ तत्सत् हरि ॐ तत्सत्।
महामंत्र है तू जपा कर इसी को, महामंत्र है तू जपा कर इसी को॥

## हर विपदा में सृजन शिल्पियों

हर विपदा में सृजन शिल्पियो! तुम साहस बल पाओगे।
हर विपदा में सृजन शिल्पियो! तुम साहस बल पाओगे।
करो सदा विश्वास कि पथ पर, मेरा सम्बल पाओगे॥
करो सदा विश्वास कि पथ पर, मेरा सम्बल पाओगे॥

दिव्य शक्ति का वैसे तो, होगा हर पल आभास तुम्हें।
तुम्हें लगेगा जैसे छूकर, आती है हर साँस उन्हें॥
अगर कभी उनकी यादों में, फिर भी आँखें भर आएँ।
सृजन शावको! मेरी ममता, का तुम आँचल पाओगे॥
करो सदा विश्वास कि पथ पर, मेरा सम्बल पाओगे॥
हर विपदा में सृजन शिल्पियो! तुम साहस बल पाओगे।

समय कठिन है, आज पतन से, घिरा हुआ हर व्यक्ति यहाँ।
सिर्फ स्वार्थ में लगी हुई है, हर प्रतिभा हर शक्ति यहाँ॥
लिए आत्म-विश्वास चीरना, झोंके तेज हवाओं के।
मन में जब श्रद्धा उमड़ेगी, हमें उसी पल पाओगे॥
करो सदा विश्वास कि पथ पर, मेरा सम्बल पाओगे॥
हर विपदा में सृजन शिल्पियो! तुम साहस बल पाओगे।

इन विभीषिकाओं से लेकिन, जरा नहीं तुम घबराना।
यह है अन्तिम पहर रात का, बिना डरे बढ़ते जाना॥
छँटना ही है घना अँधेरा, सूर्य उदय होना ही है।
तुमने दी आवाज आज तो, श्रेय तुम्हीं कल पाओगे॥
करो सदा विश्वास कि पथ पर, मेरा सम्बल पाओगे॥
हर विपदा में सृजन शिल्पियो! तुम साहस बल पाओगे।

करना जो भी काम उसे तुम, त्याग भावना से करना।
हो अन्याय बड़ा पर्वत से, तो भी कभी नहीं डरना॥
इतना तपना स्वयं कि कुन्दन, बन जाए व्यक्तित्व प्रखर।
युग के फौलादी साँचे में, तात तभी ढल पाओगे॥
करो सदा विश्वास कि पथ पर, मेरा सम्बल पाओगे॥
हर विपदा में सृजन शिल्पियो! तुम साहस बल पाओगे।

## हे देव तुम्हारी पीड़ा का, मैं अश्रु बनूँ ढलती जाऊँ

हे देव तुम्हारी पीड़ा का, मैं अश्रु बनूँ ढलती जाऊँ।
बन पुष्प तुम्हारे सौरभ को, सारी जगती में बिखराऊँ॥

मेरे मन के दर्पण में प्रभु, प्रतिबिम्ब तुम्हारा सदा रहे।
हर भाव तुम्हारा अर्चन हो, हर क्षण अन्तर में रूप बसे॥
देखूँ स्वरूप बस तेरा ही, तुझको ही जन-जन में पाऊँ॥
हे देव तुम्हारी पीड़ा का, मैं अश्रु बनूँ ढलती जाऊँ।
बन पुष्प तुम्हारे सौरभ को, सारी जगती में बिखराऊँ॥

हे करुणा सिंधु-दयासागर, मुझमें वह दर्द जगा देना।
पी सकूँ हलाहल जन-हित में, वह करुणा धार बहा देना॥
तेरे मुरझाये उपवन को, बन स्नेह स्रोत मैं सरसाऊँ॥
हे देव तुम्हारी पीड़ा का, मैं अश्रु बनूँ ढलती जाऊँ।
बन पुष्प तुम्हारे सौरभ को, सारी जगती में बिखराऊँ॥

शुभ ज्योति जलाई जो तुमने, अपने जीवन की बाती से।
आलोक लुटाया जीवन भर, गाये शुभ गान प्रभाती के॥
बन शलभ तुम्हारी ज्योति में, तन-मन-धन आज चढ़ा जाऊँ॥
हे देव तुम्हारी पीड़ा का, मैं अश्रु बनूँ ढलती जाऊँ।
बन पुष्प तुम्हारे सौरभ को, सारी जगती में बिखराऊँ॥

हो सके समर्पण वह मेरा, हर साध्य तुम्हारा लक्ष्य रहे।
तेरी चाहों में, सपनों में, हर क्षण अर्पित सर्वस्व रहे॥
अभिनव अंकुर को सींच सकूँ, हिम भी हूँ तो गलती जाऊँ॥
हे देव तुम्हारी पीड़ा का, मैं अश्रु बनूँ ढलती जाऊँ।
बन पुष्प तुम्हारे सौरभ को, सारी जगती में बिखराऊँ॥

# हे हँसवाहिनी जगदम्बे, गायत्री माँ तुझ ध्यान धरूँ

हे हँसवाहिनी जगदम्बे, गायत्री माँ तुझ ध्यान धरूँ॥
हे सकल सृष्टि मा व्यापि रही, सावित्री तारूँ ध्यान धरूँ॥
हे हँसवाहिनी जगदम्बे, गायत्री माँ तुझ ध्यान धरूँ॥

धरु हँसनु वाहन सा माटे, जे सात्विक नित आहार करे।
गुण-दोष समाजे निर में क्षीर तजि दोष, गुण स्वीकार करे॥
हूँ पात्र बनूँ तुझ वाहन में बस, एकज उर अरमान धरूँ॥
हे हँसवाहिनी जगदम्बे, गायत्री माँ तुझ ध्यान धरूँ॥

कहिं एक मुँख कहिं पाँच मुँख, विविध स्वरूप तारूँ दी से।
कहिं पंच कोष के पंच प्राण के, पंच तत्त्व ना रूप दी से॥
त्वीं तत्त्व रूप आत्मा स्वरूप, मुझ अन्तर मा तुझ ध्यान धरूँ॥
हे हँसवाहिनी जगदम्बे, गायत्री माँ तुझ ध्यान धरूँ॥

तुम अमृत छौं तारा पावे सो, अमर तत्त्व पावीं जाता।
ले विविध तापती मुक्ति बनी, थैं देव सवा सौ गीत गाता॥
तुम ज्ञान रूप अमृत धारा, हूँ एद सुधा रस पान करूँ॥
हे हँसवाहिनी जगदम्बे, गायत्री माँ तुझ ध्यान धरूँ॥

तुम पारस छौ तारा इस पर, लो फन्न सुबाण बनी जातूँ।
होए पतीत मानव ते पर, देवन ने ते पामी जातूँ॥
तुम कामधेनु छौ जगदम्बे, तुम बालक तव पयपान करूँ॥
हे हँसवाहिनी जगदम्बे, गायत्री माँ तुझ ध्यान धरूँ॥

तू कल्पवृक्ष छौ तुझ छाए, पेसीने से संकल्प करे।
भौतिक तो तू अध्यात्म पराते, उच्च शिखर ले पार करे॥
ना साधक माँगतो कँग दीजू, बस हर पल तुझ गुण-गाल करूँ॥
हे हँसवाहिनी जगदम्बे, गायत्री माँ तुझ ध्यान धरूँ॥
हे सकल सृष्टि मा व्यापि रही, सावित्री तारूँ ध्यान धरूँ॥
हे हँसवाहिनी जगदम्बे, गायत्री माँ तुझ ध्यान धरूँ॥

**हे नाथ याद तेरी, मन को सता रही है**

हे नाथ याद तेरी, मन को सता रही है।
हे नाथ याद तेरी, मन को सता रही है॥

क्या कुछ नहीं है पाया, आँचल में तेरे आके।
हम पा गये हैं सब कुछ, नजदीक तेरे आके॥
हँस-हँस के दे रहा है, कण-कण तेरी गवाही।
सर झुक गया हमारा, साकार तुझको पाके॥
तेरी ही ज्योति जग में, जीवन जगा रही है॥
हे नाथ याद तेरी, मन को सता रही है॥

सन्देश दे रहा तू, हर फूल में हँसी का।
सन्देश दे रहा तू, हर डाल में खुशी का॥
मस्ती से पात-पात में, ताली बजा रहा है।
चंचल हवा में भारी, आँचल उड़ा रहा है॥
ऐसी छटा निराली, हर ओर छा रही है।
हे नाथ याद तेरी, मन को सता रही है॥

थिरकन दिखाई तूने, बन कर मयूर वन में।
पंचम स्वरों में बोला, कोयल के श्याम तन में॥
बन के पपीहरा तू, पी-पी की रट लगाता।
मधुमास बन के मीठी, यादें सदा दिलाता॥
पुलकन पुनीत ऐसा, संगीत गा रही है।
हे नाथ याद तेरी, मन को सता रही है॥

## हे प्रभु! मानव हृदय को, गगन सा विस्तार दे दो

हे प्रभु! मानव हृदय को, गगन सा विस्तार दे दो।
मानवों को मानवों के, प्रति असीमित प्यार दे दो॥

सीख जायें कष्ट से रोते हुए, जन को हँसाना।
दीन हीनों को उठाकर, प्यार से उर से लगाना॥
जो कभी खाली न हो, सद्भाव का भण्डार दे दो॥
हे प्रभु मानव हृदय को . . . . . .

भेद हम माने नहीं, छोटे-बड़े ऊँचे-गिरे का।
साथ दें बढ़कर सदा, संकट मुसीबत में घिरे का॥
खोल दो समदृष्टि, चिन्तन को यही आधार दे दो॥
हे प्रभु! मानव हृदय को . . . . .

प्रेम के मृदु सूत्रों में, बँध जाये धरती के निवासी।
हृदय में सबके खिली हो, भावना की पूर्णमासी॥
मेट दो सब दम्भ मन का, शील का उपहार दे दो॥
हे प्रभु मानव हृदय को . . . . . .

तोड़ दो संकीर्णता के, बन्ध जो मन पर लगे हैं।
मेट दो वह द्वेष-ईर्ष्या, हम सभी जिसमें पगे हैं॥
मेट कर दुष्वृत्ति की, दुनियाँ नया संसार दे दो॥
हे प्रभु! मानव हृदय को . . . . . .

अस्त हो जाये घृणा की, दुःखद भीषण रात काली।
और ऊगे प्यार की, मंगलमयी सुप्रभात लाली॥
खिल उठें मन के कमल, हमको वही व्यवहार दे दो॥

हे प्रभु! मानव हृदय को, गगन सा विस्तार दे दो।
मानवों को मानवों के, प्रति असीमित प्यार दे दो॥

**हे प्रभु! ध्यान में तुम समाए हुए, हो नयन में तुम्हीं और मन में तुम्हीं**

हे प्रभु! ध्यान में तुम समाए हुए, हो नयन में तुम्हीं और मन में तुम्हीं।

लक्ष्य हर हास-उल्लास के हो तुम्हीं, हो उमंगें तुम्हीं चाह में हो तुम्हीं।
हर क्रिया में तुम्हीं तो समाए हुए, औ हृदय के हरेक भाव में हो तुम्हीं॥
हर समय जल रही ज्योति बनकर प्रभो, कर रहे वास अन्तःकरण में तुम्हीं॥
हे प्रभु! ध्यान में तुम समाए हुए, हो नयन में तुम्हीं और मन में तुम्हीं॥

मात्र तुम हर तरफ दीखते हो मुझे, व्यक्ति में वृक्ष में वायु में गन्ध में।
प्रभु तुम्हारा सुविस्तार पाकर यहाँ, डूब जाती व्यथा मेरी आनन्द में॥
प्रेरणा हर प्रबल यत्न की हो तुम्हीं, चेतना हो मेरे हर चरण में तुम्हीं॥
हे प्रभु! ध्यान में तुम समाए हुए, हो नयन में तुम्हीं और मन में तुम्हीं॥

शक्ति दो काम निबटा सकूँ शीघ्र मैं, सौंपकर जो मुझे सूक्ष्म तुम हो गए।
खिल सकें फिर कमल दिव्य गन्धें लिए, नाथ जिसके स्वयं बीज तुम हो गए॥
देखकर काम पूरा मुझे ले सको, शान्ति सुखदायिनी निज शरण में तुम्हीं॥
हे प्रभु! ध्यान में तुम समाए हुए, हो नयन में तुम्हीं और मन में तुम्हीं॥

जन्म-जन्मान्तरों से रहे साथ हम, मेरे भगवन सदा साथ देते रहो।
हाथ अपनी कृपा का दिया जो सदा, हर जनम में मुझे साथ देते रहो॥
भोर हो मुझे सूर्य से मिल सको, सत्य-युग के सुखद अवतरण में तुम्हीं॥
हे प्रभु! ध्यान में तुम समाए हुए, हो नयन में तुम्हीं और मन में तुम्हीं।
हो नयन में तुम्हीं और मन में तुम्हीं, हो नयन में तुम्हीं और मन में तुम्हीं॥

## हो गये बहुत सुराख नाव में, मत जा तू मझधार रे

हो गये बहुत सुराख नाव में, मत जा तू मझधार रे।
इस हालत में डूबेगा तू, डूबेगा परिवार रे॥
मत जा तू मझधार माँझी, मत जा तू मझधार रे॥
माँझी हो...माँझी हो...

बहुत किये सूराख काम ने, और किये अभिमान ने।
किये कई सूराख स्वार्थ में, डूबी हुई थकान ने॥
तली करी छलनी लिप्सा ने, क्रोध-जनित अज्ञान ने।
भीतर भरने लगी नाव के, अब तो जल की धार रे॥
मत जा तू मझधार माँझी, मत जा तू मझधार रे॥
माँझी हो...माँझी हो...

यदि मन हो बीमार, कहो क्या होगा सुन्दर देह का।
धरती हो दलदली अगर तो, क्या होगा फिर मेह का॥
अगर दिया रिसता हो तो, क्या होगा बाती-स्नेह का।
सबल बाँह क्या कर लेगी यदि, नाव हुई बेकार रे॥
मत जा तू मझधार माँझी, मत जा तू मझधार रे॥
माँझी हो...माँझी हो...

अन्तर्मन की तली अगर हो, स्वस्थ हमारी नाम में।
तूफानों के बीच सफल हम, होंगे हरेक बहाव में॥
बँधे सभी सहयात्री होंगे, एक सहज सद्भाव में।
नौका हो टूटी तो कोई, उतरे कैसे पार रे॥
मत जा तू मझधार माँझी, मत जा तू मझधार रे॥
माँझी हो...माँझी हो...

फूला-फूला फिरे व्यर्थ ही, तू अपने गुण-गान में।
बाहर की इस चमक-दमक का, क्या होगा तूफान में॥
कर्मों का फल सदा मिला है, प्रभु के दण्ड विधान में।
सत्कर्मों की इसीलिये तू, यहाँ पकड़ पतवार रे॥
मत जा तू मझधार माँझी, मत जा तू मझधार रे॥
माँझी हो...माँझी हो...

## हो ईश्वर के अंश, आत्म-विश्वास जगाओ रे

हो ईश्वर के अंश, आत्म-विश्वास जगाओ रे।
होकर राजकुमार न तुम, कंगाल कहाओ रे॥

दीन-हीन बनकर क्यों अपना, साहस खोते हो।
क्यों अशक्ति - अज्ञान - अभावों, को ही रोते हो॥
जगा आत्म-विश्वास, दैन्य को दूर भगाओ रे।
होकर राजकुमार न तुम, कंगाल कहाओ रे॥

आत्म-बोध के बिना, सिंह-शावक सियार होता।
आत्म-बोध होने पर, वानर सिंधु पार होता
आत्म-शक्ति के धनी, न कायरता दिखलाओ रे।
होकर राजकुमार न तुम, कंगाल कहाओ रे॥

जिसके बल पर नैपोलियन, आल्पस से टकराया।
जिसके बल पर ही प्रताप से, अकबर घबराया॥
उसके बल पर अपनी बिगड़ी, बात बनाओ रे।
होकर राजकुमार न तुम, कंगाल कहाओ रे॥

सेनापति के बिना न सेना, लड़ने पाती है।
सेनापति का आत्म-समर्पण, हार कहाती है॥
गिरा आत्मबल जीती बाजी, हार न जाओ रे।
होकर राजकुमार न तुम, कंगाल कहाओ रे॥

आज मनुजता अनगिन साधन की, अधिकारी है।
बिना आत्म-विश्वास मनुजता, किन्तु भिखारी है॥
अरे! आत्म-बल की पारस मणि, तनिक छुआओ रे।
होकर राजकुमार न तुम, कंगाल कहाओ रे॥

अडिग आत्म-विश्वास मनुज का, रूप निखरेगा।
उसका सम्बल मनुज धरा पर, स्वर्ग उतारेगा॥
उसके बल पर जो भी चाहो, कर दिखलाओ रे।
होकर राजकुमार न तुम, कंगाल कहाओ रे॥

**हृदय से लगा लो या आँचल हटा लो**

हृदय से लगा लो या आँचल हटा लो।
मगर भक्ति माँ तेरी करते रहेंगे॥

पड़े हैं पगों में यही आस लेकर,
कभी तो दया दृष्टि होगी तुम्हारी।
कभी शीश पर हाथ तेरा फिरेगा,
तुम्हारी चरण धूलि के हम भिखारी॥
हमें चाहे तारो कभी न उबारो,
मगर मंत्र जप तेरा करते रहेंगे॥

नमो वेद माता नमो विश्वमाता,
भला कौन जग में तुम्हें जो न भाता।
परम भक्त वत्सल परम ज्योति जननी,
हृदय में हमारे वही भाव आता॥
कि होकर रहेंगे कभी तो तुम्हारे,
कभी तो तुम्हीं में माँ खोकर रहेंगे॥

गहन वेदना से दुखी सारी दुनियाँ,
जगत के अँधेरे मिटाने चले हैं।
तुम्हारी कृपा की किरण के सहारे,
अमिट ज्ञान दीपक जलाने चले हैं॥
अगर मिल गया माँ तुम्हारा सहारा,
तो सचमुच ये व्रत पूर्ण करके रहेंगे॥

हृदय से लगा लो या आँचल हटा लो।
मगर भक्ति माँ तेरी करते रहेंगे॥

**इन्सान मेरा देवता**

मैं चाहती अगणित स्वरों में, विश्व को यह दूँ बता।
इन्सान मेरा देवता, इन्सान मेरा देवता॥

रवि के प्रबल तम ताप ने, श्रम को पसीना कर दिया।
हर किरण ने हर बूँद ने, जीवन धरा पर भर दिया॥
वह मूर्ति पौरुष की बने, चिर अर्चिता॥
इन्सान मेरा देवता, इन्सान मेरा देवता॥

घनघोर तप की धार से, कुविचार का लोहा कटा।
सद्भाव की शुभ ज्योति से, युग का भयानक तम कटा॥
इस साधना से भाग्य युग का बदलता॥
इन्सान मेरा देवता, इन्सान मेरा देवता॥

पुरुषार्थ अब जुड़ने लगा, शुभ कर्म से प्रकार्य से।
भगवान अब क्यों दूर होगा, लोक और समाज से॥
देवत्व का ही नाम होगा, मनुजता॥
इन्सान मेरा देवता, इन्सान मेरा देवता॥

**इस अखिल ब्रह्माण्ड में, बिखरे पड़े हैं प्राण मेरे**

इस अखिल ब्रह्माण्ड में, बिखरे पड़े हैं प्राण मेरे।
इस अखिल ब्रह्माण्ड में, बिखरे पड़े हैं प्राण मेरे॥
इस अखिल ब्रह्माण्ड में॥

प्राण मेरे सूर्य मंडल में, प्रभा बन जगमगाते।
प्राण मेरे शून्य के शशि, तारकों में झिलमिलाते॥
प्राण की मदिरा पिये, दिन-रात पृथ्वी झूमती सी।
वायु बनकर प्राण मेरे, व्योम को सिर पर उठाते॥
है हुई उत्पन्न मुझसे, ही सकल हलचल जगत की।
विश्व की चैतन्यता है, प्राण की पहचान मेरे॥
इस अखिल ब्रह्माण्ड में, बिखरे पड़े हैं प्राण मेरे।
इस अखिल ब्रह्माण्ड में, बिखरे पड़े हैं प्राण मेरे॥
इस अखिल ब्रह्माण्ड में॥

प्राण मैं अपने सरित सर, सागरों में देखता हूँ।
प्राण मैं अपने विपिन गिरि, गह्वरों में देखता हूँ॥
योनियों में लाख चौरासी, बना बन्दी पड़ा मैं।
प्राण मैं निज व्योम जल-थल, चर नरों में देखता हूँ॥
सृष्टि के आरम्भ से ही, हर दिशा में हर तरफ से।
प्राण की झंकार आती, सुन रहे हैं कान मेरे॥
इस अखिल ब्रह्माण्ड में, बिखरे पड़े हैं प्राण मेरे।
इस अखिल ब्रह्माण्ड में, बिखरे पड़े हैं प्राण मेरे॥
इस अखिल ब्रह्माण्ड में॥

दीन-दुखियों की व्यथा है, वेदना मेरे हृदय की।
चिर वियोगिनि की कथा है, वेदना मेरे हृदय की॥
है सबल का विश्व साथी, किन्तु दुर्बल का न कोई।
मानवों की यह प्रथा है, वेदना मेरे हृदय की॥
हँस कभी पाया न सुख से, मैं अमर सहचर दुःखों का।
सिसकियाँ भरते इसी से, अश्रु सिंचित गान मेरे॥
इस अखिल ब्रह्माण्ड में, बिखरे पड़े हैं प्राण मेरे।
इस अखिल ब्रह्माण्ड में, बिखरे पड़े हैं प्राण मेरे॥
इस अखिल ब्रह्माण्ड में॥

सभ्यताएँ लुट चुकी हैं, उच्च उन्नति के शिखर पर।
जातियाँ सोई अनेकों, जागरण के गीत गाकर॥
आज के नृप-राज सम्भव, हैं बने कल के भिखारी।
पी सका अमरत्व का विष, कौन किस्मत का सिकन्दर॥
हैं सृजन-विध्वंस मेरे, भाग्य की लिपि में लिखे से।
खूब देखे हैं समय ने, सब पतन-उत्थान मेरे॥
इस अखिल ब्रह्माण्ड में, बिखरे पड़े हैं प्राण मेरे।
इस अखिल ब्रह्माण्ड में, बिखरे पड़े हैं प्राण मेरे॥
इस अखिल ब्रह्माण्ड में॥

**जब-जब सौ-सौ बाँह पसारे, खड़ा तिमिर हो बीच डगर में**

जब-जब सौ-सौ बाँह पसारे, खड़ा तिमिर हो बीच डगर में।
तुम दीपक से जलते जाओ। तुम दीपक से जलते जाओ॥

उठते तूफानों को आखिर, इक दिन मिट जाना ही होगा।
बढ़े प्रलय तो उसे सहमकर, आखिर रुक जाना ही होगा॥
मंजिल दूर भले हो लेकिन, उर में दृढ़ विश्वास यही है।
दुःखी जगत के इस आँगन में, सुख को फिर आना ही होगा॥
पग-पग से तुम डगर नापते, अंगारों पर चलते जाओ॥
तुम दीपक से जलते जाओ। तुम दीपक से जलते जाओ॥

ज्योति तुम्हारी बिखरे जो, भूतल से अम्बर तक छा जाये।
और सिसकती मानवता फिर, हँसकर मंगल मोद मनाये॥
पाने को यह लक्ष्य तुम्हें नित, तिल-तिल करके जलना होगा।
हो सकता है क्रूर काल यह, तुमको ठोकर देता जाये॥
तुम गिरकर भी फिर उठ-उठकर, सतत लक्ष्य तक बढ़ते जाओ॥
तुम दीपक से जलते जाओ। तुम दीपक से जलते जाओ॥

जग में जीते वही परिस्थितियों से, जो टकराया करते हैं।
चट्टानों को तोड़ स्वयं ही, अपना मार्ग बनाया करते॥
उन फूलों की ही सुगन्ध तो, छायी है सारे उपवन में।
जो काँटों से बिंधते लेकिन, म्लान न हो मुस्काया करते॥
सौरभ बिखराना चाहो तो, काँटों में भी पलते जाओ॥
तुम दीपक से जलते जाओ। तुम दीपक से जलते जाओ॥

जब-जब सौ-सौ बाँह पसारे, खड़ा तिमिर हो बीच डगर में।
तुम दीपक से जलते जाओ। तुम दीपक से जलते जाओ॥

**जब स्वयं को विकल तुम अनुभव करोगे**

जब स्वयं को विकल तुम अनुभव करोगे।
तब हमारा स्नेह देता साथ होगा॥
आर्त स्वर में जब कभी कुछ भी कहोगे।
घाव पर मरहम लगाता हाथ होगा॥

कष्ट या कठिनाइयों से तुम न डरना।
भंवर से मझधार से संघर्ष करना॥
जीत होगी जिन्दगी की हर डगर में।
लोक जीवन में नया उत्साह भरना॥
पुत्र तुमको जब अकेलापन खलेगा।
माँ- पिता का कवच भी तब साथ होगा॥

जब स्वयं को विकल तुम ... मरहम लगाता हाथ होगा॥

हम तुम्हारी श्वाँस में ऊर्जा भरेंगे।
खून की हर बूँद तक नव प्राण देंगे॥
यह मधुर सम्बन्ध जन्मों तक निभेगा।
सूक्ष्म में रहकर तुम्हें वरदान देंगे॥
जब कभी हारे-थके अनुभव करोगे।
पीठ को थपकी लगाता हाथ होगा॥

जब स्वयं को विकल तुम ... मरहम लगाता हाथ होगा॥

आस है तुम हर दुखी को प्यार दोगे।
आँसुओं को तुम नई मुस्कान दोगे॥
जो भटकते हैं यहाँ जीवन समर में।
दीप बनकर ज्योति का अनुदान दोगे॥
कार्य जब उत्साह से पूरा करोगे।
प्यार आशीर्वाद देता हाथ होगा॥

जब स्वयं को विकल तुम ... मरहम लगाता हाथ होगा॥

पुत्र तुम मजबूत कन्धे हो हमारे।
अंग-अवयव हो तुम्हीं हो नयन प्यारे॥
भार तुम पर आज गुरुतर सौंपते हैं।
पूर्णतः निश्चिंत तुम सबके सहारे॥
शक्ति की तुमको कमी अनुभव न होगी।
ब्रह्मबल निश्चय तुम्हारे साथ होगा॥

जब स्वयं को विकल तुम ... मरहम लगाता हाथ होगा॥

साधकों श्रम बिन्दु जब भूपर गिरेंगे।
तब धरा पर प्यार के उपवन खिलेंगे॥
उस सुवासित शान्ति के वातावरण में।
इस जगत को स्वर्ग जैसा सुख मिलेगा।
जब तुम्हारी ज्योति डग-मग सी दिखेगी।
दिव्य आँचल का सहारा साथ होगा॥

जब स्वयं को विकल तुम ... मरहम लगाता हाथ होगा॥

एक थे पहले! पुनः अब एक होंगे।
द्वैत के बन्धन पुनः हम तोड़ देंगे॥
देह से हो दूर तुम आहें न भरना।
हम तुम्हारी चाह को पूरा करेंगे॥
चर्म के इन चक्षुओं को जब ढकोगे।
प्रखर सविता रूप का आभास होगा॥

जब स्वयं को विकल तुम ... मरहम लगाता हाथ होगा॥

**जब तक है विश्वास लगन, दृढ़-क्षमता की पतवार**

जब तक है विश्वास लगन, दृढ़-क्षमता की पतवार।
माँझी भय क्या तुझे? भले ही, आँधी या मझधार॥

आज उदिध सीमा-बन्धन से, मुक्त हो रहा ले अँगड़ाई।
लहरों के विद्रोही उर में, जाग उठी सोई तरुणाई॥
जाने क्यों? विक्षुब्ध हृदय में, आया उसके ज्वार।
झूम-झूम कर खेते जाना, मत होना लाचार॥
जब तक है विश्वास लगन, दृढ़-क्षमता की पतवार।
माँझी भय क्या तुझे? भले ही, आँधी या मझधार॥

खेल खेलने ही आता है, साहस से तूफान बिचारा।
जहाँ चाह है वहाँ राह है, निकट इसी से सदा किनारा॥
मंजिल स्वयं चली आयेगी, थककर तेरे द्वार।
झुका न देना भाल कहीं तू, इस जीवन में हार॥
जब तक है विश्वास लगन, दृढ़-क्षमता की पतवार।
माँझी भय क्या तुझे? भले ही, आँधी या मझधार॥

थक जायेगी डगर एक दिन, गति में यदि आये न शिथिलता।
मिल जायेगी शान्ति सुनिश्चित, अधरों पर आये न विकलता॥
शूलों की नोकों पर खिलते, सुन्दर सुमन अपार।
भूल न जाना पंथ घिरा हो, चहुँ दिशि में अँधियार॥
जब तक है विश्वास लगन, दृढ़-क्षमता की पतवार।
माँझी भय क्या तुझे? भले ही, आँधी या मझधार॥

**जल रहे दीपक हजारों**

जल रहे दीपक हजारों, दीप मेरा भी जले।
जल रहे दीपक हजारों, दीप मेरा भी जले॥

मृत्तिका ही देह जिसमें, वृत्तिका है प्राण की।
आयु का है स्नेह थोड़ा, लौ उठी मुस्कान की॥
रात लम्बी, स्नेह तिल-तिल घट रहा।
चन्द साँसों का, खजाना लुट रहा॥
गुनगुना लूँ गीत ऐसे, प्यार के दो क्षण जरा।
दूर तक फैली अमासव, की शिला का तन गले॥
जल रहे दीपक हजारों, दीप मेरा भी जले।
जल रहे दीपक हजारों, दीप मेरा भी जले॥

लोरियाँ सुनता चलूँ, तूफान की मँझधार की।
रोशनी बनता चलूँ मैं, हर गली हर द्वार की॥
हर नयन में ज्योति हो विश्वास की।
हर चरण में गति भरें उल्लास की॥
जिन्दगी के स्वप्न पाये, जागरण की नव-किरण।
डूबती हर नाव को, पतवार का सम्बल मिले॥
जल रहे दीपक हजारों, दीप मेरा भी जले।
जल रहे दीपक हजारों, दीप मेरा भी जले॥

टूट जाये स्वार्थ गढ़, संकल्प शर-सन्धान से।
जोड़ दे लौ प्रेम की, इन्सान को इन्सान से॥
हर दिशा से एक ही आवाज सुनने को मिले।
हों सभी के मन प्रफुल्लित और सबके दिल खिले॥
ज्योति की इस पुण्य-धारा, में लगाकर डुबकियाँ।
हर मनुज का मन सुमन सा, गन्ध बिखराता चले॥
जल रहे दीपक हजारों, दीप मेरा भी जले।
जल रहे दीपक हजारों, दीप मेरा भी जले॥

**जीवन का अनुदान बिन्दु ने, महासिन्धु से पाया**

जीवन का अनुदान बिन्दु ने, महासिन्धु से पाया।
महाप्राण से आज मिलन को, स्वयं प्राण अकुलाया॥

जैसा जल से बाहर होती, है मछली की तड़पन।
मातृगोद से बिछुड़े नवशिशु, का देखा है क्रन्दन॥
विकल विरहिणी की आँखें ज्यों, छलकाती है पीड़ा।
होकर व्याकुल जिसे ढूँढ़ती, मीरा की मन वीणा॥
व्याकुल मन हो इसी वेदना, का अमृत चख पाया॥
जीवन का अनुदान बिन्दु ने, महासिन्धु से पाया।
महाप्राण से आज मिलन को, स्वयं प्राण अकुलाया॥

नाते-रिश्ते सारे जग के, व्यर्थ अरे तब लगते।
आँखों से आँसू अन्तर से, अमृत बिंदु बरसते॥
बिछुड़ गये जबसे भवसागर, में हम गोता खाते।
बहुत हो चुका देव नहीं अब, दर्द सहे हैं जाते॥
करुणाकर! करुणा कर अब तो, मेरा मन घबराया॥
जीवन का अनुदान बिन्दु ने, महासिन्धु से पाया।
महाप्राण से आज मिलन को, स्वयं प्राण अकुलाया॥

एक निमिष ले गोदी में तुम, दिखे हमें दुलराते।
लुप्त हुए क्यों अगले ही क्षण, विरह-व्यथा भर जाते॥
मिली तुम्हारी झाँकी पागल, हो यह मन खिल उठता।
किन्तु दूसरे पल माया का, पर्दा फिर हिल उठता॥
मेरे प्रभु! क्यों तूने मन को, इतना अधिक दुःखाया॥
जीवन का अनुदान बिन्दु ने, महासिन्धु से पाया।
महाप्राण से आज मिलन को, स्वयं प्राण अकुलाया॥

मेरा जीवन बना पतंगा, तुमको आज समर्पित।
सुख की पुलकन दुःख का क्रन्दन, सब तेरे ही अर्पित॥
स्वर्ग-मुक्ति या नर्क पुनर्भव, रही न चिन्ता बाकी।
एक कामना बस पा लूँ प्रभु, तेरी प्यारी झाँकी॥
तेरे चरण कमल पर मैंने, जीवन अर्घ्य चढ़ाया॥
जीवन का अनुदान बिन्दु ने, महासिन्धु से पाया।
महाप्राण से आज मिलन को, स्वयं प्राण अकुलाया॥

## जीवन के आधार तुम्हीं हो

जीवन के आधार तुम्हीं हो, कण-कण में मुसकाते।
विश्व-भुवन में मधुर-मनोरम, अनहद नाद सुनाते॥

तेरी ही छवि छिपी हुई है, सारे नील गगन में।
तुम्हीं प्रकाशित अखिल सृष्टि के, जड़-चेतन कण-कण में॥
विहस तुम्हीं खिल-खिला रहे हो, सौरभ भरे सुमन में।
मलयज से तुम बसे हुए हो, शीतल मंद पवन में॥
विश्व-रूप बन हर प्राणी में, दिखते तुम्हीं समाते॥
जीवन के आधार तुम्हीं हो, कण-कण में मुसकाते।
जीवन के आधार तुम्हीं हो, कण-कण में मुसकाते॥

तप पुँज तुमसे ही तापित, होता है यह दिनकर।
मधुर चाँदनी की शीतलता, पा जाता है शशिधर॥
ग्रह, नक्षत्र, ब्रह्माण्ड सभी, इंगित से चला रहे हो।
ज्योति पुँज! इन प्राण-ज्योति के, दीपक जला रहे हो॥
महाप्राण ये प्राण तुम्हीं से, गति चेतनता पाते॥
जीवन के आधार तुम्हीं हो, कण-कण में मुसकाते।
जीवन के आधार तुम्हीं हो, कण-कण में मुसकाते॥

हे प्रभु! अपना सारा जीवन, कर दूँ तुम्हें समर्पित।
सुख की सिहरन दुःख की तड़पन, हर्ष-शोक सब अर्पित॥
शुभ चरणों में लगा रहे अब, हर क्षण ध्यान हमारा।
भ्रमित न कर पाये हमको ये, गहन निशा अँधियारा॥
दिव्य प्रेरणा और शक्ति दे, रहना हमें चलाते॥
जीवन के आधार तुम्हीं हो, कण-कण में मुसकाते।
जीवन के आधार तुम्हीं हो, कण-कण में मुसकाते॥

जीवन के आधार तुम्हीं हो, कण-कण में मुसकाते।
विश्व-भुवन में मधुर-मनोरम, अनहद नाद सुनाते॥

**जीवन बन तू फूल समान**

जीवन बन तू फूल समान, पर उपकार सुरभि से सुरभित।
सन्तत हो सुख दान, जीवन बन तू फूल समान॥

स्वच्छ हो खिल जा प्यारे, तू भी परम प्रेम को धारे।
सुखदाई हो सबका जग में, पा सबसे सम्मान॥
जीवन बन तू फूल समान॥

कठिन कण्टकों के घेरे में, दारुण दुखदाई फेरे में।
पड़कर विचलित कहीं न होना, बनना नहीं अंजान॥
जीवन बन तू फूल समान॥

शत्रु मित्र दोनों का हित हो, पावन यह तेरा शुभ व्रत हो।
मधु दाता बन सबका प्यारा, तजकर भेद-विधान॥
जीवन बन तू फूल समान॥

दे तू सुरभि टूटने पर भी, पैरों तले कुचलने पर भी।
इस विधि से प्रभु की माला में, पा ले प्रिय स्थान॥
जीवन बन तू फूल समान॥

जीवन बन तू फूल समान, पर उपकार सुरभि से सुरभित।
सन्तत हो सुख दान, जीवन बन तू फूल समान॥

**जीवन्त है जगत में, कण-कण तुम्हीं से भगवन्**

जीवन्त है जगत में, कण-कण तुम्हीं से भगवन्।
हैं विद्यमान जड़ और चेतन तुम्हीं से भगवन्॥

आकाश में तुम्हीं से, संव्याप्त नीलिमा की।
तुम ताप सूर्य के हो, तुम शीत चन्द्रमा की॥
फूलों में पल्लवों में, पुलकन तुम्हीं से भगवन्॥
जीवन्त है जगत में, कण-कण तुम्हीं से भगवन्।

स्फूर्ति भोर की चिर, आकांक्षा तुम्हीं हो।
दिग्भ्रांत हर पथिक की, प्रेरक दिशा तुम्हीं हो॥
हैं प्राणतत्त्व तुमसे, जीवन तुम्हीं से भगवन्॥
जीवन्त है जगत में, कण-कण तुम्हीं से भगवन्।

अनुदान से प्रफुल्लित, होते कृतज्ञ प्राणी।
आभास पर तुम्हारा, पाते न अज्ञ प्राणी॥
निर्मित प्रकृति तुम्हीं से, हर क्षण तुम्हीं से भगवन्॥
जीवन्त है जगत में, कण-कण तुम्हीं से भगवन्।
हैं विद्यमान जड़ और चेतन तुम्हीं से भगवन्॥

**झनझना दे चेतना के, जड़ विनिर्मित तार को**

झनझना दे चेतना के, जड़ विनिर्मित तार को।
माँ जगा दे आज तो, सोए हृदय के प्यार को॥
झनझना दे चेतना के, जड़ विनिर्मित तार को॥

राग-रंजित प्राण हों अब, रंग कुछ ऐसा चढ़ा।
नेत्र अन्तर के खुलें अब, पाठ कुछ ऐसा पढ़ा॥
देख पाएँ रूप तेरा, पा सकें तव द्वार को॥
माँ जगा दे आज तो, सोए हृदय के प्यार को।
झनझना दे चेतना के, जड़ विनिर्मित तार को॥

ज्ञान आभा बुद्धि में भर, हृदय में शुचि भावना।
कर्म पथ पर पग बढ़ें, कर्तव्य की हो साधना॥
हम समझ लें आज से, प्रतिबिम्ब तव संसार को॥
माँ जगा दे आज तो, सोए हृदय के प्यार को।
झनझना दे चेतना के, जड़ विनिर्मित तार को॥

पीड़ितों को बाँटकर, ममता हृदय की हम खिलें।
प्यार का सागर भरे, उर में सभी से हम मिलें॥
खोल दे माँ आत्मा की, रुद्ध सी इस धार को॥
माँ जगा दे आज तो, सोए हृदय के प्यार को।
झनझना दे चेतना के, जड़ विनिर्मित तार को॥

है नहीं कुछ पास, पूजा थाल हम किससे भरें
झर चुके सद्‌गुण सुमन, अर्पित तुझे अब क्या करें॥
आज तो स्वीकार ले, आँसू भरी मनुहार को॥
माँ जगा दे आज तो, सोए हृदय के प्यार को।
झनझना दे चेतना के, जड़ विनिर्मित तार को॥

माँ जगा दे आज तो, सोए हृदय के प्यार को।
झनझना दे चेतना के, जड़ विनिर्मित तार को॥
माँ जगा दे आज तो, सोए हृदय के प्यार को।
झनझना दे चेतना के, जड़ विनिर्मित तार को॥

**झीनी-झीनी बीनी चदरिया**

ज्यों की त्यों धर दीनी चदरिया, झीनी-झीनी बीनी चदरिया।
दास कबीर जतन से ओढ़ी, ज्यों की त्यों धर दीनी चदरिया॥
ज्यों की त्यों धर दीनी चदरिया, ज्यों की त्यों धर दीनी चदरिया॥

दास कबीर जतन से ओढ़ी, ज्यों की त्यों धर दीनी चदरिया।
झीनी-झीनी बीनी चदरिया, ज्यों की त्यों रख दीनी चदरिया॥

दास कबीर जतन से ओढ़ी, ज्यों की त्यों धर दीनी चदरिया।
झीनी-झीनी बीनी चदरिया, ज्यों की त्यों धर दीनी चदरिया॥

दास कबीर जतन से ओढ़ी, ज्यों की त्यों रख दीनी चदरिया।
झीनी-झीनी बीनी चदरिया, ज्यों की त्यों रख दीनी चदरिया॥

**जो हिमालय सा उठे जीवन, धरा पर नर वही है**

आपदा के अग्नि-पथ पर, जो कभी रुकना न जाने।
दैन्य के अभिशाप में भी, जो कभी झुकना न जाने॥
प्रलय झंझावात में भी, भँवर में फँसना न जाने
गीतमय जीवन बना ले, गीत को ही धर्म माने॥
गा सके संघर्ष में हँसकर, सदा जो स्वर वही है॥
जो हिमालय सा उठे जीवन, धरा पर नर वही है।

मेघ सा झर-झर बरस जो, नेह से जग सिक्त कर दे।
फूल सा खिल सुरभि बिखरा, जो स्वयं को रिक्त कर दे॥
देवता पत्थर नहीं है, मनुज में ही देवता है।
आँसुओं के अर्घ्य से जो, मनुज को अभिषिक्त कर दे॥
चीर कर चट्टान जो आगे बढ़े, निर्झर वही है॥
जो हिमालय सा उठे जीवन, धरा पर नर वही है।

जो सदा श्रम सीकरों से, मोतियों को तोलता हो।
स्वयं हँसकर पी हलाहल, निज सुधा-रस घोलता हो॥
तप्त सूरज की किरण से, जागरण की ज्योति लेकर।
मौन करुणा के स्वरों में, मनुजता से बोलता हो॥
युग-युगों की मरु पिपासा सोख ले, सागर वही है॥
जो हिमालय सा उठे जीवन, धरा पर नर वही है।

तारकों की झिलमिली से, सुख कभी मिलता नहीं है।
बिना रवि का ताप झेले, सुमन मन खिलता नहीं है॥
तारकों की छाँह तज जो, धूप में आँखें पसारे।
कर्म के गाण्डीव से जो, स्वर्ग को भू पर उतारे॥
वज्र सा टूटे सदा निज लक्ष्य पर जो, शर वही है॥
जो हिमालय सा उठे जीवन, धरा पर नर वही है।

**ज्योतियाँ जिससे जलें अनेक, जलाओ ऐसा दीपक एक**

ज्योतियाँ जिससे जलें अनेक, जलाओ ऐसा दीपक एक।
ज्योतियाँ जिससे जलें अनेक, जलाओ ऐसा दीपक एक॥

बुझे जो तूफानों में नहीं, जले अविराम, तिमिर कर दूर।
धरा पर लाये पुण्य प्रकाश, स्नेह तुम दो इतना भरपूर॥
पंथ ज्योतित हो उठें अनेक, जलाओ ऐसा दीपक एक॥
ज्योतियाँ जिससे जलें अनेक, जलाओ ऐसा दीपक एक।
ज्योतियाँ जिससे जलें अनेक, जलाओ ऐसा दीपक एक॥

प्रलय की झंझा में बुझ गये, न जाने कितने दीपक अजान।
जला दो गाकर दीपक राग, बावरे बैजू की बन तान॥
प्रेरणा भर दो ऐसी एक, स्वतः जागृत हों उठें अनेक॥
ज्योतियाँ जिससे जलें अनेक, जलाओ ऐसा दीपक एक।
ज्योतियाँ जिससे जलें अनेक, जलाओ ऐसा दीपक एक॥

सृजन हो नया, सृष्टि हो नई, लगन हो नई, नया विश्वास।
हृदय में ले अदम्य उत्साह, रचें फिर से नूतन इतिहास॥
पीर यदि भर दो ऐसी एक, कंठ से निकलें गीत अनेक॥
ज्योतियाँ जिससे जलें अनेक, जलाओ ऐसा दीपक एक।
ज्योतियाँ जिससे जलें अनेक, जलाओ ऐसा दीपक एक॥

**कैसे दें हम तुम्हें विदाई**

जैसे कोई धेनु लवाई, शिशु की पीड़ा सही न जाई।
ऐसी विषम वेदना छाई, कैसे दें हम तुम्हें विदाई॥

तुमने कोटि पुण्य फल पाये, चलकर बहुत दूर से आये।
चेहरे थके हुए मुरझाये, फिर भी है उल्लास समाये॥
गुरुसत्ता ने टेर लगाई, तुमने मिलकर शपथ उठाई।
पथ में आयेगी कठिनाई, कैसे दे हम तुम्हें विदाई॥
जैसे कोई धेनु लवाई, शिशु की पीड़ा सही न जाई।
ऐसी विषम वेदना छाई, कैसे दें हम तुम्हें विदाई॥

जग में पीड़ा बढ़ती जाती, आँखें हैं भर-भर कर आती।
दुनिया नहीं समझ कुछ पाती, शक्ति कहाँ से मन में आती॥
हमने सारी शक्ति लगाई, ऐसी ज्योति अखण्ड जलाई।
हाथ में तुम्हें मशाल थमाई, कैसे दें हम तुम्हें विदाई॥
जैसे कोई धेनु लवाई, शिशु की पीड़ा सही न जाई।
ऐसी विषम वेदना छाई, कैसे दें हम तुम्हें विदाई॥

कल का दिन ऐसा आयेगा, सूना आँगन हो जायेगा।
मन रोयेगा पछतायेगा, अन्धकार सा छा जायेगा॥
हमको देने लगी दिखाई, अपनी पीड़ा की परछाई।
हैं दोनों आँखें भर आई, कैसे दें हम तुम्हें विदाई॥
जैसे कोई धेनु लवाई, शिशु की पीड़ा सही न जाई।
ऐसी विषम वेदना छाई, कैसे दें हम तुम्हें विदाई॥

साथ में हैं गुरुदेव तुम्हारे, अपनी हिम्मत कभी न हारें।
पग भी पीछे कभी न डारें, फिर से यह संसार सुधारें॥
देव संस्कृति है अकुलाई, जाये शपथ न कभी भुलाई।
है यह शुभकामना सुहाई, कैसे दें हम तुम्हें विदाई॥
जैसे कोई धेनु लवाई, शिशु की पीड़ा सही न जाई।
ऐसी विषम वेदना छाई, कैसे दें हम तुम्हें विदाई॥

**कण-कण में मुस्काता है, मेरा प्यारा भगवान**

कण-कण में मुस्काता है, मेरा प्यारा भगवान।
साँस-साँस में होता उसकी, चेतनता का भान॥

मानव का अस्तित्व विलक्षण, उसने गढ़ा महान।
पाँचों तत्त्व बने हैं पावन, चेतन की पहचान॥
मानव को ही दिया स्वयं को, पा जाने का ज्ञान॥
कण-कण में मुस्काता है, मेरा प्यारा भगवान।
कण-कण में मुस्काता है, मेरा प्यारा भगवान॥

हर चेहरे के भोलेपन में, उसका ही प्रतिबिम्ब।
करुणा जागे फिर न उसे, पाने में तनिक विलम्ब॥
जो भी है चर-अचर सभी में, मेरे प्रभु का प्राण॥
कण-कण में मुस्काता है, मेरा प्यारा भगवान।
कण-कण में मुस्काता है, मेरा प्यारा भगवान॥

हृदय गुहा में वही बसा है, बिल्कुल अपने पास।
जनहित के प्रत्येक कृत्य में, उसकी मधुर सुवास॥
झाँक रहा आँखों से बनकर, प्रेममयी पहचान॥
कण-कण में मुस्काता है, मेरा प्यारा भगवान।
कण-कण में मुस्काता है, मेरा प्यारा भगवान॥

छोटे-बड़े सभी घटकों में, उसका ही है अंश।
आदि समय से वर्तमान तक, चलता उसका वंश॥
रात्रि रूप विश्राम वही, कर्मठता रूप विहान॥
कण-कण में मुस्काता है, मेरा प्यारा भगवान।
कण-कण में मुस्काता है, मेरा प्यारा भगवान॥

सद्विचार कल्याण भावना, बनकर रहता पास।
उर का प्यार न बाँट सके तो, होता हृदय उदास॥
इस निःस्वार्थ प्यार से ही, जागते भक्ति और ज्ञान॥
कण-कण में मुस्काता है, मेरा प्यारा भगवान।
कण-कण में मुस्काता है, मेरा प्यारा भगवान॥

अधिक निकट से उसे देखने, की उमड़े जब चाह।
तब गह लेना दीन-दुःखी, पीड़ित के, घर की राह॥
संवेदन की गंगा बन फूटता, वही कविमान॥
कण-कण में मुस्काता है, मेरा प्यारा भगवान।
कण-कण में मुस्काता है, मेरा प्यारा भगवान॥

कण-कण में मुस्काता है, मेरा प्यारा भगवान।
साँस-साँस में होता उसकी, चेतनता का भान॥

**कण-कण में समाए तुम, तुम्हें हमने पहचाना है**

कण-कण में समाए तुम, तुम्हें हमने पहचाना है।
मिलने को प्रभु! तुमसे, हुआ यह मन दीवाना है॥

कर्तव्यों के व्यस्त पथों पर, भूले थे हम याद।
आ न सका था मुख पर मन के, भावों का अनुवाद॥
जाना है वहीं जिसकी, शरण में ठौर ठिकाना है॥
मिलने को प्रभु! तुमसे, हुआ यह मन दीवाना है।
कण-कण में समाए तुम, तुम्हें हमने पहचाना है॥

पूर्ण करेंगे सीख रहे जो, शेष तुम्हारे काम।
हर प्यासे मन को भर देंगे, ममता से अविराम॥
व्याकुल मानवता का, हमें दुःख दर्द मिटाना है॥
मिलने को प्रभु! तुमसे, हुआ यह मन दीवाना है।
कण-कण में समाए तुम, तुम्हें हमने पहचाना है॥

कारण है साकार तुम्हारा, नवयुग का अनुमान।
कोष तुम्हारे से देने हैं, इस जग को अनुदान॥
हर बंजर धरती पर, सजल सावन बरसाना है॥
मिलने को प्रभु! तुमसे, हुआ यह मन दीवाना है।
कण-कण में समाए तुम, तुम्हें हमने पहचाना है॥

पहले पीछे छुटे हुओं का, करना है आह्वान।
हमें अभी सजवाना जो भी, बिखरा है सामान॥
दायित्व निभाना है, सफर पर तब ही जाना है॥
मिलने को प्रभु! तुमसे, हुआ यह मन दीवाना है।
कण-कण में समाए तुम, तुम्हें हमने पहचाना है॥

**कौन है किसका यहाँ पर, हैं सभी आते अकेले**

कौन है किसका यहाँ पर, हैं सभी आते अकेले।
कौन किसका साथ देता, हैं सभी जाते अकेले॥

मोह के बन्धन न पड़ तू, कौन अपना या पराया।
कर भला फिर भूल जग को, छोड़ दे सब मोह माया॥
कौन किसका साथ देता, हैं सभी जाते अकेले॥
कौन है किसका यहाँ पर, .....

जग तुझे समझे या न समझे, कर नहीं परवाह इसकी।
चार दिन की वाह-वाही, कर नहीं तू चाह इसकी॥
कौन किसका साथ देता, हैं सभी जाते अकेले॥
कौन है किसका यहाँ पर, .....

मस्त रह, बस मस्त रह, अपनी फकीरी शान में तू।
यश-अपयश निन्दा-प्रशंसा, रख नहीं कुछ ध्यान में तू॥
कौन किसका साथ देता, हैं सभी जाते अकेले॥
कौन है किसका यहाँ पर, .....

सत्य प्रभु का ध्यान रख बस, छोड़ दे सारी निराशा।
क्या अकेला क्या दुकेला, साथ है जब अमर आशा॥
कौन किसका साथ देता, हैं सभी जाते अकेले॥
कौन है किसका यहाँ पर, .....

दस कदम के साथियों का, योग और वियोग क्या रे।
भक्त तू भगवान का, तब व्यर्थ चिन्ता रोग क्या रे॥
कौन किसका साथ देता, हैं सभी जाते अकेले॥
कौन है किसका यहाँ पर, .....

देख तू सत्येश मन्दिर, विश्व का कल्याण जिसमें।
विश्व की सेवा जहाँ है, और तेरा प्राण जिसमें॥
कौन किसका साथ देता, हैं सभी जाते अकेले॥
कौन है किसका यहाँ पर, .....

उस तरफ ही बढ़ वही है, प्राण का आधार तेरा।
तू अकेला है यहाँ पर, है वहाँ संसार तेरा॥
कौन किसका साथ देता, हैं सभी जाते अकेले॥
कौन है किसका यहाँ पर, .....

**किसी के काम जो आये, उसे इन्सान कहते हैं**

किसी के काम जो आये, उसे इन्सान कहते हैं।
पराया दर्द अपनाये, उसे इन्सान कहते हैं॥

कभी धनवान है कितना, कभी इन्सान निर्धन है।
कभी सुख है, कभी दुःख है, इसी का नाम जीवन है॥
जो मुश्किल में न घबराये, उसे इन्सान कहते हैं॥
किसी के काम जो आये, उसे इन्सान कहते हैं।
पराया दर्द अपनाये, उसे इन्सान कहते हैं॥

यह दुनियाँ एक उलझन है, कहीं धोखा कहीं ठोकर।
कोई हँस-हँस के जीता है, कोई जीता है रो-रोकर॥
जो गिरकर फिर सँभल जाये, उसे इन्सान कहते हैं॥
किसी के काम जो आये, उसे इन्सान कहते हैं।
पराया दर्द अपनाये, उसे इन्सान कहते हैं॥

अगर गलती रुलाती है, तो राहें भी दिखाती है।
मनुज गलती का पुतला है, यह अक्सर हो ही जाती है॥
जो कर ले ठीक गलती को, उसे इन्सान कहते हैं॥
किसी के काम जो आये, उसे इन्सान कहते हैं।
पराया दर्द अपनाये, उसे इन्सान कहते हैं॥

यों भरने को तो दुनियाँ में, पशु भी पेट भरते हैं।
लिये इन्सान का दिल जो, वो नर परमार्थ करते हैं॥
पथिक जो बाँट कर खाये, उसे इन्सान कहते हैं॥
किसी के काम जो आये, उसे इन्सान कहते हैं।
पराया दर्द अपनाये, उसे इन्सान कहते हैं॥

**किये मंत्र जप माला फेरी, पूजन आठों याम का**

किये मंत्र जप माला फेरी, पूजन आठों याम का।
रहे भाव संकीर्ण अगर तो, यह पूजन किस काम का॥

हर पूनो हर पर्व नहाये, गंगाजी के नीर में।
पर मन डूब न पाया बिल्कुल, किसी दुखी की पीर में॥
करते रहे सफर हम निष्ठुर, मन से चारों धाम का॥
रहे भाव संकीर्ण अगर तो, यह पूजन किस काम का।
किये मंत्र जप माला फेरी, पूजन आठों याम का॥

ईश्वर ने जो दिया लगाया, केवल अपने वास्ते।
स्वार्थ-पूर्ति हो जिनसे हमने, चुने वही सब रास्ते॥
किया यत्न हर पल-छिन हमने, अपने सुख-आराम का॥
रहे भाव संकीर्ण अगर तो, यह पूजन किस काम का।
किये मंत्र जप माला फेरी, पूजन आठों याम का॥

प्रगति देखकर औरों की हम, भरे द्वेष में लोभ में।
पूर्ण न हो पायी इच्छा तो, भरे तीव्र विक्षोभ में॥
ध्यान रहा हर समय हमें तो, अपने ही धन-धाम का॥
रहे भाव संकीर्ण अगर तो, यह पूजन किस काम का।
किये मंत्र जप माला फेरी, पूजन आठों याम का॥

व्यर्थ ऐंठना अहंकार में भरकर झूठी शान से।
किन्तु माँगते रहना खुद के लिये सदा भगवान से॥
द्वार-द्वार दौड़ना व्यर्थ में यहाँ सुबह औ शाम का॥
रहे भाव संकीर्ण अगर तो, यह पूजन किस काम का।
किये मंत्र जप माला फेरी, पूजन आठों याम का॥

जितना गड्ढा किया कि उतनी, मिट्टी डालो खेत में।
प्रायश्चित का सूत्र दिया यह, गुरुवर ने संकेत में॥
ध्यान न रह पाया यदि हमको, पापों के परिणाम का॥
रहे भाव संकीर्ण अगर तो, यह पूजन किस काम का।
किये मंत्र जप माला फेरी, पूजन आठों याम का॥

रहे भाव संकीर्ण अगर तो, यह पूजन किस काम का।
किये मंत्र जप माला फेरी, पूजन आठों याम का॥

**कोठरी मन की सदा रख साफ बन्दे, कौन जाने कब स्वयं प्रभु आन बैठे**

कोठरी मन की सदा रख साफ बन्दे, कौन जाने कब स्वयं प्रभु आन बैठे?
तुम बुलाते हो उसे यदि भावना से, कौन जाने कब निमन्त्रण मान बैठे?

दर्द यदि उभरे कभी मन में तुम्हारे, खर्च मत करना बिना सोचे विचारे।
दर्द से रिश्ता सदा प्रभु का रहा है, नाम करुणा सिन्धु ही उसका रहा है॥
एक भी आँसू न कर बरबाद बन्दे, कौन जाने कब समन्दर माँग बैठे?
कोठरी मन की सदा रख साफ बन्दे, कौन जाने कब स्वयं प्रभु आन बैठे?
कोठरी मन की सदा रख साफ बन्दे, .....

चाह हो तो राह बन जाती गगन में, चाह से उत्साह भरता मन बदन में।
चाह पूरी हो यही सब माँगते हैं, किन्तु उसका मर्म कब पहचानते हैं?
स्वर्ग भूतल पर गढ़े कैसे विधाता, नर्क में ही सुख मनुज यदि मान बैठे।
कोठरी मन की सदा रख साफ बन्दे, कौन जाने कब स्वयं प्रभु आन बैठे?
कोठरी मन की सदा रख साफ बन्दे, .....

रोज मानव कर रहा दुःख की शिकायत, दुष्टता की कर रहा फिर क्यों हिमायत?
दुःख हरेंगे प्रभु स्वयं अवतार लेकर, मानवी पुरुषार्थ को पर साथ लेकर॥
सूर्य उगकर भी भला क्या हित करेगा, आँख से पट्टी अगर हम बाँध बैठें।
कोठरी मन की सदा रख साफ बन्दे, कौन जाने कब स्वयं प्रभु आन बैठे?
कोठरी मन की सदा रख साफ बन्दे, .....

माँगने की रीति सी कुछ चल पड़ी है, कृपणता से प्रीति सी कुछ चली है।
क्यों नहीं परमार्थ पथ का मान रखते, क्यों नहीं इंसानियत की शान रखते?
है तुम्हें दाता विधाता ने बनाया, क्यों अरे खुद को भिखारी मान बैठे?
कोठरी मन की सदा रख साफ बन्दे, कौन जाने कब स्वयं प्रभु आन बैठे?
कोठरी मन की सदा रख साफ बन्दे, कौन जाने कब स्वयं प्रभु आन बैठे?

कोठरी मन की सदा रख साफ बन्दे, कौन जाने कब स्वयं प्रभु आन बैठे?
तुम बुलाते हो उसे यदि भावना से, कौन जाने कब निमन्त्रण मान बैठे?
कोठरी मन की सदा रख साफ बन्दे, .....
कोठरी मन की सदा रख साफ बन्दे, .....
कोठरी मन की सदा रख साफ बन्दे, .....

## क्यों रुके हो? साधना के क्षेत्र में आगे बढ़ो

क्यों रुके हो? साधना के क्षेत्र में आगे बढ़ो।
क्यों रुके हो? साधना के क्षेत्र में आगे बढ़ो॥

क्यों प्रगति पथ में तुम्हारे, हो रहा उत्पन्न भय?
श्रम बिना ही चाहते हो, क्या सफलता पर विजय?
सोचते हो क्या? गिने क्षण ही तुम्हारे पास हैं।
हाथ में आया हुआ क्यों, खो रहे हो अब समय?
बढ़ चलो निर्द्वन्द्व, कोरी कल्पनाएँ मत गढ़ो॥
क्यों रुके हो? साधना के क्षेत्र में आगे बढ़ो।
क्यों रुके हो? साधना के क्षेत्र में आगे बढ़ो॥

कुछ नहीं बिगड़ा अभी, सब कुछ तुम्हारे साथ है।
भाग्य के निर्माण का, अवसर तुम्हारे हाथ है॥
मुश्किलों को हराकर जो, बढ़ गये निज लक्ष्य तक।
विजयी वही है विश्व में, ऊँचा उन्हीं का माथ है॥
मत रहो आश्रित, विजय अपनी भुजाओं से गढ़ो॥
क्यों रुके हो? साधना के क्षेत्र में आगे बढ़ो।
क्यों रुके हो? साधना के क्षेत्र में आगे बढ़ो॥

आपदायें जो पड़ें यदि, राह में परवाह क्या?
ध्येय हो अपना अटल, फिर चोट क्या है, आह क्या?
बीच में ही टूट जाये, वह प्रबल उत्साह क्या?
धार से जो हार जाये, वह प्रबल मल्लाह क्या?
नीचे गिरो मत, हर घड़ी ऊँचे उठो, ऊँचे चढ़ो॥
क्यों रुके हो? साधना के क्षेत्र में आगे बढ़ो।
क्यों रुके हो? साधना के क्षेत्र में आगे बढ़ो॥

रिक्त लौटा है न कोई, साधना के द्वार से।
सब समय सब कुछ मिला, सबको इसी भण्डार से॥
साम्राज्य सारी सिद्धियों का, है सुरक्षित सर्वदा।
फिर तुम्हीं वंचित रहो क्यों, दिव्य निज अधिकार से॥
छोड़ो अतीत, भविष्य का इतिहास अब आगे बढ़ो॥
क्यों रुके हो? साधना के क्षेत्र में आगे बढ़ो।
क्यों रुके हो? साधना के क्षेत्र में आगे बढ़ो॥

**महामिलन की आशा मुझको, शरण तुम्हारे लाई है**

महामिलन की आशा मुझको, शरण तुम्हारे लाई है।
पीड़ा भी प्यारी है जिसमें, ऐसी प्यास जगाई है॥

जब से हम बिछुड़े हैं तुम से, दर्शन की चिर आस है।
रोती आँखें, व्याकुल अन्तर, तेरे बिना उदास है॥
अविरल अश्रुधार ने मेरी, प्यास और भड़काई है। ...प्यास और भड़काई है।
अविरल अश्रुधार ने मेरी, प्यास और भड़काई है॥
महामिलन की आशा मुझको, शरण तुम्हारे लाई है।
पीड़ा भी प्यारी है जिसमें, ऐसी प्यास जगाई है॥

माटी के ये खेल खिलौने, अब न हमें बहलाएँगे।
प्राण तड़पते सदा रहेंगे, जब तक तुम्हें न पायेंगे॥
अमर तुम्हीं से प्यार किया है, नश्वरता ठुकराई है। ..नश्वरता ठुकराई है।
अमर तुम्हीं से प्यार किया है, नश्वरता ठुकराई है॥
महामिलन की आशा मुझको, शरण तुम्हारे लाई है।
पीड़ा भी प्यारी है जिसमें, ऐसी प्यास जगाई है॥

आँखें अर्घ्य चढ़ाती निशि दिन, हृदय फटा ही जाता है।
दर्शन के चिर प्यासे हम तो, नहीं और कुछ भाता है॥
विकल वेदना मेरे उर में, बनकर बदली छाई है। ...बनकर बदली छाई है।
विकल वेदना मेरे उर में, बनकर बदली छाई है॥
महामिलन की आशा मुझको, शरण तुम्हारे लाई है।
पीड़ा भी प्यारी है जिसमें, ऐसी प्यास जगाई है॥

अँधियारे को ज्योतित करती, कृपा किरण की आस है।
स्नेह सिंधु तेरी करुणा का, हमको दृढ़ विश्वास है॥
अन्तर की यह आशा ही तो, हमें यहाँ तक लायी है। ...हमें यहाँ तक लायी है।
अन्तर की यह आशा ही तो, हमें यहाँ तक लायी है॥
महामिलन की आशा मुझको, शरण तुम्हारे लाई है।
पीड़ा भी प्यारी है जिसमें, ऐसी प्यास जगाई है॥

नश्वरता को प्रभु तेरा ही, फिर शाश्वत आधार मिले।
डूब रही जीवन नौका को, तेरी दृढ़ पतवार मिले॥
युगों-युगों से यह अभिलाषा, हमने प्रभु जगायी है। ...हमने प्रभु जगायी है।
युगों-युगों से यह अभिलाषा, हमने प्रभु जगायी है॥
महामिलन की आशा मुझको, शरण तुम्हारे लाई है।
पीड़ा भी प्यारी है जिसमें, ऐसी प्यास जगाई है॥

**मैं ढूँढ़ता तुझे था, जब कुञ्ज और वन में**

मैं ढूँढ़ता तुझे था, जब कुञ्ज और वन में।
तू खोजता मुझे था, तब दीन के वतन में॥

तू आह बन किसी की, मुझको पुकारता था।
मैं था तुझे बुलाता, संगीत में भजन में॥
मैं ढूँढ़ता तुझे था, जब कुञ्ज और वन में।
मैं ढूँढ़ता तुझे था, जब कुञ्ज और वन में॥

मेरे लिए खड़ा था, दुःखियों के द्वार पर तू।
मैं बाट जोहता था, तेरी किसी चमन में॥
बनकर किसी के आँसू, मेरे लिए बहा तू।
आँखें लगीं थीं मेरी, तब अपने सुख सदन में॥
मैं ढूँढ़ता तुझे था, जब कुञ्ज और वन में।
मैं ढूँढ़ता तुझे था, जब कुञ्ज और वन में॥

बाजे बजा-बजा के, मैं था तुझे रिझाता।
तब तू लगा हुआ था, पतितों के संगठन में॥
मैं था विरक्त तुझसे, जग की अनित्यता पर।
उत्थान भर रहा था, तब तू किसी पतन में॥
मैं ढूँढ़ता तुझे था, जब कुञ्ज और वन में।
मैं ढूँढ़ता तुझे था, जब कुञ्ज और वन में॥

बेबस गिरे हुओं के, तू बीच में खड़ा है।
मैं स्वर्ग देखता था, झुकता कहाँ चरण में॥
तूने दिये अनेकों, अवसर न मिल सका मैं।
तू कर्म में मगन था, मैं व्यस्त था कथन में॥
मैं ढूँढ़ता तुझे था, जब कुञ्ज और वन में।
मैं ढूँढ़ता तुझे था, जब कुञ्ज और वन में॥

हरिश्चन्द्र और ध्रुव ने, कुछ और ही बताया।
मैं तो समझ रहा था, तेरा प्रताप धन में॥
मैं सोचता तुझे था, रावण की लालसा में।
पर था दधीचि के तू, परमार्थ रूप तन में॥
मैं ढूँढ़ता तुझे था, जब कुञ्ज और वन में।
मैं ढूँढ़ता तुझे था, जब कुञ्ज और वन में॥

मैं ढूँढ़ता तुझे था, जब कुञ्ज और वन में।
तू खोजता मुझे था, तब दीन के वतन में॥

**मैंने तेरी गीता गाई**

मैंने तेरी गीता गाई। मैंने तेरी गीता गाई॥
टूटी-फूटी भाषा में भर, जग के कानों तक पहुँचाई।
मैंने तेरी गीता गाई॥

तेरे द्वार लगाया डेरा, जीवन सफल हुआ सब मेरा।
तेरे चरणों की रज लेकर, अंग-अंग में भस्म रमाई॥
मैंने तेरी गीता गाई॥

अश्रु बहाये चरणों पर जब, सत्यामृत की धार बही तब।
अपने छोटे से चम्मच से, प्यासे जग की प्यास बुझाई॥
मैंने तेरी गीता गाई॥

अल्प शक्ति धारी मैं प्राणी, बच्चे के समान है वाणी।
गागर में सागर भरने की, पर मैंने हिम्मत दिखलाई॥
मैंने तेरी गीता गाई॥

तेरी करुणा से जो पाया, वह इस अंजलि में ले आया।
गंगा से गंगाजल लेकर, गंगा को जलधार चढ़ाई॥
मैंने तेरी गीता गाई॥

**मैं साथ तुम्हारे रहता हूँ, पहचान सको तो पहचानो**

मैं साथ तुम्हारे रहता हूँ, पहचान सको तो पहचानो।
मैं सबका परम हितैषी हूँ, चाहे मानो या न मानो॥

मेरे चिन्तन से वेद बने, शुभ धर्म-सूत्र निज-कर्म बने।
मैंने संकल्प किये जग हित, युग परिवर्तन के मर्म बने॥
संकेतों को समझो मेरे, युग धर्म सुनिश्चित पहचानो॥
मैं साथ तुम्हारे रहता हूँ, पहचान सको तो पहचानो।
मैं साथ तुम्हारे रहता हूँ, पहचान सको तो पहचानो॥
मैं साथ तुम्हारे रहता हूँ॥

जग हित युग सिंधु मथा मैंने, शुभ रत्न अनेकों प्रकट हुए।
अमृत बाँटा सारे जग को, मैं नीलकंठ विषपान किए॥
मेरी छवि है तप की गरिमा, परमार्थ रूप मुझको जानो॥
मैं साथ तुम्हारे रहता हूँ, पहचान सको तो पहचानो।
मैं साथ तुम्हारे रहता हूँ, पहचान सको तो पहचानो॥
मैं साथ तुम्हारे रहता हूँ॥

मुझको अरूप तुम कहो भले, मैं हर निष्ठा में चमक रहा।
मैं अगम शक्ति का स्रोत बना, सबकी श्रद्धा में महक रहा॥
मैं हूँ पावन प्रज्ञा-प्रवाह, मुझको विवेक का स्वर मानो॥
मैं साथ तुम्हारे रहता हूँ, पहचान सको तो पहचानो।
मैं साथ तुम्हारे रहता हूँ, पहचान सको तो पहचानो॥
मैं साथ तुम्हारे रहता हूँ॥

मैं महाकाल का रूप धरे, अब बदल रहा हूँ काल चक्र।
होगा भीषणतम शिव-ताण्डव, यदि होगी मेरी दृष्टि वक्र॥
अच्छा हो मेरे इंगित पर, तुम कर्म-यज्ञ निश्चित ठानो॥
मैं साथ तुम्हारे रहता हूँ, पहचान सको तो पहचानो।
मैं साथ तुम्हारे रहता हूँ, पहचान सको तो पहचानो॥
मैं साथ तुम्हारे रहता हूँ॥

तुम कहो बूँद या सिंधु मुझे, मैं तो पावन निर्मल जल हूँ।
तुम भले मनुज या देव कहो, मैं तो ऋषि-सत्ता का बल हूँ॥
मैं हूँ सविता का तेज प्रखर, सत्ता विराट मुझको जानो॥
मैं साथ तुम्हारे रहता हूँ, पहचान सको तो पहचानो।
मैं साथ तुम्हारे रहता हूँ, पहचान सको तो पहचानो॥
मैं सबका परम हितैषी हूँ, चाहे मानो या न मानो।
मैं सबका परम हितैषी हूँ, चाहे मानो या न मानो॥

मैं साथ तुम्हारे रहता हूँ, पहचान सको तो पहचानो।
मैं साथ तुम्हारे रहता हूँ, पहचान सको तो पहचानो॥
मैं साथ तुम्हारे रहता हूँ॥

**मन मैला ही रहा अगर तो उजला तन बेकार है**

मन मैला ही रहा अगर तो, उजला तन बेकार है।
जनहित में जो लगा न जीवन, वह जीवन बेकार है॥

शक्ति और सौन्दर्य प्रदर्शन, में भी कोई शान है।
जिसने थामी बाँह दुःखी की, धन्य वही इन्सान है॥
पक्ष न्याय का लिया कि जिसने, वही भुजा बलवान है।
अपने हित जो लगा रहा वह, धन-वैभव बेकार है॥
जनहित में जो लगा न जीवन, वह जीवन बेकार है॥

मन मैला ही रहा अगर तो, उजला तन बेकार है।
जनहित में जो लगा न जीवन, वह जीवन बेकार है॥

रूप देखते रहे मुग्ध बन, तुम दर्पण के सामने।
वृद्धावस्था आने वाली है, कब सोचा आपने॥
याद न आया कभी तुम्हें जो, काम दिया था भगवान ने।
दिखा सका जो मैल न मन का, वह दर्पण बेकार है॥
जनहित में जो लगा न जीवन, वह जीवन बेकार है॥

मन मैला ही रहा अगर तो, उजला तन बेकार है।
जनहित में जो लगा न जीवन, वह जीवन बेकार है॥

व्यर्थ परिश्रम किया जुटाया, धन-वैभव बेकार में।
जन-मंगल के लिये न कोई, अंश लगा संसार में॥
शत्रु बनाया है अपनों को, धन के इस अम्बार ने।
यह असीम सम्पदा और यह, सुख-साधन बेकार है॥
जनहित में जो लगा न जीवन, वह जीवन बेकार है॥

मन मैला ही रहा अगर तो, उजला तन बेकार है।
जनहित में जो लगा न जीवन, वह जीवन बेकार है॥

यह सारी सम्पत्ति दिखावा, कहीं न जाना साथ में।
जिसे दिन जायेंगे उस दिन कुछ, नहीं रहेगा हाथ में॥
केवल पुण्य चमकते होंगे, कल की काली रात में।
जिसके लिये गँवाया जीवन, धन-कंचन बेकार है॥
जनहित में जो लगा न जीवन, वह जीवन बेकार है॥

मन मैला ही रहा अगर तो, उजला तन बेकार है।
जनहित में जो लगा न जीवन, वह जीवन बेकार है॥
वह जीवन बेकार है, वह जीवन बेकार है, वह जीवन बेकार है॥

**मत अंगार बिखेरो, वसुधा आज माँगती पानी**

मत अंगार बिखेरो, मत अंगार बिखेरो।
मत अंगार बिखेरो, वसुधा आज माँगती पानी॥
मत अंगार बिखेरो॥

अभी-अभी पागलपन ने थी, गाई मृत्यु-प्रभाती।
जलती हुई दिशाओं की, शीतल न हो सकी छाती॥
मानवता को अब न अधिक तुम, शोणित से नहलाओ।
पशुता के मरघट में अपने, गौरव को न जलाओ॥
क्रौंच-रुदन को सुनकर सहसा, कवि बन जाने वाली।
सुन न रहे क्यों 'तमसा-तट' से, दलित विश्व की वाणी॥
वसुधा आज माँगती पानी, वसुधा आज माँगती पानी॥

मत अंगार बिखेरो, मत अंगार बिखेरो।
मत अंगार बिखेरो, वसुधा आज माँगती पानी॥
मत अंगार बिखेरो॥

भौतिकता के मद में मत दो, निज संस्कृति को पीड़ा।
मनु की सन्तानें के शोणित, से न करो अब क्रीड़ा॥
रक्तपान से भला समझ लो, अपने आँसू पीना।
मानव बनकर सफल विश्व में, दो दिन का भी जीना॥
बीज रूप में सृष्टि बचा कर, प्रलय काल से खेले।
आज उसी के ध्वंस हेतु क्यों, तुमने भृकुटी तानी॥
वसुधा आज माँगती पानी, वसुधा आज माँगती पानी॥

मत अंगार बिखेरो, मत अंगार बिखेरो।
मत अंगार बिखेरो, वसुधा आज माँगती पानी॥
मत अंगार बिखेरो॥

‘गौतम’ जागो अखिल विश्व में, छाया घोर अँधेरा।
‘महावीर’ चल पड़ो तपस्या, को हिंसा ने घेरा॥
थकी समर से वसुधा रोती, इसका भार सम्हालो।
कालकूट लख काँप उठेगी, मुख में अमृत डालो॥
भौतिकता के आवेशों में, कितने बापू खोये।
उन्हें मार देने की करता, रहा विश्व नादानी॥
वसुधा आज माँगती पानी, वसुधा आज माँगती पानी॥

मत अंगार बिखेरो, मत अंगार बिखेरो।
मत अंगार बिखेरो, वसुधा आज माँगती पानी॥
मत अंगार बिखेरो॥

**मेरा परिचय क्या पूछ रहे, रचयिता-रक्षक-पोषक हूँ**

मेरा परिचय क्या पूछ रहे, रचयिता-रक्षक-पोषक हूँ।
मैं शून्य किन्तु फिर भी विराट, मैं आदि ऋचा उद्घोषक हूँ॥

मैं एक, किन्तु संकल्प किया तो, एकोऽहम् बहुस्याम हुआ,
मैंने विस्तार किया अपना, ब्रह्माण्ड उसी का नाम हुआ।
ये चाँद और सूरज मेरी, आँखों में उगने वाले हैं,
है एक आँख में प्यार और, दूजी में प्रखर उजाले हैं॥
मनचाही सृष्टि रचाने की, क्षमता वाला मैं कौशिक हूँ॥
मैं शून्य किन्तु फिर भी विराट, मैं आदि ऋचा उद्घोषक हूँ॥
मेरा परिचय क्या पूछ रहे, रचयिता-रक्षक-पोषक हूँ॥

जिसमें मणि-मुक्ता छिपे हुए, वह सागर की गहराई हूँ,
जिसकी करुणा सुरसरि बनती, उस हिमनग की ऊँचाई हूँ।
मेरा संगीत छिड़ा करता, कल-कल करते इन झरनों में,
मैं सौरभ बिखराता रहता, इन रंग-बिरंगे सुमनों में॥
यह प्रकृति छटा मेरा ही है, इतना सुन्दर मनमोहक॥
मैं शून्य किन्तु फिर भी विराट, मैं आदि ऋचा उद्घोषक हूँ॥
मेरा परिचय क्या पूछ रहे, रचयिता-रक्षक-पोषक हूँ॥

मेरे चिन्तन की धारा से, ऋषियों का प्रादुर्भाव हुआ,
मैंने जब ऋचा उचारी तो, सुर-संस्कृति का फैलाव हुआ।
मैं याज्ञवल्क्य मैं ही वशिष्ठ, मैं परशुराम भागीरथ हूँ,
जो कभी अधूरा रहा नहीं, मैं ऐसा प्रबल मनोरथ हूँ॥
प्रण पूरा करने महाकाल हूँ, काल चक्र अवरोधक हूँ॥
मैं शून्य किन्तु फिर भी विराट, मैं आदि ऋचा उद्घोषक हूँ॥
मेरा परिचय क्या पूछ रहे, रचयिता-रक्षक-पोषक हूँ॥

जनहित में विष पीने वाली, विषपायी मेरी क्षमता है,
जनपीड़ा से विगलित होती, ऐसी करुणा है ममता है।
मैंने साधारण वानर को, बजरंग बनाकर खड़ा किया,
मेरी गीता ने अर्जुन को, अन्याय मिटाने खड़ा दिया॥
विकृतियों से लोहा लेने, सुर-संस्कृति का संयोजक हूँ॥
मैं शून्य किन्तु फिर भी विराट, मैं आदि ऋचा उद्घोषक हूँ॥
मेरा परिचय क्या पूछ रहे, रचयिता-रक्षक-पोषक हूँ॥

मैंने संकल्प किया है फिर, मानव को देव बनाऊँगा,
फिर प्यार और सहकार जगा, धरती पर स्वर्ग बनाऊँगा।
लाऊँगा मैं उज्ज्वल भविष्य, इसका साक्षी यह दिनकर है,
मेरे संग सविता के साधक, गायत्री वाला परिकर है॥
मैं युग-दृष्टा, युग-सृष्टा हूँ, युग परिवर्तन उद्घोषक हूँ॥
मैं शून्य किन्तु फिर भी विराट, मैं आदि ऋचा उद्घोषक हूँ।
मैं शून्य किन्तु फिर भी विराट, मैं आदि ऋचा उद्घोषक हूँ॥
मेरा परिचय क्या पूछ रहे, रचयिता-रक्षक-पोषक हूँ।
मेरा परिचय क्या पूछ रहे, रचयिता-रक्षक-पोषक हूँ॥

**मेरी अनन्त आत्मा का यह विश्वास है**

मेरी अनन्त आत्मा का यह विश्वास है।
मेरा उपास्य तो प्रतिक्षण मेरे पास है॥

कितने युग बीते इस पंथी को राह में।
फिर भी आई न कमी अपनी इस चाह में॥
अब भी तो महामिलन की निश्चित आस है।
मेरा उपास्य तो प्रतिक्षण मेरे पास है॥

यह डोर थमी है हाथ उसी आराध्य के।
सब कार्य साध्य कर दिये कि जो दुःसाध्य थे॥
आत्मा का पंथी कभी न हुआ निराश है।
मेरा उपास्य तो प्रतिक्षण मेरे पास है॥

मेरा भगवन् त्रिकालदर्शी और युगदृष्टा।
वह ही मेरा अतीत स्वर्णिम भविष्य सृष्टा।
वह ही तो मेरे वर्तमान का हास है।
मेरा उपास्य तो प्रतिक्षण मेरे पास है॥

वह बसता है तन में मन में और आत्मा में।
जो कुछ उसमें वह नहीं किसी परमात्मा में।
वह ही तो मेरे जीवन का पूर्ण विकास है।
मेरा उपास्य तो प्रतिक्षण मेरे पास है॥

साँसों में जीवित है बन्दी है प्राण में।
बनकर सुवास छाया रहता है घ्राण में॥
तन में चेतनता मन में मधुमय रास है॥
मेरा उपास्य तो प्रतिक्षण मेरे पास है॥

सुख में वह हँसता साथ मेरे दुःख में रोता।
नित प्रति वह उठता साथ-साथ ही है सोता॥
ममता का हास करुणिमा का निःश्वास है।
मेरा उपास्य तो प्रतिक्षण मेरे पास है॥

है अमिट चाह पूरी भी हो ही जायेगी।
यह आत्मा अन्तिम गति उसमें ही पायेगी॥
मेरी सरिता को सागर का विश्वास है।
मेरा उपास्य तो प्रतिक्षण मेरे पास है॥

बस थोड़ा सा जीवन ही और बिताना है।
इस कर्मक्षेत्र में निज कर्तव्य निभाना है॥
प्रतिक्षण, प्रतियुग, प्रतिजन्म यही उल्लास है।
मेरा उपास्य तो प्रतिक्षण मेरे पास है॥

मेरी अनन्त आत्मा का यह विश्वास है।
मेरा उपास्य तो प्रतिक्षण मेरे पास है॥
मेरी अनन्त आत्मा का यह विश्वास है।
मेरा उपास्य तो प्रतिक्षण मेरे पास है॥

**मुझे अपनी शरण में ले लो नाथ**

प्रभो अपनी शरण में ले लो नाथ, मुझे अपनी शरण में ले लो नाथ।
आस लगाये मैं बैठी हूँ, चरण शरण में ले लो नाथ॥
मुझे अपनी शरण में ले लो नाथ॥

जीवन भर हम एक बने हैं, नहीं कभी भी अलग हुए हैं।
वचन निभाओ मेरे स्वामी, पद वन्दन में ले लो नाथ॥
आस लगाये मैं बैठी हूँ, चरण शरण में ले लो नाथ॥
मुझे अपनी शरण में ले लो नाथ॥

साध्य बनो तुम इस साधन में, प्राण बनो तुम इस तन-मन में।
बंशी है यह जीवन मेरा, स्वर गुँजन में ले लो नाथ॥
आस लगाये मैं बैठी हूँ, चरण शरण में ले लो नाथ॥
मुझे अपनी शरण में ले लो नाथ॥

तन-मन है तुम्हें समर्पित, करूँ प्राण मैं किसको अर्पित।
यज्ञ रूप हो पावन ईश्वर, पूर्णाहुति में ले लो नाथ॥
आस लगाये मैं बैठी हूँ, चरण शरण में ले लो नाथ॥
मुझे अपनी शरण में ले लो नाथ॥

सागर हो तुम दिव्य ज्ञान के, वाणी हो तुम ईश गान के।
मेघ रूप मैं बन जाऊँगी, अब सागर में ले लो नाथ॥
आस लगाये मैं बैठी हूँ, चरण शरण में ले लो नाथ॥
मुझे अपनी शरण में ले लो नाथ॥
आस लगाये मैं बैठी हूँ, चरण शरण में ले लो नाथ॥
मुझे अपनी शरण में ले लो नाथ॥

करुणामय है रूप तुम्हारा, करुणामय सम्बन्ध हमारा।
करुणा मेरी तभी जगेगी, जब सुमिरन में ले लो नाथ॥

**मुझे चाहिए और कुछ भी न भगवन, तुम्हारी शरण की मुझे कामना है**

मुझे चाहिए और कुछ भी न भगवन, तुम्हारी शरण की मुझे कामना है।
मुझे चाहिए और कुछ भी न भगवन, तुम्हारी शरण की मुझे कामना है॥

तुम्हारे बनाए जगत के लिए मैं, रहूँ हर समय मेरे भगवन समर्पित।
रुधिर की हरेक बूँद हर अंग मेरा, हरेक श्वाँस हर एक धड़कन समर्पित॥
किसी के न जो आ सके काम ऐसे, किसी भी न क्षण की मुझे कामना है॥
मुझे चाहिए और कुछ भी न भगवन, तुम्हारी शरण की मुझे कामना है॥

मुझे भार सौंपा गया जो यहाँ पर, उसे साहसी बन उठाती रहूँ मैं।
निरन्तर उसे ले स्वयं बढ़ सकूँ मैं, सभी को सुपथ पर बढ़ाती रहूँ मैं॥
सरल प्यार सबको सदा दे सकूँ मैं, न अब आवरण की मुझे कामना है॥
मुझे चाहिए और कुछ भी न भगवन, तुम्हारी शरण की मुझे कामना है॥

जहाँ स्वार्थ का सूखता हो मरुस्थल, वहीं भाव-सम्वेदनाएँ जगाऊँ।
जहाँ की हवा में घुटन भर गयी हो, वहीं प्राण भरती हवाएँ बहाऊँ॥
जहाँ स्वस्थ मन स्वस्थ तन जी सकें सब, सुवातावरण की मुझे कामना है॥
मुझे चाहिए और कुछ भी न भगवन, तुम्हारी शरण की मुझे कामना है॥

करूँ काम ऐसे कि जिनसे जगत में, बढ़े आस्थाएँ सुविस्वास फैले।
कपट, दम्भ, पाखण्ड की हो न छाया, अधर पर मधुर हास-उल्लास फैले॥
उचित मान हो पर ना अभिमान होए, विमल आचरण की मुझे कामना है॥
मुझे चाहिए और कुछ भी न भगवन, तुम्हारी शरण की मुझे कामना है॥

डगर हो न वंचित खुली रोशनी से, न कोई गली भी अँधेरी यहाँ हो
किसी का न आँगन उदासी भरा हो, कहीं पर कलुष की न ढेरी यहाँ हो
सभी ओर हों स्वच्छता औ सुगन्धें, सुनहरी किरण की मुझे कामना है॥
मुझे चाहिए और कुछ भी न भगवन, तुम्हारी शरण की मुझे कामना है॥
मुझे चाहिए और कुछ भी न भगवन, तुम्हारी शरण की मुझे कामना है॥
तुम्हारी शरण की मुझे कामना है, तुम्हारी शरण की मुझे कामना है॥

**ना चाहें वरदान कोई हम, न चाहें अनुदान**

ना चाहें वरदान कोई हम, न चाहें अनुदान।
भटक न जायें सत्पथ से प्रभु, दो विवेक वह भान॥

नहीं चाहते धन या दौलत, ऋद्धि-सिद्धि हम भारी भी।
ठुकराते हैं अखिल विश्व की, विभूतियाँ भी सारी ही॥
त्रास कर सकें पर पीड़ा का, दो वह मधुरिम तान॥
ना चाहें वरदान कोई हम, न चाहें अनुदान॥

क्षुद्र आज सब लगती हमको, अभिलाषाएँ ये संसारी।
दीन दुखी की पूजा ही बस, चाह रहा है आज पुजारी॥
पीड़ित जग की पीड़ा बाँटें, दो इतना सा ज्ञान॥
ना चाहें वरदान कोई हम, न चाहें अनुदान॥

संघर्षों से डरें नहीं हम, कभी नहीं धीरज त्यागें।
कष्ट भले कितने ही पायें, शूल बिछें हों पथ में आगे॥
कभी न विचलित हों दुख में भी, दो ऐसी मुस्कान॥
ना चाहें वरदान कोई हम, न चाहें अनुदान।
भटक न जायें सत्पथ से प्रभु, दो विवेक वह भान॥

ना चाहें वरदान कोई हम, न चाहें अनुदान।
भटक न जायें सत्पथ से प्रभु, दो विवेक वह भान॥

**न हो ओ साधक तू लाचार, मिलेगा नव बल का संचार**

न हो ओ साधक तू लाचार, मिलेगा नव बल का संचार।
तेरी रक्षा को है माँ का दुलार, तू है प्रभु का राजकुमार॥

दिखता कोई नहीं मीत, इससे तुझको है भीत।
फिर भी चिन्ता मत करना, तेरी होनी है जीत॥
तपस्या है तेरा हथियार, लक्ष्य है तेरा पर उपकार।
तेरी रक्षा को है माँ का दुलार, तू है प्रभु का राजकुमार॥

भारी शत्रु है विकार, तेरा छोटा है आकार।
फिर भी रुक न सकेगी, तेरी निष्ठा की धार॥
हटा दे मन से सब कुविचार, बढ़ा सद्भावना का संचार।
तेरी रक्षा को है माँ का दुलार, तू है प्रभु का राजकुमार॥

माना असुरता है क्रूर, तेरा लक्ष्य अभी दूर।
फिर भी हक जो तुम्हारा, है वो मिलेगा जरूर॥
बाँटता चल तू सबको प्यार, बनेगा श्रेष्ठ सुखी संसार।
तेरी रक्षा को है माँ का दुलार, तू है प्रभु का राजकुमार॥

न हो ओ साधक तू लाचार, मिलेगा नव बल का संचार।
तेरी रक्षा को है माँ का दुलार, तू है प्रभु का राजकुमार॥

**न मैं धाम-धरती न धन चाहती हूँ, कृपा का तेरी एक कण चाहती हूँ**

न मैं धाम-धरती न धन चाहती हूँ,
कृपा का तेरी एक कण चाहती हूँ।

रटे नाम तेरा वो चाहूँ मैं रसना,
सुने यश तेरा वह श्रवण चाहती हूँ।
न मैं धाम-धरती न धन चाहती हूँ,
कृपा का तेरी एक कण चाहती हूँ॥

विमल ज्ञान धारा से मस्तिष्क उर्वर,
व श्रद्धा से भरपूर मन चाहती हूँ।
न मैं धाम-धरती न धन चाहती हूँ,
कृपा का तेरी एक कण चाहती हूँ॥

करे दिव्य दर्शन जो तेरा निरन्तर,
वही भाग्यशाली नयन चाहती हूँ।
न मैं धाम-धरती न धन चाहती हूँ,
कृपा का तेरी एक कण चाहती हूँ॥

नहीं चाहना है मुझे स्वर्ग छवि की,
मैं केवल तुम्हें प्राण धन चाहती हूँ।
न मैं धाम-धरती न धन चाहती हूँ,
कृपा का तेरी एक कण चाहती हूँ॥

प्रकाश आत्मा में अलौकिक तेरा है,
परम ज्योति प्रत्येक क्षण चाहती हूँ।
न मैं धाम-धरती न धन चाहती हूँ,
कृपा का तेरी एक कण चाहती हूँ॥

न मैं धाम-धरती न धन चाहती हूँ,
कृपा का तेरी एक कण चाहती हूँ॥

**न मैं स्वर्ग-मुक्ति न यश चाहती हूँ, मिलूँ तुममें प्रभु यह वर माँगती हूँ**

न मैं स्वर्ग-मुक्ति न यश चाहती हूँ,
मिलूँ तुममें प्रभु यह वर माँगती हूँ।

समर्पित हो तन-मन समर्पित हो जीवन,
समर्पण हो सर्वस्व यही चाहती हूँ।
न मैं स्वर्ग-मुक्ति न यश चाहती हूँ,
मिलूँ तुममें प्रभु यह वर माँगती हूँ॥

बनूँ वंशी तेरी, बजे स्वर तुम्हारा,
तड़पते हृदय की व्यथा चाहती हूँ।
न मैं स्वर्ग-मुक्ति न यश चाहती हूँ,
मिलूँ तुममें प्रभु यह वर माँगती हूँ॥

किरणें बनूँ मैं सविता बनो तुम,
जले ज्योति तेरी चमक चाहती हूँ।
न मैं स्वर्ग-मुक्ति न यश चाहती हूँ,
मिलूँ तुममें प्रभु यह वर माँगती हूँ॥

मिले जन्म जब भी वरण हो तुम्हारा,
बिछुड़न नहीं अब मिलन चाहती हूँ।
न मैं स्वर्ग-मुक्ति न यश चाहती हूँ,
मिलूँ तुममें प्रभु यह वर माँगती हूँ॥

रहो तुम कहीं भी भुलाओ न मुझको,
मिलें फिर से हम-तुम वचन चाहती हूँ।
न मैं स्वर्ग-मुक्ति न यश चाहती हूँ,
मिलूँ तुममें प्रभु यह वर माँगती हूँ॥

तुम्हीं मेघ हो प्रभु बनूँ बूँद मैं भी,
बरसूँ मैं अविरल प्रण ठानती हूँ।
न मैं स्वर्ग-मुक्ति न यश चाहती हूँ,
मिलूँ तुममें प्रभु यह वर माँगती हूँ॥
मिलूँ तुममें प्रभु यह वर माँगती हूँ।
मिलूँ तुममें प्रभु यह वर माँगती हूँ॥

**नयन-नयन में हृदय-हृदय में विकल वेदना छाई**

नयन-नयन में हृदय-हृदय में विकल वेदना छाई।
अन्तर छलके, आँसू ढुलके, करुणा भरी विदाई॥

तिनके-तिनके जोड़ बया जो, अपना नीड़ बनाती।
आपने छौनों को पावस से, जननी बया बचाती॥
एक-एक कर उसी तरह तुम, सबको यहाँ बुलाया।
भव की उमस भरी पावस से, तुमको तात बचाया॥
अपने प्राण जलाये लेकिन, तुमको राह दिखाई।
अन्तर छलके, आँसू ढुलके, करुणा भरी विदाई॥

नयन-नयन में हृदय-हृदय में विकल वेदना छाई।
अन्तर छलके, आँसू ढुलके, करुणा भरी विदाई॥

चारों ओर विषमताओं के, लगे हुए हैं डेरे।
मानव मन को कुण्ठाओं के, दुर्गम सैनिक घेरे॥
पाप-ताप की काल कोठरी में, यह जीव बिचारा।
पड़ा कराह रहा पर कोई, देता नहीं सहारा॥
देना उन्हें प्रकाश विश्व में, अन्ध तमिस्रा छाई।
अन्तर छलके, आँसू ढुलके, करुणा भरी विदाई॥

नयन-नयन में हृदय-हृदय में विकल वेदना छाई।
अन्तर छलके, आँसू ढुलके, करुणा भरी विदाई॥

कर अपना उद्धार दूसरों, को जो राह दिखाते।
इस धरती पर धन्य वही तो, महापुरुष कहलाते॥
सुप्त तुम्हारी उसी प्राण-प्रतिभा को, यहाँ जगाया।
अन्तःस्थल के पावन गंगा-जल से है नहलाया॥
घर-घर बँटे पुण्य पावनता, यह प्रसाद की नाई।
अन्तर छलके, आँसू ढुलके, करुणा भरी विदाई॥

नयन-नयन में हृदय-हृदय में विकल वेदना छाई।
अन्तर छलके, आँसू ढुलके, करुणा भरी विदाई॥

अपना देश महान बने फिर, सुख-सम्पदा सुहाये।
पुण्य तिलक अपनी संस्कृति के, माथे में लग जाये॥
सभ्य समाज बने अपना सब, भव-बन्धन मिट जाये।
ज्ञान और विज्ञान सभी में, उन्नत ध्वज लहराये॥
विश्व-शान्ति की दसों-दिशाओं, में गूँजे शहनाई।
अन्तर छलके, आँसू ढुलके, करुणा भरी विदाई॥

नयन-नयन में हृदय-हृदय में विकल वेदना छाई।
अन्तर छलके, आँसू ढुलके, करुणा भरी विदाई॥

जाओ मेरे लाल! दुआएँ, तुम लाखों ले जाओ।
भटकी हुई आत्माओं को, नूतन राह दिखाओ॥
आये थे तुम एकाकी पर, अब यह नहीं कहोगे।
साथ तुम्हारे अन्तःस्थल में, हम भी सदा रहेंगे॥
कैसी भी हो घड़ी साथ बन, होंगे हम परछाई।
अन्तर छलके, आँसू ढुलके, करुणा भरी विदाई॥
कैसी भी हो घड़ी साथ बन, होंगे हम परछाई।
अन्तर छलके, आँसू ढुलके, करुणा भरी विदाई॥

नयन-नयन में हृदय-हृदय में विकल वेदना छाई।
अन्तर छलके, आँसू ढुलके, करुणा भरी विदाई॥

**नये देश को मैं नयी भक्ति दूँगा, कि युग को नयी एक अभिव्यक्ति दूँगा**

नये देश को मैं नयी भक्ति दूँगा, मैं नयी भक्ति दूँगा।
कि युग को नयी एक अभिव्यक्ति दूँगा॥

जगा देश सारा मिट्टी कालिमा है,
गगन में छिटकने लगी लालिमा है।
निशा नाथ सोये जगा अंशुमाली,
पथिक ने नये लक्ष्य की राह पा ली॥
प्रगति पंथ पर वेग से बढ़ चले जो,
करोड़ों पगों को नयी शक्ति दूँगा॥
नये देश को मैं नयी भक्ति दूँगा, मैं नयी भक्ति दूँगा।
नये देश को मैं॥

न होगा कभी दृष्टि से लक्ष्य ओझल,
मनोबल हमारा बनेगा सुसम्बल।
अथक शक्ति ले पग हुए आज गतिमय,
झुकेगा किसी दिन इन्हीं पर हिमालय॥
धरा पर नया स्वर्ग बसकर रहेगा,
मनुज को विवशताओं से मुक्ति दूँगा॥

मनुज अब रुकेगा नहीं आँधियों से,
मनुजता सहमती न बरबादियों से।
जो चाहा मनुज ने वही करके छोड़ा,
दनुजता से डरकर कभी मुँह न मोड़ा॥
मनुज जब चलेगा सृजन की शपथ ले,
मैं उनको शहीदों सी आसक्ति दूँगा॥
नये देश को मैं नयी भक्ति दूँगा, मैं नयी भक्ति दूँगा।
नये देश को मैं॥

अभी कल्पना हो सकी है न पूरी,
अभी साधना रह गयी है अधूरी।
अभी तो प्रगति का खुला द्वार केवल,
अभी लक्ष्य में शेष है और दूरी॥
बिना लक्ष्य की प्राप्ति के जो न लौटे,
मैं ऐसी प्रखर शक्ति के व्यक्ति दूँगा॥
नये देश को मैं नयी भक्ति दूँगा, मैं नयी भक्ति दूँगा।
कि युग को नयी एक अभिव्यक्ति दूँगा॥

नये देश को मैं नयी भक्ति दूँगा, मैं नयी भक्ति दूँगा।
नये देश को मैं॥

**निंदिया बाई घर जइयो, जा घर राम भजन नहीं होय**

निंदिया बाई घर जइयो, जा घर राम भजन नहीं होय।
राम भजन नहीं होय, जा घर श्याम भजन नहीं होय॥

कै कोई जागे रोगी-भोगी, कै कोई जागे चोर।
कै कोई जागे सन्त महात्मा, लगी हरि से डोर॥
निंदिया बाई घर जइयो, जा घर राम भजन नहीं होय।
राम भजन नहीं होय, जा घर श्याम भजन नहीं होय॥

चार पहर धंधे में बीते, चार पहर गई सोय।
घड़ी एक हरि नाम न लीनो, मुक्ति कहाँ से होय॥
निंदिया बाई घर जइयो, जा घर राम भजन नहीं होय।
राम भजन नहीं होय, जा घर श्याम भजन नहीं होय॥

स्वर्ग अटारी चढ़ गई और, रही करम को रोय।
कहत कबीर सुनो भई साधो, अब गति कैसी होय॥
निंदिया बाई घर जइयो, जा घर राम भजन नहीं होय।
राम भजन नहीं होय, जा घर श्याम भजन नहीं होय॥

निंदिया बाई घर जइयो, जा घर राम भजन नहीं होय।
राम भजन नहीं होय, जा घर श्याम भजन नहीं होय॥

**ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्**

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।
ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्॥

तूने हमें जनम दिया, पालन कर रही हो तुम।
तुमसे ही पाते प्राण हम, कष्टों को हर रही हो तुम॥
ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्॥

तेरा महान तेज है, छाया हुआ सभी जहान।
सृष्टि की वस्तु-वस्तु में, हो रही हो विद्यमान॥
ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्॥

तेरा ही धरते ध्यान हम, माँगते तेरी दया।
हे माँ! हमारी बुद्धि को, श्रेष्ठ मार्ग पर चला॥
ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्॥

**पर-पीड़ा से द्रवित हो उठा, जिसका तन-मन-जीवन सारा**

पर-पीड़ा से द्रवित हो उठा, जिसका तन-मन-जीवन सारा।
काँटों में भी राह बनाई, उन चरणों को नमन हमारा॥

नीलकंठ बन पिया हलाहल, जिसने जन कल्याण में।
परम शान्ति सुख मिला अलौकिक, जिसे आत्म-बलिदान में॥
जिसने इस सारी धरती को, ही अपना कुटुम्ब है माना।
बुनता रहा सदैव मानवी, आस्थाओं का ताना बाना॥
जो युग-प्यास बुझाने लाया, दिव्य ज्ञान-गंगा की धारा।
काँटों में भी राह बनाई, उन चरणों को नमन हमारा॥
पर पीड़ा से द्रवित हो उठा. . . . . .

जिसने दिया निमन्त्रण हँसकर, आँधी-पानी तूफानों को।
जड़-जीवन को जागृत करने, होम दिया जिसने प्राणों को॥
जाति-पाति की खाई पाटी, जिसने पावन प्यार से।
दुखियों के घावों को धोया, जिसने दृग जल धार से॥
सिर पर कफन बाँधकर जिसने, अभिमानी तम को ललकारा।
काँटों में भी राह बनाई, उन चरणों को नमन हमारा॥
पर पीड़ा से द्रवित हो उठा. . . . . .

पौरुष की प्रतिमा पर जिसने, हँसकर श्रद्धा सुमन चढ़ाया।
ममता का आँचल फैलाकर, जिसने पीड़ा को दुलराया॥
जिसने नई चेतना भर दी, तन-मन-जीवन, प्राण में।
जिसने हँसते-हँसते दे दीं, वज्र अस्थियाँ दान में॥
जिसने अभिनव ज्योति जलाई, तोड़-तोड़कर तम की कारा।
काँटों में भी राह बनाई, उन चरणों को नमन हमारा॥
पर पीड़ा से द्रवित हो उठा. . . . . .

भूल-भटकी मानवता की, सुन न सके जो कठिन कराहें।
तड़प उठे जिसका अन्तर्मन, सुनकर दीन-दुखी की आहें॥
हिमगिरि सी विपदाओं में भी, खोये जो न विवेक को।
ज्ञान-चक्षु से देखे हरदम, जो अनेक में एक को॥
राजपाट को तजकर जिसने, ताज कंटकों का स्वीकारा।
काँटों में भी राह बनाई, उन चरणों को नमन हमारा॥
पर पीड़ा से द्रवित हो उठा, जिसका तन-मन जीवन सारा।
काँटों में भी राह बनाई, उन चरणों को नमन हमारा॥

**पावन प्रीति लुटाते चलें, प्रेम की धारा बहाते चलें**

पावन प्रीति लुटाते चलें, प्रेम की धारा बहाते चलें।
सुरभित हो जिससे जगती, ऐसे सुमन सजाते चलें॥

मुस्कायें बन भुवन-भास्कर, ज्योति भरे जन-जन में।
मिट जाये सारा अँधियारा, विमल विभा हो मन में॥
जीवन धन्य बनाते चलें, सृजन प्रभाती सुनाते चलें॥
पावन प्रीति लुटाते चलें, प्रेम की धारा बहाते चलें॥

विमल चन्द्र की शुचि आभा ले, रजनी से टकराएँ।
तेरी दिव्य-ज्योति से ज्योतित, कण-कण को कर जाएँ॥
शीतलता बरसाते चलें, सबकी क्लान्ति मिटाते चलें॥
पावन प्रीति लुटाते चलें, प्रेम की धारा बहाते चलें॥

प्यासे अन्तर में प्रभु तेरी, प्रेम-सुधा यदि सरसे।
स्नेह सिक्त घन बन जन-हित में, बन फिर सावन बरसे॥
रस की धार बहाते चलें, सेवा पुष्प चढ़ाते चलें॥
पावन प्रीति लुटाते चलें, प्रेम की धारा बहाते चलें॥

सतत साधना हो यह जीवन, हर क्षण तुझको अर्पण।
लुटा सकें सर्वस्व स्वयं का, कर हम मूक समर्पण॥
सबका दर्द बँटाते चलें, जीवन-ज्योति जलाते चलें॥
पावन प्रीति लुटाते चलें, प्रेम की धारा बहाते चलें।
सुरभित हो जिससे जगती, ऐसे सुमन सजाते चलें॥

पावन प्रीति लुटाते चलें, प्रेम की धारा बहाते चलें।
सुरभित हो जिससे जगती, ऐसे सुमन सजाते चलें॥

**पितु-मातु सहायक स्वामि सखा, तुम ही एक नाथ हमारे हो**

पितु-मातु सहायक स्वामि सखा, तुम ही एक नाथ हमारे हो।
पितु-मातु सहायक स्वामि सखा, तुम ही एक नाथ हमारे हो॥

जिनके कछु और आधार नहीं, तिनके तुम ही रखवारे हो।
पितु-मातु सहायक स्वामि सखा, तुम ही एक नाथ हमारे हो॥

प्रति पालक हो सारे जग के, अतिशय करुणा उर धारे हो।
पितु-मातु सहायक स्वामि सखा, तुम ही एक नाथ हमारे हो॥

भूले हैं हम तुमको तुम तो, हमरी सुधि नाहिं बिसारे हो।
पितु-मातु सहायक स्वामि सखा, तुम ही एक नाथ हमारे हो॥

उपकारन को कछु अन्त नहीं, छिन ही छिन जो विस्तारे हो।
पितु-मातु सहायक स्वामि सखा, तुम ही एक नाथ हमारे हो॥

महाराज! महा महिमा तुम्हरी, समझे विरले बुधिवारे हो।
पितु-मातु सहायक स्वामि सखा, तुम ही एक नाथ हमारे हो॥

इस जीवन के तुम जीवन हो, इन प्राणन के तुम प्यारे हो।
पितु-मातु सहायक स्वामि सखा, तुम ही एक नाथ हमारे हो॥

तुम से प्रभु की नर पाय झलक, केहि के अब और सहारे हो।
पितु-मातु सहायक स्वामि सखा, तुम ही एक नाथ हमारे हो॥

सुख शान्ति-निकेतन प्रेम निधे, मन-मन्दिर के उजियारे हो।
पितु-मातु सहायक स्वामि सखा, तुम ही एक नाथ हमारे हो॥

पितु-मातु सहायक स्वामि सखा, तुम ही एक नाथ हमारे हो।
पितु-मातु सहायक स्वामि सखा, तुम ही एक नाथ हमारे हो॥
पितु-मातु सहायक स्वामि सखा, तुम ही एक नाथ हमारे हो॥

**प्रभु तुझमें मैं मिल जाऊँ, यह सुमन चढ़ाऊँ**

प्रभु तुझमें मैं मिल जाऊँ, यह सुमन चढ़ाऊँ।
प्रभु तुझमें मैं मिल जाऊँ, यह सुमन चढ़ाऊँ॥
यह सुमन चढ़ाऊँ, यह सुमन चढ़ाऊँ॥
प्रभु तुझमें मैं मिल जाऊँ, यह सुमन चढ़ाऊँ॥

केवल एक यही है इच्छा, शरण रहूँ मैं तेरी।
साँस-साँस में तुम्हीं विराजो, टेर सुनो अब मेरी॥
अन्तर में तुम्हें समाऊँ, हर पल तुझको ही ध्याऊँ॥
प्रभु तुझमें मैं मिल जाऊँ, यह सुमन चढ़ाऊँ।
प्रभु तुझमें मैं मिल जाऊँ, यह सुमन चढ़ाऊँ॥
यह सुमन चढ़ाऊँ, यह सुमन चढ़ाऊँ॥
प्रभु तुझमें मैं मिल जाऊँ, यह सुमन चढ़ाऊँ॥

दीन दुःखी की सेवा में ही, शेष कटे यह जीवन।
हर आँसू मुस्कान बना दूँ, ऐसा हो अब हर क्षण॥
गिरतों को पुनः उठाऊँ, विश्राम इसी में पाऊँ॥
प्रभु तुझमें मैं मिल जाऊँ, यह सुमन चढ़ाऊँ।
प्रभु तुझमें मैं मिल जाऊँ, यह सुमन चढ़ाऊँ॥
यह सुमन चढ़ाऊँ, यह सुमन चढ़ाऊँ॥
प्रभु तुझमें मैं मिल जाऊँ, यह सुमन चढ़ाऊँ॥

आस यही है मेरे स्वामी, साथ सदा ही रहना।
थक जाऊँ मैं जब भी पथ में, हाथ हमारे गहना॥
आशीष तुम्हारा पाऊँ, छाया तेरी बन जाऊँ॥
प्रभु तुझमें मैं मिल जाऊँ, यह सुमन चढ़ाऊँ।
प्रभु तुझमें मैं मिल जाऊँ, यह सुमन चढ़ाऊँ॥
यह सुमन चढ़ाऊँ, यह सुमन चढ़ाऊँ॥
प्रभु तुझमें मैं मिल जाऊँ, यह सुमन चढ़ाऊँ॥

**प्रवासी रुक नहीं सकते, कभी मन के इशारे पर**

प्रवासी रुक नहीं सकते, कभी मन के इशारे पर।
कदम हटते नहीं पीछे, पहुँचते हैं किनारे पर॥

बढ़े चलते, बढ़े चलते, न चिन्ता दूर मंजिल की।
कभी तो पार पायेंगे, मनोबल के सहारे पर॥
कदम हटते नहीं पीछे, पहुँचते हैं किनारे पर।
प्रवासी रुक नहीं सकते, कभी मन के इशारे पर॥

न मुड़कर देखते देखते पीछे, कठिन मंजिल सतत साथी।
जिन्हें कुछ काम करना है, नहीं मिटते मिटाने पर॥
कदम हटते नहीं पीछे, पहुँचते हैं किनारे पर।
प्रवासी रुक नहीं सकते, कभी मन के इशारे पर॥

अमिट विश्वास का बल ले, कुटिल जग में उतरते हैं।
वही तो सिद्ध कहलाते, बराबर आजमाने पर॥
कदम हटते नहीं पीछे, पहुँचते हैं किनारे पर।
प्रवासी रुक नहीं सकते, कभी मन के इशारे पर॥

यही तो इतिहास कहता है, चढ़ा दो प्राण जन-हित में।
सफलता तो सदा मिलती, स्वयं को ही मिटाने पर॥
कदम हटते नहीं पीछे, पहुँचते हैं किनारे पर।
प्रवासी रुक नहीं सकते, कभी मन के इशारे पर॥

अचल निज ध्येय पर होकर, मिला सम्मान था हमको।
कमर कस ली अरे हमने, नया मानव बनाने पर॥
कदम हटते नहीं पीछे, पहुँचते हैं किनारे पर।
प्रवासी रुक नहीं सकते, कभी मन के इशारे पर॥

कदम हटते नहीं पीछे, पहुँचते हैं किनारे पर।
प्रवासी रुक नहीं सकते, कभी मन के इशारे पर॥

**प्रेमी भर तू प्रेम में, ईश्वर के गुण गाया कर**

प्रेमी भर तू प्रेम में, ईश्वर के गुण गाया कर।
मन-मन्दिर में गाफिल तू, झाड़ू रोज लगाया कर॥

सोने में तो रात गुजारी, दिन भर करता पाप रहा।
इसी तरह बरबाद तू बन्दे, करता अपना आप रहा॥
प्रातः समय उठ ध्यान से, सत्संग में तू जाया कर॥
मन-मन्दिर में गाफिल तू, झाड़ू रोज लगाया कर॥
प्रेमी भर तू प्रेम में, ईश्वर के गुण गाया कर।
मन-मन्दिर में गाफिल तू, झाड़ू रोज लगाया कर॥

नर-तन के चोले को पाना, बच्चों का कोई खेल नहीं।
जन्म-जन्म के शुभ कर्मों का, होता जब तक मेल नहीं॥
नर तन पाने के लिए, उत्तम कर्म कमाया कर॥
मन-मन्दिर में गाफिल तू, झाड़ू रोज लगाया कर॥
प्रेमी भर तू प्रेम में, ईश्वर के गुण गाया कर।
मन-मन्दिर में गाफिल तू, झाड़ू रोज लगाया कर॥

पास तेरे है दुखिया कोई, तूने मौज उड़ाई क्या?
भूखा-प्यासा पड़ा पड़ोसी, तूने रोटी खाई क्या?
पहले सबसे पूछकर, भोजन को तू खाया कर॥
मन-मन्दिर में गाफिल तू, झाड़ू रोज लगाया कर॥
प्रेमी भर तू प्रेम में, ईश्वर के गुण गाया कर।
मन-मन्दिर में गाफिल तू, झाड़ू रोज लगाया कर॥

देख दया परमेश्वर की, वेदों का जिसने ज्ञान दिया।
बन्दे मन में सोच जरा तो, कितना है कल्याण किया॥
सब कामों को छोड़कर, ईश्वर नाम ध्याया कर॥
मन-मन्दिर में गाफिल तू, झाड़ू रोज लगाया कर॥
प्रेमी भर तू प्रेम में, ईश्वर के गुण गाया कर।
मन-मन्दिर में गाफिल तू, झाड़ू रोज लगाया कर॥

**राही जाना पथ मत भूल**

राही जाना पथ मत भूल, राही जाना पथ मत भूल।
चाहे फूल बिछें हो मग में, चाहे अनगिन शूल॥
राही जाना पथ मत भूल, राही जाना पथ मत भूल॥

चहुँ-दिशि छाये अँधियारा, गरजे धन बरसे जल-धारा।
धीरज से ले काम अभय तू, निज साहस मत भूल॥
राही जाना पथ मत भूल, राही जाना पथ मत भूल॥

अनगिन आकर्षण आ जायें, स्वर्ण-शैल बहु पथ मिल जायें।
प्रीति उर्वशी को पाकर भी, तनिक न जाना भूल॥
राही जाना पथ मत भूल, राही जाना पथ मत भूल॥

चलना तेरा काम अकेला, यह जग तो कुछ दिन का मेला।
तेरा ही बलिदान बनेगा, नव जागृति का मूल॥
राही जाना पथ मत भूल, राही जाना पथ मत भूल॥

पर हित शिव-सा विष पी जाना, स्वार्थ-सुधा को हँस ठुकराना।
प्रेम शान्ति समता के बोना, सारे जग में फूल॥
राही जाना पथ मत भूल, राही जाना पथ मत भूल॥

**राम का नाम लेकर न जो पा सके, राम का काम करके वही पाओगे**

राम का नाम लेकर न जो पा सके,
राम का काम करके वही पाओगे।
राम का नाम लेकर न जो पा सके,
राम का काम करके वही पाओगे॥

राम का काम है लोकसेवा करो,
राम से तो मिलन फिर असम्भव नहीं
छोड़ वैभव यहाँ भाव से जो भरा,
देख पाया पतन या पराभव नहीं॥
शान-अभिमान में जो न तुम पा सके,
त्याग-तप में निखर के वही पाओगे॥
राम का काम करके वही पाओगे॥

प्यार-ममता जिन्हें मिल न पाई कभी,
हर्ष-उल्लास का एक क्षण दो उन्हें।
जो घिरे हैं अँधेरे पथों में यहाँ,
प्रेरणा से भरी तुम किरण दो उन्हें॥
बुद्धि के दंभ में तुम न जो पा सके,
भाव से किन्तु भर के वही पाओगे॥
राम का काम करके वही पाओगे॥

भाव-सम्वेदना के बिना मूल्य क्या,
यज्ञ, जप, जागरण या अनुष्ठान का।
जो न करुणा हृदय बीच उमड़ी कभी,
बोझ बेकार है ज्ञान-विज्ञान का॥
मिल सका जो न अब तक गहन ज्ञान से,
स्नेह से तुम सँवर के वहीं पाओगे॥
राम का काम करके वही पाओगे॥

धर्म से भी अधिक धर्म की भावना,
है जरूरी बहुत व्यक्ति के वास्ते।
जिस तरह देह-बल से अधिक आत्मबल,
है जरूरी अतुल शक्ति के वास्ते॥
धर्म का जो कलेवर नहीं दे सका,
कर्म तुम श्रेष्ठ करके वही पाओगे॥
राम का काम करके वही पाओगे॥

राम का काम करके वही पाओगे।
राम का काम करके वही पाओगे॥

**राम नाम का अर्थ यही है, काम करें हम राम का**

राम नाम का अर्थ यही है, काम करें हम राम का।
रात न देखें, दिवस न देखें, समय सुबह औ शाम का॥
काम करें हम राम का॥

हो ऊँचा आदर्श सामने, हमें स्वयं का बोध हो।
सफर नहीं रुक पाये चाहे, कितना प्रबल विरोध हो॥
लोभ न मन में रहे सुखों का, वैभव का, धन-धाम का॥
रात न देखें, दिवस न देखें, समय सुबह औ शाम का।
काम करें हम राम का॥
राम नाम का अर्थ यही है, काम करें हम राम का॥

जब तक दुष्प्रवृत्ति के दानव, का फैला आतंक हो।
ईश्वर की सन्तान स्वयं को, समझे बैठा रंक हो॥
तब तक कभी न होगा अब तो, कोई पल विश्राम का॥
रात न देखें, दिवस न देखें, समय सुबह औ शाम का।
काम करें हम राम का॥
राम नाम का अर्थ यही है, काम करें हम राम का॥

उदासीन हम रहें न जब भी, होता अत्याचार हो।
कुछ ऐसा हम करें कि जिससे, सजग सकल संसार हो॥
त्यागें सब आलस्य चल पड़ें, जन-जन हो फिर काम का॥
रात न देखें, दिवस न देखें, समय सुबह औ शाम का।
काम करें हम राम का॥
राम नाम का अर्थ यही है, काम करें हम राम का॥

हो न जरा अभिमान हृदय में, सरल मधुर व्यवहार हो।
जन-जन में विश्वास जगाएँ, जन-जन के प्रति प्यार हो॥
ध्यान नहीं रह पाये हमको, फिर ऊँचे पद-नाम का॥
रात न देखें, दिवस न देखें, समय सुबह औ शाम का।
काम करें हम राम का॥
राम नाम का अर्थ यही है, काम करें हम राम का॥

जनमंगल के लिए समर्पित, हों मन में सद्भाव हो।
छल-छद्मों से दूर रहें हम, बिल्कुल नहीं दुराव हो॥
सबकी सेवा करें सभी को, रूप समझकर राम का॥
रात न देखें, दिवस न देखें, समय सुबह औ शाम का।
काम करें हम राम का॥
राम नाम का अर्थ यही है, काम करें हम राम का।
राम नाम का अर्थ यही है, काम करें हम राम का॥
काम करें हम राम का॥

**रात भर भोगा अँधेरा, घुटन अन्धापन झराने**

रात भर भोगा अँधेरा, घुटन अन्धापन झराने।
रात भर भोगा अँधेरा, घुटन अन्धापन झराने॥
है तू ही जो पूर्व दिश में, सतत सूर्य निकल रहा है॥
रात भर भोगा अँधेरा, घुटन अन्धापन झराने।
रात भर भोगा अँधेरा, घुटन अन्धापन झराने॥

जल रही है सृष्टि सारी, आग के बादल बरसते।
गन्ध के अस्तित्व तो जीवन मृदुलता को तरसते॥
है तू ही वह तत्त्व जो बन, फूल नित-प्रति खिल रहा है॥
है तू ही जो पूर्व दिश में, सतत सूर्य निकल रहा है॥
रात भर भोगा अँधेरा, घुटन अन्धापन झराने।
रात भर भोगा अँधेरा॥

थे अकेले तुम हुई इच्छा, कि निज विस्तार कर लूँ।
और अपनी प्राण-सत्ता को, हृदय में आप भर लूँ॥
है तू ही क्रम सृष्टि का, जाने न कब से चल रहा है॥
है तू ही जो पूर्व दिश में, सतत सूर्य निकल रहा है॥
रात भर भोगा अँधेरा, घुटन अन्धापन झराने।
रात भर भोगा अँधेरा॥

ढूँढ़ते तुझको रहे संसार में, कब जन्म बीता।
किन्तु जीवन बन नहीं पाया, कभी भी कर्म गीता॥
है तू ही जो हृदय में कुछ, ज्योति जैसा जल रहा है॥
है तू ही जो पूर्व दिश में, सतत सूर्य निकल रहा है॥
रात भर भोगा अँधेरा, घुटन अन्धापन झराने।
रात भर भोगा अँधेरा॥

स्वप्नवत संसार लेकिन, लग रहा है सत्य जीवन।
लिप्त सबमें किन्तु सबसे, दूर होता विप्र है मन॥
है तू ही जैसे सरोवर, में कमल-दल खिल रहा है॥
है तू ही जो पूर्व दिश में, सतत सूर्य निकल रहा है॥
रात भर भोगा अँधेरा, घुटन अन्धापन झराने।
रात भर भोगा अँधेरा॥

**सदा मन हमारा रहे घर तुम्हारा, यही कामना है यही याचना है**

सदा मन हमारा रहे घर तुम्हारा, यही कामना है यही याचना है।
चरण में तुम्हारे समर्पित रहें हम, यही कल्पना है यही भावना है॥

मिला प्यार निर्मल हमें तो तुम्हारा, भले ही विमुख हो तुम्हीं से रहे हम।
तुम्हीं हो हमारे हितैषी सदा से, मगर प्यार तुमसे भी कर ना सके हम॥
हमारे हृदय में जगे प्रेम निश्चल, अनुष्ठान हमको यही ठानना है॥
चरण में तुम्हारे समर्पित रहें हम, यही कल्पना है यही भावना है॥

तुम्हारी निगाहें रहीं नित्य हम पर, मगर हम तुम्हें क्यों नहीं देख पाये।
कला जिन्दगी की सिखाते रहे तुम, मगर हम उसे क्यों नहीं सीख पाये॥
चलें किस तरह हम तुम्हारी नजर में, समझना यही है यही जानना है॥
सदा मन हमारा रहे घर तुम्हारा, यही कामना है यही याचना है॥

हमें मान-पद-यश सताने न पाए, कि पैसे की झिलमिल लुभाने न पाये।
हमें दुष्ट-दुर्गुण डराने न पाये, कि श्रद्धा हमारी डिगाने न पाये॥
तुम्हीं नाव हो प्रभु तुम्हीं हो खिवैया, यही सत्य हमको तो पहचानना है॥
चरण में तुम्हारे समर्पित रहें हम, यही कल्पना है यही भावना है॥

मिले दृष्टि ऐसी तुम्हें जो निहारे, सधे स्वर वही बस तुम्हें जो पुकारे।
जगे बुद्धि ऐसी तुम्हें जो विचारे, बहे आँख में जल चरण जो पखारे॥
कि जो भी है अपना बने सब तुम्हारा, हमारे लिए प्रिय यही साधना है॥
चरण में तुम्हारे समर्पित रहें हम, यही कल्पना है यही भावना है॥

सदा मन हमारा रहे घर तुम्हारा, यही कामना है यही याचना है।
सदा मन हमारा रहे घर तुम्हारा, यही कामना है यही याचना है॥
यही कामना है यही याचना है, यही कामना है यही याचना है, यही कामना है यही याचना है॥

**साँई का पंछी बोले रे, साँई का पंछी बोले**

साँई का पंछी बोले रे, साँई का पंछी बोले।
साँई का पंछी बोले रे, साँई का पंछी बोले॥
तिनके के पिंजरे में मुनियाँ, सुधा और विष घोले रे।
साँई का पंछी बोले॥
तिनके के पिंजरे में मुनियाँ, सुधा और विष घोले रे।
साँई का पंछी बोले॥
साँई का पंछी बोले रे, साँई का पंछी बोले॥

साजन का है बाग अनूठा, सब कुछ सच्चा सब कुछ झूठा।
रीझा सो पछताता लौटा, पाया मीठा फल जो रूठा॥
खुला खेल है देखे जब तू, घूँघट का पट खोले रे॥
साँई का पंछी बोले॥
साँई का पंछी बोले रे, साँई का पंछी बोले॥

चटक चाँदनी चार दिनों की, शीतल रजनी थोड़ी बाकी।
चुन ले सुमन सजा ले डाली, प्याली भर ले शेष सुधा की॥
तेरी कथा कहेंगे कल, पैरों के फूट फफोले रे॥
साँई का पंछी बोले॥
साँई का पंछी बोले रे, साँई का पंछी बोले॥

आशा और पंथ का मारा, हाट-हाट घूमा बनजारा।
अब भी रहे लाज जो मनुवा मन से मन को तोल रे॥
साँई का पंछी बोले॥
साँई का पंछी बोले रे, साँई का पंछी बोले॥
तिनके के पिंजरे में मुनियाँ, सुधा और विष घोले रे।
साँई का पंछी बोले॥
तिनके के पिंजरे में मुनियाँ, सुधा और विष घोले रे।
साँई का पंछी बोले॥
साँई का पंछी बोले रे, साँई का पंछी बोले॥
साँई का पंछी बोले रे, साँई का पंछी बोले॥

**सामने दिव्य आलोक साकार था, जिन्दगी ही हमारी नमन बन गई**

सामने दिव्य आलोक साकार था, जिन्दगी ही हमारी नमन बन गई।
सामने दिव्य आलोक साकार था, जिन्दगी ही हमारी नमन बन गई॥
सामने दिव्य आलोक साकार था, सामने दिव्य आलोक साकार था॥

बात क्या थी न जाने उस आदेश में,
जिन्दगी ही हमारी वचन बन गई।
सामने दिव्य आलोक साकार था, सामने दिव्य आलोक साकार था॥
जिन्दगी ही हमारी नमन बन गई, जिन्दगी ही हमारी नमन बन गई।
सामने दिव्य आलोक साकार था, सामने दिव्य आलोक साकार था॥

इस कदर फूल सुख के खिले खुशनुमा,
जिन्दगी ही हमारी चमन बन गई।
सामने दिव्य आलोक साकार था, सामने दिव्य आलोक साकार था॥
जिन्दगी ही हमारी नमन बन गई, जिन्दगी ही हमारी नमन बन गई।
सामने दिव्य आलोक साकार था, सामने दिव्य आलोक साकार था॥

तेज ढाला स्वतः जो वलय से विभो,
जिन्दगी ही हमारी किरण बन गई।
सामने दिव्य आलोक साकार था, सामने दिव्य आलोक साकार था॥
जिन्दगी ही हमारी नमन बन गई, जिन्दगी ही हमारी नमन बन गई।
सामने दिव्य आलोक साकार था, सामने दिव्य आलोक साकार था॥

फिर कहा लोक मंगल चरम लक्ष्य है,
जिन्दगी ही हमारी हवन बन गई।
सामने दिव्य आलोक साकार था, सामने दिव्य आलोक साकार था॥
जिन्दगी ही हमारी नमन बन गई, जिन्दगी ही हमारी नमन बन गई।
सामने दिव्य आलोक साकार था, सामने दिव्य आलोक साकार था॥

द्रौपदी सा दिखा जब कभी जग हमें,
जिन्दगी ही हमारी वसन बन गई।
सामने दिव्य आलोक साकार था, सामने दिव्य आलोक साकार था॥
जिन्दगी ही हमारी नमन बन गई, जिन्दगी ही हमारी नमन बन गई।
सामने दिव्य आलोक साकार था, सामने दिव्य आलोक साकार था॥
जिन्दगी ही हमारी नमन बन गई, जिन्दगी ही हमारी नमन बन गई।
सामने दिव्य आलोक साकार था, सामने दिव्य आलोक साकार था॥

**सम्पूर्ण सृष्टि मेरा विधान, मैं ही अदृश्य मैं दृश्यमान**

सम्पूर्ण सृष्टि मेरा विधान, मैं ही अदृश्य मैं दृश्यमान।
मैं उद्गम मैं ही विलय स्वयं, फिर क्या मेरा उद्भव प्रयाण॥

तन की सीमा के आ-पार, बिल्कुल अछोर मेरा प्रसार।
मैं अखिल विश्व का स्वयं मूल, मैं ही कारण मैं ही निदान॥
सम्पूर्ण सृष्टि मेरा विधान, मैं ही अदृश्य मैं दृश्यमान।
मैं उद्गम मैं ही विलय स्वयं, फिर क्या मेरा उद्भव प्रयाण॥

मैं स्वयं धैर्य, मैं हूँ अधीर, मैं स्थूल-सूक्ष्म कारण शरीर।
मैं सुगम अगम हूँ एक साथ, मैं लघुतम हूँ मैं हूँ महान॥
सम्पूर्ण सृष्टि मेरा विधान, मैं ही अदृश्य मैं दृश्यमान।
मैं उद्गम मैं ही विलय स्वयं, फिर क्या मेरा उद्भव प्रयाण॥

मैं आदि-मध्य हूँ और अन्त, मैं ही अनादि मैं हूँ अनन्त।
मैं सुबह और दुपहर मैं ही, मैं ही संध्या दिवसावसान॥
सम्पूर्ण सृष्टि मेरा विधान, मैं ही अदृश्य मैं दृश्यमान।
मैं उद्गम मैं ही विलय स्वयं, फिर क्या मेरा उद्भव प्रयाण॥

मैं चाहूँ तो बढ़ चले सूर्य, मेरी इच्छा से ढले सूर्य।
पाकर मेरा संकेत मात्र, रुक जाता नभ में अंशुमान॥
सम्पूर्ण सृष्टि मेरा विधान, मैं ही अदृश्य मैं दृश्यमान।
मैं उद्गम मैं ही विलय स्वयं, फिर क्या मेरा उद्भव प्रयाण॥

मैं सविता का स्वर्णिम प्रकाश, प्राणों में बहता हुआ श्वाँस।
जन-जन अणु-अणु में विद्यमान, चेतनता ही मेरा प्रमाण॥
सम्पूर्ण सृष्टि मेरा विधान, मैं ही अदृश्य मैं दृश्यमान।
मैं उद्गम मैं ही विलय स्वयं, फिर क्या मेरा उद्भव प्रयाण॥

मेरी इच्छा से बनी सृष्टि, मेरी समष्टि प्यारी समष्टि।
मैं अन्धकार मैं दिशाज्ञान, हर संशय का मैं समाधान॥
सम्पूर्ण सृष्टि मेरा विधान, मैं ही अदृश्य मैं दृश्यमान।
मैं उद्गम मैं ही विलय स्वयं, फिर क्या मेरा उद्भव प्रयाण॥

मैं स्वयं बना नश्वर शरीर, हरने को जग की गहन पीर।
संघर्ष असुरता से करके, करने धरती का परित्राण॥
सम्पूर्ण सृष्टि मेरा विधान, मैं ही अदृश्य मैं दृश्यमान।
मैं उद्गम मैं ही विलय स्वयं, फिर क्या मेरा उद्भव प्रयाण॥

मेरे वंशज! मेरे सपूत!, बढ़ चलो क्रान्ति के अग्रदूत।
पुरुषार्थ तुम्हारा सावधान, लाएगा कल नूतन विहान॥
सम्पूर्ण सृष्टि मेरा विधान, मैं ही अदृश्य मैं दृश्यमान।
मैं उद्गम मैं ही विलय स्वयं, फिर क्या मेरा उद्भव प्रयाण॥

**सविता महान आपसे वरदान माँगते**

सविता महान आपसे वरदान माँगते।
हे ज्योति पुँज, ज्योति का अनुदान माँगते॥

निर्बल ये प्राण आज तुम्हें टेर रहे हैं।
शुभ ज्योति को अज्ञान के घन घेर रहे हैं॥
सद्बुद्धि का, सद्ज्ञान का हम भान माँगते।
हे ज्योति पुँज, ज्योति का अनुदान माँगते॥
सविता महान आपसे वरदान माँगते।
हे ज्योति पुँज, ज्योति का अनुदान माँगते॥

देना वो शक्ति चेतना को पग नये मिलें।
नव जागरण के जिन्दगी के स्वर नये मिलें॥
गायें सृजन के राग, ऐसी तान माँगते।
हे ज्योति पुँज, ज्योति का अनुदान माँगते॥
सविता महान आपसे वरदान माँगते।
हे ज्योति पुँज, ज्योति का अनुदान माँगते॥

तेरी प्रखरता सबकी आत्म-ज्योति पा सके।
सद्भाव का आलोक जिन्दगी में छा सके॥
कल्मष-कषाय, दोषों से परित्राण माँगते।
हे ज्योति पुँज, ज्योति का अनुदान माँगते॥
सविता महान आपसे वरदान माँगते।
हे ज्योति पुँज, ज्योति का अनुदान माँगते॥

कर पायें देव साधना, बलिदान की तप की।
आराधना हम कर सकें पीड़ित दुःखी जन की॥
विमल-विभा, प्रखर-प्रकाश, प्राण माँगते।
हे ज्योति पुँज, ज्योति का अनुदान माँगते॥
सविता महान आपसे वरदान माँगते।
हे ज्योति पुँज, ज्योति का अनुदान माँगते॥

सविता महान आपसे वरदान माँगते।
हे ज्योति पुँज, ज्योति का अनुदान माँगते॥

सविता महान आपसे वरदान माँगते।
हे ज्योति पुँज, ज्योति का अनुदान माँगते॥

**सीख नहीं पाये चादर ओढ़ने का ढंग रे, मैली चादर पर कैसे चढ़ पाये रंग रे**

सीख नहीं पाये चादर ओढ़ने का ढंग रे।
मैली चादर पर कैसे चढ़ पाये रंग रे॥

हमें मिली चादर उजली मैली कर डाली,
जिधर गये हमने उतनी कालिमा लगा ली।
मैली अब अन्तरंग है, मैला बहिरंग रे,
मैली चादर पर कैसे चढ़ पाये रंग रे॥

आओ हर कल्मष मन का सेवा से धो लें,
सबको अपना लें मन से हम सबके हो लें।
सेवा है सच्ची पूजा सेवा सत्संग रे,
मैली चादर पर कैसे चढ़ पाये रंग रे॥

सबका दुःख-दर्द बटाएँ अपना सुख बाँटें,
हृदय-हृदय की खाईं को हँसकर हम पाटें।
किये नहीं तीरथ चाहे गये नहीं गंग रे,
मैली चादर पर कैसे चढ़ पाये रंग रे॥

परहित में अपने साधन समय हम लगायें,
मन का हर मैल घुले फिर, पुण्य हम कमाएँ।
हर कोना हो फिर उजला, उजला हर अंग रे,
मैली चादर पर कैसे चढ़ पाये रंग रे॥

निर्मल आचरण बनेगा, चमकेगा चिन्तन,
बहुत-बहुत चौड़ा होगा, भावों का आँगन।
नहीं कभी होगी मन की गली कहीं तंग रे,
मैली चादर पर कैसे चढ़ पाये रंग रे॥

जीवन में शेष रहेगी, फिर नहीं निराशा,
पल भर आलस्य न होगा फिर कहीं जरा सा।
होगा उत्साह अनोखा, नित नयी उमंग रे,
मैली चादर पर कैसे चढ़ पाये रंग रे॥

## सिहर-सिहर मन तुम्हें पुकारे, प्रभु दर्शन बिन बड़ा क्लेश है

सिहर-सिहर मन तुम्हें पुकारे, प्रभु दर्शन बिन बड़ा क्लेश है।
उर को समझाने को प्रभुवर, केवल तेरा ध्यान शेष है॥

मिली झलक थोड़ी सी तेरी, वे क्षण सचमुच अमर हो गए,
आँखों में चुभते रहते हैं, वे सपने जो शेष रह गए।
नयन पुतलियों में अंकित हैं, तेरे नयनों की परछाई,
फिर से वह दर्शन हो कैसे, खोज रही आँखें ललचाई॥
दृष्टि निछावर कर दी तुम पर, दर्शन का अनुदान शेष है।
उर को समझाने को प्रभुवर, केवल तेरा ध्यान शेष है॥

तेरा वह स्पर्श क्षणिक था, पर वह मन को इतना भाया,
पाँव पखारे जब तेरे प्रभु, हाथों में था प्राण समाया।
अभी पोरुओं में अंकित है, तेरा वह स्पर्श हृदय धन,
वह रोमांच सरस इतना था, डूब गया उसमें ही तन-मन॥
यह जीवन तुममें घुल जाये, केवल यह अरमान शेष है।
उर को समझाने को प्रभुवर, केवल तेरा ध्यान शेष है॥

कहूँ कहानी कैसे उर की, क्षण-क्षण कथा नयी बनती है,
यादों के बादल में तेरी, प्रतिक्षण नयी झलक मिलती है।
हृदय देश में अंकित है प्रभु, तव पावन पद-चिन्ह सुनहले,
नहीं हटाये हटते मन से, प्रभु तेरे संकेत रूपहले॥
आँसू बनकर बह जाने को, दो क्षण का वह भान शेष है।
उर को समझाने को प्रभुवर, केवल तेरा ध्यान शेष है॥

माना रहते हो आत्मा में, बनकर दिव्य ज्योति प्रभु तुम ही,
थिरक रहे हो रोम-रोम में, प्राण-चेतना बनकर तुम ही।
और बुद्धि में अंकित है प्रभु, परम तत्त्व तेरी ही झाँकी,
अपनी यह काया भी तो है, हे प्रभु तेरी ही परछाईं॥
जब हम तुमसे तुम हममें हो, दूरी का क्यों भान शेष है।
उर को समझाने को प्रभुवर, केवल तेरा ध्यान शेष है॥

सिहर-सिहर मन तुम्हें पुकारे, प्रभु दर्शन बिन बड़ा क्लेश है।
उर को समझाने को प्रभुवर, केवल तेरा ध्यान शेष है॥

**स्नेह से तुम दीप सी मैं, जल रहे दोनों निरन्तर**

स्नेह से तुम दीप सी मैं, जल रहे दोनों निरन्तर।
स्नेह से तुम दीप सी मैं, जल रहे दोनों निरन्तर॥
स्नेह से तुम दीप सी मैं॥

साँस चलती है निरत पर, साँस की प्रभु! गति तुम्हीं हो।
है अनिश्चित काल गति इस, जन्म की परिणति तुम्हीं को॥
आदि हो प्रति आत्म उद्गम, के तुम्हीं तो चिर अनश्वर।
तुम गगन से मैं धरा सी, चल रहे दोनों निरन्तर॥
स्नेह से तुम दीप सी मैं, जल रहे दोनों निरन्तर।
स्नेह से तुम दीप सी मैं॥

तुम्हीं हो धड़कन हृदय के, चेतना तन में तुम्हारी।
दब गया आभार से उर, वन्दना मन में तुम्हारी॥
भीग कर बोझिल बने हैं, प्यार के रस से करुण स्वर।
प्राण से तुम मैं प्रणय सी, पल रहे दोनों निरन्तर॥
स्नेह से तुम दीप सी मैं, जल रहे दोनों निरन्तर।
स्नेह से तुम दीप सी मैं॥

जल रही बड़वाग्नि उर में, प्रबल झंझावात भी है।
सिहरते तब प्राण केवल, अब प्रकम्पित गात भी है॥
दूर हैं दोनों किनारे, बीच में है काल निर्झर।
तुम क्षितिज से मैं सजल क्षिति, छल रहे दोनों निरन्तर॥
स्नेह से तुम दीप सी मैं, जल रहे दोनों निरन्तर।
स्नेह से तुम दीप सी मैं॥

रूप तव प्रभु! सुदृढ़ हिमगिरि, साधना गोमुख हमारी।
दीप्ति से आभास से तुम, मैं वही आभा तुम्हारी॥
चिर अजेयी प्रिय! तुम्हीं तो, चेतना मय प्रभु अनश्वर।
हिम सदृश तुम नीर सी मैं, गल रहे दोनों निरन्तर॥
स्नेह से तुम दीप सी मैं, जल रहे दोनों निरन्तर।
स्नेह से तुम दीप सी मैं॥

स्नेह से तुम दीप सी मैं, जल रहे दोनों निरन्तर।
स्नेह से तुम दीप सी मैं, जल रहे दोनों निरन्तर॥
स्नेह से तुम दीप सी मैं॥

**सुख चाहे यदि नर जीवन का, जप ले प्रभु नाम प्रमाद न कर**

सुख चाहे यदि नर जीवन का, जप ले प्रभु नाम प्रमाद न कर।
है वही सुमरने योग्य सखा, तू और किसी को याद न कर॥

अस्थिर हैं जग के ठाठ सभी, यदि बिछुड़ गये तो अचरज क्या।
हो लोभ-मोह के वशीभूत, सिर धुन के शोक-विषाद न कर॥
सुख चाहे यदि नर जीवन का, जप ले प्रभु नाम प्रमाद न कर॥

धन-माल अपार बटोर भले, पर इतना ध्यान अवश्य रहे।
अपना घर-बार बसाने को, औरों का घर बरबाद न कर॥
सुख चाहे यदि नर जीवन का, जप ले प्रभु नाम प्रमाद न कर॥

पर निन्दा को तज कर प्रकाश, आदर्श बना निज जीवन को।
सद्ज्ञान प्राप्त कर सज्जन से, दुर्जन से व्यर्थ विवाद न कर॥
सुख चाहे यदि नर जीवन का, जप ले प्रभु नाम प्रमाद न कर॥

सुख चाहे यदि नर जीवन का, जप ले प्रभु नाम प्रमाद न कर।
है वही सुमरने योग्य सखा, तू और किसी की याद न कर॥

**सूक्ष्म में रम गये हो हमारे प्रभो, देख पायें तुझे वह नयन दीजिए**

सूक्ष्म में रम गये हो हमारे प्रभो,
देख पायें तुझे वह नयन दीजिए।
पुण्य-परमार्थ पथ पर बढ़ें ये चरण,
जा मिले आपसे दिव्य वर दीजिए॥

तप किया आपने सिद्ध सब कुछ किया,
लोक हित में है सर्वार्थ अर्पित किया।
देव मानव बने, स्वर्ग धरती बने,
पूज्यवर आपने यह प्रण भी किया॥
अब यही चाह है, हे हमारे प्रभो,
आपका अनुसरण हो कृपा कीजिए॥
सूक्ष्म में रम गये हो हमारे प्रभो,
देख पायें तुझे वह नयन दीजिए॥

दिव्य सविता बने, रश्मियाँ बाँटने,
बन गये पुण्य गंगा तपन मेटने।
यों जलाई मशालें तिमिर भेदने,
पुण्य आलोक जग में लगा फैलने॥
व्रत यही ले रहे आज हम भी प्रभो,
लक्ष्य ऊँचा बनायें दिशा दीजिए॥
सूक्ष्म में रम गये हो हमारे प्रभो,
देख पायें तुझे वह नयन दीजिए॥

प्राण में प्रेरणा बन मचलते रहो,
भाव-सम्वेदना बन उछलते रहो।
बुद्धि में दिव्य चिन्तन बनो पूज्यवर,
इस मनुज देह में प्राण भरते रहो॥
हों समर्पित तुम्हारे चरण में प्रभो,
भूल जायें स्वयं को दया कीजिए॥
सूक्ष्म में रम गये हो हमारे प्रभो,
देख पायें तुझे वह नयन दीजिए॥
पुण्य-परमार्थ पथ पर बढ़ें ये चरण,
जा मिले आपसे दिव्य वर दीजिए॥

सूक्ष्म में रम गये हो हमारे प्रभो,
देख पायें तुझे वह नयन दीजिए॥
पुण्य-परमार्थ पथ पर बढ़ें ये चरण,
जा मिले आपसे दिव्य वर दीजिए॥

**तजकर अपना रूप प्रभु जी, मैं पावन आकार हो गया**

इतना चिन्तन किया तुम्हारा, तुमसे इतना प्यार हो गया।
भगवन तुमसे प्यार हो गया।
तजकर अपना रूप प्रभु जी, तजकर अपना रूप तुम्हारा, मैं पावन आकार हो गया॥
भगवन तुमसे प्यार हो गया।

एक-एक मिल दो होते हैं, यह तो है इतिहास पुराना।
एक-एक मिल एक हो गया, गणित भला यह किसने जाना॥
हम तुम मिलकर एक हो गये, यह अद्‌भुत व्यापार हो गया॥
तजकर अपना रूप प्रभु जी, तजकर अपना रूप तुम्हारा, मैं पावन आकार हो गया॥
भगवन तुमसे प्यार हो गया।

तब तक दूर रहे तुम जब तक, द्वैत भाव ने मन को घेरा।
ज्योति तुम्हारी पड़ी दिखाई, जब अद्वैत ने किया बसेरा॥
था अब तक जो निराकार वह, नयनों में साकार हो गया॥
तजकर अपना रूप प्रभु जी, तजकर अपना रूप तुम्हारा, मैं पावन आकार हो गया॥
भगवन तुमसे प्यार हो गया।

भव-बन्धन ने मुझको बाँधा, माया ने प्रतिपल भरमाया।
इस संस्कृति को जानूँ कैसे, जबकि स्वयं को जान न पाया॥
अपने को पहचान सका तब, जब मन पर अधिकार हो गया॥
तजकर अपना रूप प्रभु जी, तजकर अपना रूप तुम्हारा, मैं पावन आकार हो गया॥
भगवन तुमसे प्यार हो गया।

इतना चिन्तन किया तुम्हारा, तुमसे इतना प्यार हो गया।
भगवन तुमसे प्यार हो गया।
तजकर अपना रूप प्रभु जी, तजकर अपना रूप तुम्हारा, मैं पावन आकार हो गया॥
भगवन तुमसे प्यार हो गया।

**तेरा नूर सबमें समाया हुआ है, ये संसार तेरा बनाया हुआ है**

तेरा नूर सबमें समाया हुआ है,
ये संसार तेरा बनाया हुआ है।

रमा है तू फूलों में मानिन्द बू के,
जगत में तू ही जगमगाया हुआ है।
तेरा नूर सबमें समाया हुआ है,
ये संसार तेरा बनाया हुआ है॥
तेरा नूर सबमें समाया हुआ है, तेरा नूर सबमें समाया हुआ ॥

चमकते हैं दुनियाँ में जो चाँद-सूरज,
उजेला वो तुझसे ही पाया हुआ है।
तेरा नूर सबमें समाया हुआ है,
ये संसार तेरा बनाया हुआ है॥
तेरा नूर सबमें समाया हुआ है, तेरा नूर सबमें समाया हुआ ॥

भलाई बुराई सभी को तू देखे,
नहीं छिपता तुझसे छिपाया हुआ है।
तेरा नूर सबमें समाया हुआ है,
ये संसार तेरा बनाया हुआ है॥
तेरा नूर सबमें समाया हुआ है, तेरा नूर सबमें समाया हुआ ॥

सजा और मजा तू ही देता है सबको,
भरेगा जो जिसने कमाया हुआ है।
तेरा नूर सबमें समाया हुआ है,
ये संसार तेरा बनाया हुआ है॥
तेरा नूर सबमें समाया हुआ है, तेरा नूर सबमें समाया हुआ ॥

सिफारिश न झूठी चलेगी किसी की,
यह वेदों में सबको बताया हुआ है।
तेरा नूर सबमें समाया हुआ है,
ये संसार तेरा बनाया हुआ है॥
तेरा नूर सबमें समाया हुआ है, तेरा नूर सबमें समाया हुआ ॥

तू है सबका मालिक गरीबों का परवर,
जहाँ कुल तेरा ही बसाया हुआ है।
तेरा नूर सबमें समाया हुआ है,
ये संसार तेरा बनाया हुआ है॥
तेरा नूर सबमें समाया हुआ है, तेरा नूर सबमें समाया हुआ॥

**थोड़ी सी साँसें पायी हैं, इनको नहीं गँवाना है**

थोड़ी सी साँसें पायी हैं, इनको नहीं गँवाना है।
पता नहीं किस पल में बन्दे, तुझे यहाँ से जाना है॥

घर-परिवार, समाज त्यागकर, घाट-घाट बन-बन भटका।
तन से किया पलायन पर मन, रहा मोह में ही अटका॥
कर्तव्यों का त्याग करे जो, कभी न होता त्यागी है।
कर्म करे परिणाम प्रभु पर, छोड़े वह वैरागी है॥
करने है सब काम मगर मन, उनमें नहीं रमाना है।
पता नहीं किस पल में बन्दे, तुझे यहाँ से जाना है॥
थोड़ी सी साँसें पायी हैं, इनको नहीं गँवाना है॥

राम रसायन पिया कि जिसने, वही मस्त होकर झूमा।
नहीं पराया दीखा कोई, जहाँ-जहाँ भी वह घूमा॥
सभी तरफ उसको अपना ही, घर-परिवार नजर आया।
हर प्राणी में उसे छलकता, प्रभु का प्यार नजर आया॥
मन न राम के रंग में रंगा तो, चोला व्यर्थ रंगाना है॥
पता नहीं किस पल में बन्दे, तुझे यहाँ से जाना है॥
थोड़ी सी साँसें पायी हैं, इनको नहीं गँवाना है॥

कल के लिए न टालो बिल्कुल, जन मंगल की राह चलो।
तपन बहुत फैली है सेवा, की है शीतल छाँह चलो॥
नश्वर सुख के लिए न भागो, यहाँ सुबह से सोने तक।
कर लो तुम सत्कर्म अभी भी, शाम उमर की होने तक।
पुण्य और परमार्थ कमा लो, सुख का यही खजाना है॥
पता नहीं किस पल में बन्दे, तुझे यहाँ से जाना है॥
थोड़ी सी साँसें पायी हैं, इनको नहीं गँवाना है॥

थोड़ी सी साँसें पायी हैं, इनको नहीं गँवाना है।
पता नहीं किस पल में बन्दे, तुझे यहाँ से जाना है॥

## तुझे मिला कंचन सा जीवन, तूने उसे गँवाया

तुझे मिला कंचन सा जीवन, तूने उसे गँवाया।
बना कोयला चन्दन का यूँ, भला कौन सुख पाया?
बता कौन सुख पाया?

सृष्टा का तू बहुत लाड़ला, राजकुँवर कहलाया।
नहीं पिता के कामों में पर, तूने हाथ बँटाया॥
तुझे श्रेष्ठ सन्तान समझकर, काम गया तो सौंपा।
वह भारी दायित्व न बिल्कुल, तूने कभी निभाया॥
हीरा सा अनमोल जनम यह, तू पहचान न पाया।
कंकड़ सा बेमोल समझकर, क्यों उसको ठुकराया?
बता कौन सुख पाया?
तुझे मिला कंचन सा जीवन॥

कभी न ऊँचे आदर्शों का, दीखा तुझे सबेरा।
कभी प्यार ममता करुणा से, भरा नहीं मन तेरा॥
अहंकार की चट्टानें, आ गईं बीज राहों में।
लाभ और लिप्सा ने तुझको, कदम-कदम पर घेरा॥
हर चमकीली लहर देखकर, मन में तू ललचाया।
पानी में बुलबुला बना तू, कौतुक मात्र दिखाया॥
बता कौन सुख पाया?
तुझे मिला कंचन सा जीवन॥

अब भी तू पहचान स्वयं को, तूने जिसे भुलाया।
तू है कौन पुत्र किसका है, और कहाँ से आया?
लक्ष्य कहाँ है राह कौन है, तू यह समझ न पाया।
और यहाँ तू सपनों में ही, अब तक है भरमाया॥
अगर नहीं अब भी विवेक से, तूने कदम बढ़ाया।
तुझे दण्ड देगी कल निश्चय, महाकाल की छाया॥
बता कौन सुख पाया?
तुझे मिला कंचन सा जीवन, तूने उसे गँवाया।
बना कोयला चन्दन का यूँ, भला कौन सुख पाया?
बता कौन सुख पाया?

**तू केवल रखवाला, तेरे साथ नहीं कुछ जाना रे**

तू केवल रखवाला, तेरे साथ नहीं कुछ जाना रे।
साथ नहीं कुछ जाना॥

खाली हाथ गये सब जैसे, खाली हाथों आये।
गया सिकंदर भी धरती से, सिर्फ हाथ फैलाये॥
दल-दल में फँस गया अगर तो, मुक्ति नहीं पायेगा।
लगा रहेगा इसी तरह से, तेरा आना-जाना रे॥
तू केवल रखवाला, तेरे साथ नहीं कुछ जाना रे।
साथ नहीं कुछ जाना॥

तुझे मिली जो फसल क्यारियाँ, वे हैं तुझे रखानी।
उन्हें निराना है देना बस, उन्हें खाद और पानी॥
मगर समझ बैठा तू उनका, अरे स्वयं को स्वामी।
मत कर इनसे मोह बावले, तेरा नहीं खजाना रे॥
तू केवल रखवाला, तेरे साथ नहीं कुछ जाना रे।
साथ नहीं कुछ जाना॥

जो सारी संपदा और, सुख-साधन तूने पाया।
ज्ञान-कोष जो बड़े जतन से, तूने यहाँ जुटाया॥
सदुपयोग उन सबका कितना, किया प्रभु देखेंगे।
वहाँ नहीं चल पायेगा फिर, झूठा कोई बहाना रे॥
तू केवल रखवाला, तेरे साथ नहीं कुछ जाना रे।
साथ नहीं कुछ जाना॥

सबको अपना समझ सभी का, है दुःख-दर्द बाँटना।
सुख औरों को बाँट, स्वयं भी सुख-उमंग पा जाना॥
यही स्नेह-सद्भाव मधुरता, हृदयों में भरनी है।
तभी तुम्हारे जीवन का फिर, होगा सफर सुहाना रे॥
तू केवल रखवाला, तेरे साथ नहीं कुछ जाना रे।
साथ नहीं कुछ जाना॥

किये अगर सत्कर्म लोकहित, साथ वही जायेगा।
युग उनका सम्मान करेगा, आत्म-तोष पायेगा॥
वे जायेंगे जहाँ वहाँ पर, सगे स्वजन सब होंगे।
नहीं अजाना होगा कोई, ना कोई बेगाना रे॥
तू केवल रखवाला, तेरे साथ नहीं कुछ जाना रे।
साथ नहीं कुछ जाना॥

**तुम्हारा देगा सब जग साथ**

तुम्हारा देगा सब जग साथ, तुम्हारा देगा सब जग साथ।
तुम्हारा देगा सब जग साथ, तुम्हारा देगा सब जग साथ॥

तुम्हारे मन में यदि संकल्प, तुम्हारे पग में यदि विश्वास।
तुम्हारे मन बने यदि भूमि, तुम्हारी अभिलाषा आकाश॥
चलेगा भाग्य पकड़कर हाथ, तुम्हारा देगा सब जग साथ।
तुम्हारा देगा सब जग साथ, तुम्हारा देगा सब जग साथ॥

फूल से तुम्हें नहीं यदि मोह, शूल से हुए न यदि भयभीत।
एक सा तुम्हें प्राप्ति या त्याग, सुनिश्चित लोगे तुम जग जीत॥
मनुज के बन जाओगे नाथ, तुम्हारा देगा सब जग साथ।
तुम्हारा देगा सब जग साथ, तुम्हारा देगा सब जग साथ॥

जिन्हें है हुई न उसकी चाह, सिद्धि रहती है उनके पास।
किन्तु जो रहते उनके दास, सदा वे रहते बे न निराश॥
व्रती का नहीं झुकेगा माथा, तुम्हारा देगा सब जग साथ।
तुम्हारा देगा सब जग साथ, तुम्हारा देगा सब जग साथ॥

निरन्तर रहते जो गतिशील, न रुकते बाधाओं के बीच।
उन्हीं का गाता यह जग गाथ, तुम्हारी देगा सब जग साथ।
तुम्हारा देगा सब जग साथ, तुम्हारा देगा सब जग साथ॥

## तुम्हारे दिव्य-दर्शन की, मैं इच्छा ले के आयी हूँ

तुम्हारे दिव्य-दर्शन की, मैं इच्छा ले के आयी हूँ।
पिला दो ज्ञान का अमृत, पिपासा ले के आयी हूँ॥

रतन अनमोल लाने वाले, लाते भेंट को तेरी।
प्रभो मैं आँसुओं की मंजुमाला, ले के आयी हूँ॥
पिला दो ज्ञान का अमृत, पिपासा ले के आयी हूँ।
तुम्हारे दिव्य-दर्शन की, मैं इच्छा ले के आयी हूँ॥

जगत के रंग सब फीके, तू अपने रंग में रंग दे।
मैं अपना यह महा बदरंग बाना, ले के आयी हूँ॥
पिला दो ज्ञान का अमृत, पिपासा ले के आयी हूँ।
तुम्हारे दिव्य-दर्शन की, मैं इच्छा ले के आयी हूँ॥

प्रकाशानन्द हो जाये, प्रभु अन्धेरी कुटिया में।
तुम्हारा आसरा विश्वास, आशा ले के आयी हूँ॥
पिला दो ज्ञान का अमृत, पिपासा ले के आयी हूँ।
तुम्हारे दिव्य-दर्शन की, मैं इच्छा ले के आयी हूँ॥
मैं इच्छा ले के आयी हूँ, मैं इच्छा ले के आयी हूँ।
तुम्हारे दिव्य-दर्शन की, मैं इच्छा ले के आयी हूँ॥

**तुम्हारे हैं हम प्रभु तुम्हारे रहेंगे, तुम्हारे लिए हम सभी कुछ सहेंगे**

तुम्हारे हैं हम प्रभु तुम्हारे रहेंगे,
तुम्हारे लिए हम सभी कुछ सहेंगे।
तुम्हारे लिए हैं तुम्हारे रहेंगे,
तुम्हारे हैं हम प्रभु तुम्हारे रहेंगे॥

हमें स्वार्थ वैभव लुभाता नहीं है,
तुम्हारे बिना कुछ सुहाता नहीं है।
तुम्हें जो रुचेगा वही हम करेंगे॥
तुम्हारे लिए हैं तुम्हारे रहेंगे,
तुम्हारे लिए हम सभी कुछ सहेंगे।
तुम्हारे हैं हम प्रभु तुम्हारे रहेंगे॥

हमें ज्ञान दो लक्ष्य पहचान पायें,
हमें शक्ति दो तैर कर पार जायें।
तुम्हारे निकट हम पहुँच कर रहेंगे॥
तुम्हारे लिए हैं तुम्हारे रहेंगे,
तुम्हारे लिए हम सभी कुछ सहेंगे।
तुम्हारे हैं हम प्रभु तुम्हारे रहेंगे॥

भटकते हुओं को सही हम दिशा दें,
सिसकते हुओं को फिर से हँसा दें।
यही साधना उम्र भर हम करेंगे॥
तुम्हारे लिए हैं तुम्हारे रहेंगे,
तुम्हारे लिए हम सभी कुछ सहेंगे।
तुम्हारे लिए हैं तुम्हारे रहेंगे॥

करें स्वर्ग या मुक्ति की कामना क्यों?
करें मान या धन की याचना क्यों?
तुम्हीं प्राण धन हो तुम्हीं को वरेंगे॥
तुम्हारे लिए हैं तुम्हारे रहेंगे,
तुम्हारे लिए हम सभी कुछ सहेंगे।
तुम्हारे हैं हम प्रभु तुम्हारे रहेंगे।
तुम्हारे लिए हैं तुम्हारे रहेंगे॥

## तुम्हें ईश्वर मिलेगा, यदि सरल मन हो तुम्हारा ही

तुम्हें ईश्वर मिलेगा, यदि सरल मन हो तुम्हारा ही।
सहज सम्वेदना से, जो तरल मन हो तुम्हारा ही॥

भरा हो भाव तो भगवन् तुम्हें हर पल मिलेगा ही।
सहज आनन्द से भरपूर अन्तस्तल मिलेगा ही॥
अखिल ब्रह्माण्ड में हर ओर वह बिखरा हुआ ही है।
उसी की क्रान्ति से कण-कण यहाँ बिखरा हुआ ही है॥
दिखेगा वह अगर मैला न दर्पण हो तुम्हारा ही।
सहज सम्वेदना से, जो तरल मन हो तुम्हारा ही॥
तुम्हें ईश्वर मिलेगा, यदि सरल मन हो तुम्हारा ही।
तुम्हें ईश्वर मिलेगा॥

हिमाच्छादित शिखर में नीर-निर्झर में वही तो है।
नदी की हर लहर में और सागर में वही तो है॥
वही है बादलों से झर रही जीवन-सुधा में भी।
वही है तरु-लताओं की असीमित सम्पदा में भी॥
तुरत वह आयेंगे सच्चा निमंत्रण हो तुम्हारा ही।
सहज सम्वेदना से, जो तरल मन हो तुम्हारा ही॥
तुम्हें ईश्वर मिलेगा, यदि सरल मन हो तुम्हारा ही।
तुम्हें ईश्वर मिलेगा॥

उसी से सूर्य आलोकित सदा होता ही रहता है।
वही उद्भव, उसी में विश्व लय होता ही रहता है॥
नियंत्रण है उसी का पूर्ण धरती की धुरी पर भी।
कि ऋतुएँ नाचती रहतीं उसी की बाँसुरी पर भी॥
दिखेगा वह स्वयं पर यदि नियंत्रण हो तुम्हारा ही।
सहज सम्वेदना से, जो तरल मन हो तुम्हारा ही॥
तुम्हें ईश्वर मिलेगा, यदि सरल मन हो तुम्हारा ही।
तुम्हें ईश्वर मिलेगा॥

हवा को ताप को हमने कभी देखा नहीं अब तक।
मगर उसकी हमें अनुभूति तो होती रही अब तक॥
न ईश्वर भी नयन का, और दर्शन का विषय ही है।
अरे भगवान तो अनुभूति का, मन का विषय ही है॥
न मन विचलित अनास्था से किसी क्षण हो तुम्हारा ही।
सहज सम्वेदना से, जो तरल मन हो तुम्हारा ही॥
तुम्हें ईश्वर मिलेगा, यदि सरल मन हो तुम्हारा ही।
सहज सम्वेदना से, जो तरल मन हो तुम्हारा ही॥
तुम्हें ईश्वर मिलेगा॥

**तुम्हीं हो प्राण हम सबके, हमारी चेतना हो तुम**

तुम्हीं हो प्राण हम सबके, हमारी चेतना हो तुम।
हृदय से दूर करें कैसे, हृदय की भावना हो तुम॥

बताओ चेतना कैसे, किसी तन से अलग होगी?
सुकोमल भावना कैसे, सरल मन से अलग होगी?
करें कैसे विदा वे स्वर, तुम्हारी प्रेरणाओं के?
थकन में जो मिले तुमसे, सुखद झोंके हवाओं के॥
बिछुड़ सकते भला कैसे, हमारी कामना हो तुम॥
हृदय से दूर करें कैसे, हृदय की भावना हो तुम।
तुम्हीं हो प्राण हम सबके, हमारी चेतना हो तुम॥

हमारी हर प्रगति हर कार्य में, तुम ही समाए हो।
कि संकट में सुरक्षा चक्र लेकर, दौड़ आये हो॥
दिखाया लक्ष्य तुमने ही, तुम्हीं ने राह बतलाई।
हमें पतवार दी तुमने, जलधि की थाह बतलाई॥
हमारे साध्य औ साधन, तुम्हीं हो साधना हो तुम॥
हृदय से दूर करें कैसे, हृदय की भावना हो तुम।
तुम्हीं हो प्राण हम सबके, हमारी चेतना हो तुम॥

कदम जब डगमगाए थे, तुम्हीं ने तब सँभाला था।
अँधेरे मोड़ पर हमको, मिला तुमसे उजाला था॥
चलें, चलते रहें यह प्रेरणा, तुमने जगाई थी।
हृदय में धार करुणा की, तुम्हीं ने तो बहाई थी॥
हमारी दृष्टि हो तुम ही, सहज सम्वेदना हो तुम॥
हृदय से दूर करें कैसे, हृदय की भावना हो तुम।
तुम्हीं हो प्राण हम सबके, हमारी चेतना हो तुम॥

तुम्हारे स्नेह की सिहरन, सदा अनुभव करेंगे हम।
तुम्हारी प्रेरणा-पुलकन, सदा अनुभव करेंगे हम॥
मिलेगी जब कभी उलझन, तुम्हें फिर से पुकारेंगे।
तुम्हारे कार्य पथ में हम, स्वयं सर्वस्व वारेंगे॥
हमारे हर भविष्यत की, सुखद संकल्पना हो तुम॥
हृदय से दूर करें कैसे, हृदय की भावना हो तुम।
तुम्हीं हो प्राण हम सबके, हमारी चेतना हो तुम॥
हृदय से दूर करें कैसे, हृदय की भावना हो तुम॥

**तुम न घबराओ न आँसू ही बहाओ तुम, और कोई हो न हो पर मैं तुम्हारा हूँ**

तुम न घबराओ न आँसू ही बहाओ तुम,
और कोई हो न हो पर मैं तुम्हारा हूँ।
मैं खुशी के गीत गा-गाकर सुनाऊँगा,
गा-गाकर सुनाऊँगा॥
तुम न घबराओ न आँसू ही बहाओ अब॥

मानता हूँ ठोकरें तुमने सदा खाई,
जिन्दगी के दाँव में हारे सदा पाई।
बिजलियाँ दुःख की निराशा की सदा टूटी,
मन गगन पर वेदना की बदलियाँ छाई॥
पोंछ दूँगा मैं तुम्हारे अश्रु गीतों से,
तुम सरीखे बेसहारों का सहारा हूँ।
मैं तुम्हारे घाव धो मरहम लगाऊँगा॥
मैं विजय के गीत गा-गा कर सुनाऊँगा।
गा-गाकर सुनाऊँगा॥

तुम न घबराओ न आँसू ही बहाओ अब,
और कोई हो न हो पर मैं तुम्हारा हूँ।
मैं खुशी के गीत गा-गाकर सुनाऊँगा,
गा-गाकर सुनाऊँगा॥
तुम न घबराओ न आँसू ही बहाओ अब॥

खा गई इन्सानियत को भूख यह भूखी,
स्नेह-ममता को गई पी प्यास यह सूखी।
जानवर भी पेट का साधन जुटाते हैं,
जिन्दगी का हक नहीं है रोटियाँ रूखी॥
और कुछ माँगो, हँसी माँगो खुशी माँगो,
खो गये हो दे रहा तुमको इशारा हूँ।
आज जीने की कला तुमको सिखाऊँगा॥
जिन्दगी के गीत गा-गाकर सुनाऊँगा॥
गा-गाकर सुनाऊँगा॥

तुम न घबराओ न आँसू ही बहाओ अब,
और कोई हो न हो पर मैं तुम्हारा हूँ।
मैं खुशी के गीत गा-गाकर सुनाऊँगा,
गा-गाकर सुनाऊँगा॥

तुम न घबराओ न आँसू ही बहाओ अब,
और कोई हो न हो पर मैं तुम्हारा हूँ।
मैं खुशी के गीत गा-गाकर सुनाऊँगा,
गा-गाकर सुनाऊँगा॥
तुम न घबराओ न आँसू ही बहाओ अब॥

**तूने हमें जनम दिया, पालन कर रही हो तुम**

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।
ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्॥

तूने हमें जनम दिया, पालन कर रही हो तुम।
तुमसे ही पाते प्राण हम, कष्टों को हर रही हो तुम॥
ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्॥

तेरा महान तेज है, छाया हुआ सभी जहान।
सृष्टि की वस्तु-वस्तु में, हो रही हो विद्यमान॥
ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्॥

तेरा ही धरते ध्यान हम, माँगते तेरी दया।
हे माँ! हमारी बुद्धि को, श्रेष्ठ मार्ग पर चला॥
ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्॥

**वन्दें उनके पद की धूल**

वन्दें उनके पद की धूल, वन्दें उनके पद की धूल।
वन्दें उनके पद की धूल, वन्दें उनके पद की धूल॥

जिनके मन मानस में से, करुणा का निर्मल झरना झरता।
जो कल-कल सुमधुर ध्वनि से, दिक्मण्डल में अमृत भरता॥
ऊसर प्यासे भूखण्डों में, उपजाता सुन्दर हरियाली।
अगणित जल-थल चर जीवों को, जीवन देता, प्रमुदित करता॥
नन्दन वन सा शीतल फूल, नन्दन वन सा शीतल फूल।
वन्दें उनके पद की धूल, वन्दें उनके पद की धूल।
वन्दें उनके पद की धूल, वन्दें उनके पद की धूल॥
वन्दें उनके पद की धूल, वन्दें उनके पद की धूल॥

दुःख औरों का देख दया से, भर आती है जिनकी छाती।
तृषित जनों को शीतल करती, जिनकी वाणी रस बरसाती॥
टिम-टिम जिनका जीवन दीपक, तिल-तिल निश दिन जलता रहता।
जनता जिनकी चिनगारी के, नीचे अपना पथ लख पाती॥
जिनका जीवन सुरभित फूल, जिनका जीवन सुरभित फूल।
वन्दें उनके पद की धूल, वन्दें उनके पद की धूल।
वन्दें उनके पद की धूल, वन्दें उनके पद की धूल॥
वन्दें उनके पद की धूल, वन्दें उनके पद की धूल॥

खुद तपते हैं किन्तु दूसरों, का अन्तःस्थल शीतल करते।
खुद दुःख सहते रहते लेकिन, औरों की पीड़ाएँ हरते॥
भिक्षुक पर कुबेर से दानी, अपमानित सुरपति से मानी।
जिनकी ज्ञानमयी गंगा में, डुबकी लेकर जग-जन तरते॥
जिनको प्रिय है शूल बबूल, जिनको प्रिय है शूल बबूल।
वन्दें उनके पद की धूल, वन्दें उनके पद की धूल।
जिनको प्रिय है शूल बबूल, जिनको प्रिय है शूल बबूल।
वन्दें उनके पद की धूल, वन्दें उनके पद की धूल॥
जिनका जीवन सुरभित फूल, जिनका जीवन सुरभित फूल।
वन्दें उनके पद की धूल, वन्दें उनके पद की धूल॥

वन्दें उनके पद की धूल, वन्दें उनके पद की धूल।
वन्दें उनके पद की धूल, वन्दें उनके पद की धूल॥
वन्दें उनके पद की धूल, वन्दें उनके पद की धूल॥

**विचार लो कि मर्त्य हो, न मृत्यु से डरो कभी**

विचार लो कि मर्त्य हो, न मृत्यु से डरो कभी,
मरो परन्तु यों मरो, कि याद जो करें सभी।

हुई न यों सुमृत्यु तो, वृथा मरे वृथा जिये,
मरा नहीं वही कि जो, जिया न आपके लिए।
यही पशु प्रवृत्ति है, कि आप आप ही चरे,
वही मनुष्य है कि जो, मनुष्य के लिए मरे॥
विचार लो कि मर्त्य हो, न मृत्यु से डरो कभी,
मरो परन्तु यों मरो, कि याद जो करें सभी।

क्षुधार्त रन्तिदेव ने, दिया करस्थ थाल भी,
तथा दधीचि ने दिया, परार्थ अस्थि जाल भी।
शरीर माँस भी दिया, परार्थ शिवि नरेश ने,
शरीर चर्म दे दिया, सहर्ष वीर कर्ण ने॥
अनित्य देह के लिए, अनादि जीव क्या डरे,
वही मनुष्य है कि जो, मनुष्य के लिए मरे॥
विचार लो कि मर्त्य हो, न मृत्यु से डरो कभी,
मरो परन्तु यों मरो, कि याद जो करें सभी।

सहानुभूति चाहिए, महा विभूति है यही,
वशीकृता सदैव है, बनी हुई स्वयं मही।
मनुष्य मात्र बन्धु है, यही बड़ा विवेक है,
प्रमाण-भूत वेद है, पिता प्रसिद्ध एक है॥
अनर्थ है कि बन्धु ही, न बन्धु की व्यथा हरे,
वही मनुष्य है कि जो, मनुष्य के लिए मरे॥
विचार लो कि मर्त्य हो, न मृत्यु से डरो कभी,
मरो परन्तु यों मरो, कि याद जो करें सभी।

चलो अभीष्ट मार्ग में, सहर्ष खेलते हुए,
विपत्ति विघ्न जो पड़े, उन्हें धकेलते हुए।
किसी से द्वेष हो नहीं, सभी से प्रेम भाव हो,
हृदय सभी से हों मिले, नहीं कहीं दुराव हो॥
तभी समर्थ भाव है कि, तारता हुआ तरे,
वही मनुष्य है कि जो, मनुष्य के लिए मरे॥
विचार लो कि मर्त्य हो, न मृत्यु से डरो कभी,
मरो परन्तु यों मरो, कि याद जो करें सभी।
विचार लो कि मर्त्य हो, न मृत्यु से डरो कभी,
मरो परन्तु यों मरो, कि याद जो करें सभी॥
याद जो करें सभी, याद जो करें सभी॥

**यह जीवन पुष्प समर्पित है, शुभ चरणों के अर्चन में**

यह जीवन पुष्प समर्पित है, शुभ चरणों के अर्चन में।
यह जीवन पुष्प समर्पित है, शुभ चरणों के अर्चन में॥

लय-छन्दों में, करूँ असीमित, की कैसे मनुहार।
अमर रूप को भेंटूँ कैसे, क्षण भंगुर उपहार॥
हुए मूक स्वर, वंदन में, शुभ चरणों के अर्चन में।
हुए मूक स्वर, वंदन में, शुभ चरणों के अर्चन में॥
यह जीवन पुष्प समर्पित है, शुभ चरणों के अर्चन में।
यह जीवन पुष्प समर्पित है, शुभ चरणों के अर्चन में॥

मृगमय नयनों से मैं कैसे, देखूँ तेरी प्रभुता।
छू सकती असीम को कैसे, जड़ काया की लघुता॥
सचमुच बहुत, अकिंचन मैं, शुभ चरणों के अर्चन में।
सचमुच बहुत, अकिंचन मैं, शुभ चरणों के अर्चन में॥
यह जीवन पुष्प समर्पित है, शुभ चरणों के अर्चन में।
यह जीवन पुष्प समर्पित है, शुभ चरणों के अर्चन में॥

काँप रहे मन वीणा के स्वर, कैसे तुम्हें बुलाऊँ।
विकल वेदना अपने उर की, आँसू में छलकाऊँ॥
भाव भरे बस रुदन में, शुभ चरणों के अर्चन में।
भाव भरे बस रुदन में, शुभ चरणों के अर्चन में॥
यह जीवन पुष्प समर्पित है, शुभ चरणों के अर्चन में।
यह जीवन पुष्प समर्पित है, शुभ चरणों के अर्चन में॥

तप्त हृदय के उर मरुथल में, बनो प्रभु रस-धारा।
बरस उठे मेरा मन सावन, पा कर प्रेम तुम्हारा॥
चिर आशा मेरे मन में है, शुभ चरणों के अर्चन में।
चिर आशा मेरे मन में है, शुभ चरणों के अर्चन में॥
यह जीवन पुष्प समर्पित है, शुभ चरणों के अर्चन में।
यह जीवन पुष्प समर्पित है, शुभ चरणों के अर्चन में॥

तेरी ज्योति जले अन्तर में, फैले चिर उजियारा।
ज्योतिर्मय तुमसे ही ज्योतित, हो मेरा जग सारा॥
लगे लगन प्रभु चरणन में, शुभ चरणों के अर्चन में।
लगे लगन प्रभु चरणन में, शुभ चरणों के अर्चन में॥
यह जीवन पुष्प समर्पित हो, शुभ चरणों के अर्चन में।
यह जीवन पुष्प समर्पित हो, शुभ चरणों के अर्चन में॥
यह जीवन पुष्प समर्पित हो, शुभ चरणों के अर्चन में॥

## यह करुणा की धार, सूखने मत देना

यह करुणा की धार, सूखने मत देना।
जन-जन के प्रति प्यार, सूखने मत देना॥

बहुत तेज तूफान, घुमड़कर आया है।
धरा-गगन में, अन्धकार गहराया है॥
नाव बीच मझधार, डूबने मत देना।
जन-जन के प्रति प्यार, सूखने मत देना॥
यह करुणा की धार, सूखने मत देना।
जन-जन के प्रति प्यार, सूखने मत देना॥

एक प्रभू की सभी, सगी सन्तानें हैं।
सभी एक अनुपम, माला के दाने हैं॥
यह अमूल्य गलहार, टूटने मत देना।
जन-जन के प्रति प्यार, सूखने मत देना॥
यह करुणा की धार, सूखने मत देना।
जन-जन के प्रति प्यार, सूखने मत देना॥

हम सबके व्यवहार, कटीले कठोरे हैं।
हृदय मधुरता बिना, रेत के टीले हैं॥
सरल विमल व्यवहार, सूखने मत देना।
जन-जन के प्रति प्यार, सूखने मत देना॥
यह करुणा की धार, सूखने मत देना।
जन-जन के प्रति प्यार, सूखने मत देना॥

सम्वेदना जगी तो, जग लहराएगा।
स्वर्गिक वातावरण, धरा पर छाएगा॥
सतयुग-सा संसार, लूटने मत देना।
जन-जन के प्रति प्यार, सूखने मत देना॥
यह करुणा की धार, सूखने मत देना।
जन-जन के प्रति प्यार, सूखने मत देना॥

यह करुणा की धार, सूखने मत देना।
जन-जन के प्रति प्यार, सूखने मत देना॥

## युग ऋषिवर हे, जीवन का आधार तुम्हारा नाम है

युग ऋषिवर हे, जीवन का आधार तुम्हारा नाम है।
अब तो, जीवन का लक्ष्य तुम्हारा काम है॥

नहीं चाहिए मान प्रतिष्ठा, नहीं चाहिए माया।
रहे तुम्हारे लिए समर्पित, सब धन-मन यह काया॥
ओ तेरे, चरणों में ही विश्राम है॥
युग ऋषिवर हे, जीवन का आधार तुम्हारा नाम है।
अब तो, जीवन का लक्ष्य तुम्हारा काम है॥

जब से मन के अन्तरतम में, सविता तेज समाए।
तब इस काया के कण-कण में, दैवी ओज जगाए॥
ओ तू ही, महातेज का धाम है॥
युग ऋषिवर हे, जीवन का आधार तुम्हारा नाम है।
अब तो, जीवन का लक्ष्य तुम्हारा काम है॥

तुमने सबको गायत्री माँ, का पयपान कराया।
यज्ञ-पिता की विमल गोद में, है सबको बैठाया॥
ओ अब तो, लहर चली अभिराम है॥
युग ऋषिवर हे, जीवन का आधार तुम्हारा नाम है।
अब तो, जीवन का लक्ष्य तुम्हारा काम है॥

तुमने ऋषियों की परिपाटी, को जीवन्त बनाया।
साथ तुम्हारे रहकर हमने, नाथ सभी कुछ पाया॥
ओ अब तो, आराधन निष्काम है॥
युग ऋषिवर हे, जीवन का आधार तुम्हारा नाम है।
अब तो, जीवन का लक्ष्य तुम्हारा काम है॥

तुमने जीवन की धारा में, ब्रह्मतेज विकसाया।
जिसने भी यह पथ अपनाया, जीवन का फल पाया॥
ओ तू ही, महाकाल श्रीराम है॥
युग ऋषिवर हे, जीवन का आधार तुम्हारा नाम है।
अब तो, जीवन का लक्ष्य तुम्हारा काम है॥
युग ऋषिवर हे, जीवन का आधार तुम्हारा नाम है।
अब तो, जीवन का लक्ष्य तुम्हारा काम है॥

**युग-युग पूजित गायत्री माँ, ऐसी कृपा करो**

युग-युग पूजित गायत्री माँ, ऐसी कृपा करो।
आज तुम ऐसी कृपा करो॥
युग-युग पूजित गायत्री माँ॥

जन-जन के प्रति विमल भावना, सबके हित की रहे कामना।
यह जीवन ही बने साधना, ऐसी कृपा करो॥
मेरे मन में कर्तव्यों के प्रति अनुराग भरो,
आज तुम ऐसी कृपा करो॥
युग-युग पूजित गायत्री माँ, ऐसी कृपा करो।
आज तुम ऐसी कृपा करो॥
युग-युग पूजित गायत्री माँ॥

पूरब की लाली बन जाओ, कलरव के स्वर में नित गाओ।
ज्योतित पावन पंथ बनाओ, ऐसी कृपा करो॥
अन्धकार में बनकर मङ्गल किरण देवि बिखरो,
आज तुम ऐसी कृपा करो॥
युग-युग पूजित गायत्री माँ, ऐसी कृपा करो।
आज तुम ऐसी कृपा करो॥
युग-युग पूजित गायत्री माँ॥

मातृ-भूमि से प्यार हमें दो, निर्मल हृदय उदार हमें दो।
अपना मृदुल दुलार हमें दो, ऐसी कृपा करो॥
लक्ष्य दीप बन कर के मेरे मानस में निखरो,
आज तुम ऐसी कृपा करो॥
युग-युग पूजित गायत्री माँ, ऐसी कृपा करो।
आज तुम ऐसी कृपा करो॥

युग-युग पूजित गायत्री माँ, ऐसी कृपा करो।
आज तुम ऐसी कृपा करो॥

**युग-युग तक जग याद करे, तुम ऐसे कर्म करो**

युग-युग तक जग याद करे, तुम ऐसे कर्म करो।
कर्म में ऐसे मर्म भरो॥

जहाँ कहीं हों ताप वहाँ पर, सावन बन बरसो।
मरुथल मधुवन बने जहाँ पर, दिन दो चार बसो॥
जिससे मिल लो एक बार तुम कभी नहीं बिसरो।
कर्म में ऐसे मर्म भरो॥
युग-युग तक जग याद करे, तुम ऐसे कर्म करो।
कर्म में ऐसे मर्म भरो॥

पथिकों के गति भ्रमितों के तुम, बनकर दीप रहो।
सगर सुतों हित बनकर पावन, सुरसरि धार बहो॥
जग उपवन में मलयज की, शीतलता ले विचरो।
कर्म में ऐसे मर्म भरो॥
युग-युग तक जग याद करे, तुम ऐसे कर्म करो।
कर्म में ऐसे मर्म भरो॥

मानव हो तुम मानवता के, शुचि शृंगार बनो।
श्वाँसों के सागर में मन के, कर्णाधार बनो॥
तपः पूत शापों में तुम नव कंचन बन निखरो।
कर्म में ऐसे मर्म भरो॥
युग-युग तक जग याद करे, तुम ऐसे कर्म करो।
कर्म में ऐसे मर्म भरो॥

युग-युग तक जग याद करे, तुम ऐसे कर्म करो।
कर्म में ऐसे मर्म भरो॥